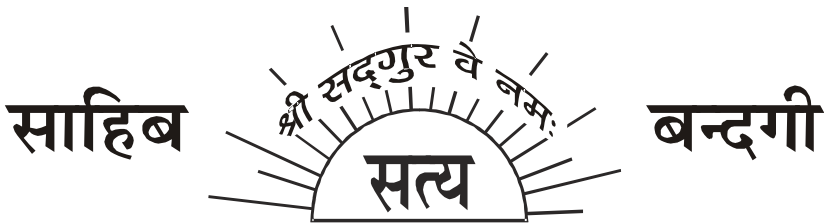


श्री सद्गुरु वे नमः

भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

पुरुष रचन ते नारि है, नारी रचन ते पुरुष।
पुरुषे पुरुषे जो रचा, सो बिरला संसार ॥

—सद्गुरु मधु परमहंस जी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, जिला जम्मू

भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरू सत्य धर्मदासा ॥

—सद्गुरु मधु परमहंस जी

प्रचार अधिकारी

—राम रतन जम्मू

© SANT ASHRAM RANJARI (JAMMU)
ALL RIGHTS RESERVED

प्रथम संस्करण – 2007
प्रतियाँ – 5000

Website Address.

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*santashram@sahib-bandgi.org

*sadgurusahib@sahib-bandgi.org

प्रकाशक

साहिब बन्दगी सन्त आश्रम राँजड़ी

पोस्ट राया, तहसील साम्बा

ज़िला—जम्मू

Ph. (01923) 242695, 242602

मुद्रक : सरताज प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर शहर।

विषय सुची

	पृष्ठ संख्या
★ योगमत और संतमत	5
1. गुरु करले आप समान	7
2. सुनो तात यह अकथ कहानी	13
3. भृंग मता होय जिहि पासा	18
4. बाकी से अलग है हमारी भक्ति	32
5. गुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया	46
6. आपका विरोध होगा	63
7. कर्म धर्म से रहे उदासा	75
8. कुरीतियों से बचो	83
9. कबीर साहिब और सुलतान इब्राहिम	95



मरने वाले का पता

11वां द्वार - इस द्वार से प्राण निकलने से जीव आत्मा सदा-सदा के लिए भवसागर से छूट कर परम पुरुष के घर अमर लोक में चली जाती है।

दशम द्वार - यदि जीव आत्मा के प्राण दसवें द्वार से जाते हैं तो वे स्वर्ग आदि लोकों में चली जाती है और पुनः मृत्यु-लोक में आकर राजा होकर जन्म लेती है। मरने वाला देखने में प्रसन्न चित्त दिखाई देगा।



श्रवण द्वार - यदि जीव आत्मा के प्राण कानों से जायेंगे तो उसको तत्काल प्रेत योनि मिलती है। प्रेत की आयु 1000 वर्ष होती है। इसकी पहचान है कि मरने वाले के शरीर को देख कर भय सा लगेगा।

नेत्र द्वार - इस द्वार से प्राण निकलने से जीव आत्मा मक्खी, मच्छर आदि योनियों में जन्म लेती है, इसकी पहचान है कि मरने वाले की आँखें खुली रह जायेगी।

श्वास द्वार - इस द्वार से प्राण निकलने से जीव आत्मा अंडजखान में जन्म लेती है, जैसे उड़ने वाले पक्षी आदि।

मुख द्वार - यदि मुख द्वार से प्राण निकलते हैं तो जीव आत्मा अन्न खान के जीवों में जन्म लेती है और मरने वाले का मुख बहुत ऊंचा खुला रह जायेगा।

नाभि द्वार - यदि नाभि द्वार से प्राण निकलते हैं तो जीव आत्मा जलचर योनि में जन्म लेती है। इसकी पहचान है कि मरने वाले का मूत्र बाहर आ जाता है।

गुद्ग स्थान - इस द्वार से जब जीव आत्मा निकलती है तो नरकखान में चली जाती है। उसकी पहचान ये है कि मृतक का मल बाहर आ जाता है।

नौ द्वारे संसार सब, दसवां योगी साधु।
एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान ॥

योगमत और संतमत में अन्तर

योगमत	संतमत
1. योगमत में काया का नाम है।	1. संतमत में विदेह नाम हैं।
2. योग मत चाचरी, भूचरी, अगोचरी, उनमुनि, खेचरी इन पांच मुद्राओं के इर्द गिर्द घूमता है। जो शरीर में हैं।	2. संतमत में पांच मुद्राओं से आगे शीश से सवा हाथ ऊपर ध्यान रखने को कहा है।
3. यह नाम लिखने पढ़ने में आता है। इनसे काल पुरुष ने पांच तत्व पैदा किये और शरीरों की रचना की।	3. यह अकह नाम है जो लिखने पढ़ने में नहीं आता है और पांच तत्वों से बाहर है।
4. योगमत में अनहद धुनों को ही प्रमात्मा माना जाता है।	4. संतमत में आत्मा किसी शब्द की मोहताज नहीं, क्योंकि आत्मा अपने आपमें परिपूर्ण है।
5. योगमत करनी अथवा कमाई का मार्ग है।	5. यह सहज मार्ग है, गुरु कृपा का मार्ग है और भृंग मता है।
6. योगमत में सुरति शब्द का अभ्यास किया जाता है।	6. संतमत सुरति को चेतन करने का मार्ग है।
7. योगमत में काल का नाम किया जाता है। जो शरीर ये है।	7. संतमत जिन्दा नाम प्रदान करता है जोकि शरीर को छोड़ आत्मा को दिया जाता है।
8. योगमत में गुरु की भुमिका न के बराबर होती है।	8. संतमत में भक्ति का सार ही संत सद्गुरु है।
9. योगमत सीमा बध है। जिसमें साधक दसवें द्वार तक ही जाता है।	9. संतमत असीम है जो कि ग्यारवें द्वार की बात करता है जो सुरति में है।

योगमत	सन्तमत
10. योगमत निराकार निरंजन की ही सत्ता को ही सर्व श्रेष्ठ मानता है।	10. संतमत में निराकार सत्ता से आगे चौथे लोक अर्थात् अमर लोक की बात की जाती है।
11. योगमत में कमाई का फल खत्म होने पर वापिस माता के पेट में आना पड़ता है।	11. संतमत में जीव सदा के लिए आवागमन से मुक्त हो जाता है और अपने निजधाम सत्य लोक को चला जाता है।
12. योगमत बैशाखियों के सहारे चलता है जो कि शास्त्रों की साक्षी देकर अपने आप को स्थापित करता है।	12. संतमत में सन्त सद्गुरु अपने अनुभव से बोलता है जो किसी का मोहताज नहीं होता है।
13. इसमें रिद्धि सिद्धि और दिव्य शक्तियां प्राप्त होती हैं मगर आत्मा का ज्ञान नहीं होता है।	13. संतमत में जीव को आत्म ज्ञान होने से अध्यात्मिक शक्तियां मिलती हैं।
14. योगमत मीन और पपील मार्ग है।	14. जबकि संतमत विहंगम मार्ग है।

**W पांच शब्द औ पाचों है मुद्रा, सोई निश्चय कर माना।
आगे पूरण पुरुष पुरातन, तिनकी खबर न जाना ॥**

**W नौं नाथ चौरासी सिद्धि लों, पांच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहैं घट भीतर, फिर ओधे मुख लटके ॥**

**W पांच शब्द और पांचों मुद्रा, लोक द्वीप यमजाला।
कहें कबीर अक्षर के आगे, निःअक्षर नहीं पहिचाना ॥**

**W काया नाम सबहिं गुण गावै, विदेह नाम कोई विरला पावै।
विदेह नाम पावेगा सोई, जिसका सद्गुरु साँचा होई ॥**

W जब तक गुरु मिलै नहीं साँचा, तब तक करो गुरु दस पाँचा ॥

गुरु करले आप समान

गुरु समाना शिष्य में, द्विदृशष्य लिया कर नेह।

बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह ॥

क्या यथार्थ में गुरु शिष्य में समा जाता है।

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं।

प्रेम गली अति साँकरी, जामें दो ना समाहिं ॥

एक बात ज़ाहिर हो रही है, एक बात का अनुभव मिल रहा है, इन शब्दों से एक बात साफ़ हुई कि यथार्थ में गुरु शिष्य में समा सकता है। वाणी में साहिब पुकार कर कह रहे हैं—**अब गुरु हैं मैं नाहिं....**। एक बात पता चल रही है, दो तथ्यों से सामने आ रही है। इसका मतलब है, कुछ बात है कि गुरु शिष्य में समा सकता है। और 'बिलगाए बिलगे नहीं।' यानी एक दूसरे के तद्रूप भी हो सकते हैं।

इसका मतलब है कि तथ्यों से पता चल रहा है कि संभव है। फिर साहिब कह रहे हैं—

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अन्तरो जान।

वह लोहा कंचन करे, वह करले आप समान ॥

ये दोहे यथार्थ में एक बिंदू की तरफ ले चल रहे हैं। कुछ ऐसा आध्यात्मिक जेनिजिज्म है। कुछ ऐसा आध्यात्मिक खेल है कि जीव उस महान स्थिति तक पहुँच सकता है। यह काम पल भर में हो जाता है। एक बड़ी असमंजस आई। यह तो ठीक है—**गुरु करले आप समान।**

एक डॉ० किसी को भी डॉ० बना सकता है। एक इंजीनियर किसी को भी इंजीनियर बना सकता है। पर एक इंजीनियर अपने अंदर का इंजीनियर निकालने में बड़ा समय लगा देता है। वो अपने अंदर का इंजीनियर निकालने में 4-5 साल लगा देता है। एक डॉ० अपने अंदर का डॉ० निकालने में बड़ा समय लगा देता है। पर यह

काम गुरु पल भर में कर देता है। गुरु अपना ज्ञान, अपने गुण, अपनी आदतें, अपनी शक्तियाँ सभी चीजें पल-भर में स्थानांतरित कर देता है। यह बड़ा कौतुकमय विषय है। इशारा मिल रहा है।

गुरु को कीजे दण्डवत, कोटि कोटि प्रणाम।

कीट न जाने भृंग को, गुरु करले आप समान॥

कभी-कभी आप सब एक दूसरे को समझाते हैं, अपना रंग चढ़ाने की कोशिश करते हैं, पर पूरा रंग नहीं चढ़ा पाते हैं। बच्चों को समझाते हैं कि अच्छे काम करो, झूठ नहीं बोलो, पर उसपर इस समझ की पूरी रंगत नहीं चढ़ पाती है, लेकिन साहिब कह रहे हैं गुरु अपने समान बना लेता है।

ऐसा क्या फार्मूला है पूर्ण गुरु के पास कि अपनी तरह कर देता है। यह बहुत बड़ी बात हुई। वो अपनी तरह कर देता है। अभी तक विज्ञान इसको समझ नहीं पा रहा है। यह क्या चीज है? किस तरह बदल देता है? इसमें सत्य कितना है, इसमें वास्तविकता कितनी है, वजन कितना है? इसके प्रमाण मिल रहे हैं कि यह चीज हो सकती है।

आदमी परमात्मा के दर्शन क्यों करना चाहता है? क्योंकि उसमें गुण है कि जो भी उसे देखता है, उसकी तरह हो जाता है। अब ध्यान क्यों कर रहे हैं? बड़ी खास चीज है यह। जाने-अनजाने यह मानव जानता है कि ध्यान से परमात्मा मिल जाते हैं। यानी ध्यान में परमात्मा तक पहुँचने की, उनसे बात करने की ताकत है। दिव्य शक्तियाँ हैं ध्यान में कहीं।

कभी-कभी महात्मा को कहते हैं कि ध्यान करके देखो कि हमारा काम सफल होगा या नहीं। इसका मतलब है कि गुरु जो शक्तियाँ स्थानांतरित करता है, ध्यान से करता है। माता-पिता नहीं कर पाते हैं यह काम। वो केवल ढाँचा ही बदल पाते हैं, पर व्यक्तित्व को नहीं। हमें अपनी तरह नहीं बना पाते हैं। साहिब एक जगह और कह रहे हैं—

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अंतरो जान।

वह लोहा कंचन करे, गुरु करले आप समान॥

उदाहरण देता हूँ। जबसे आप मेरे संपर्क में आए, पहले वाला

व्यक्तित्व खत्म कर दिया। मैंने पहले वाले को मार दिया और उसे मधुमय बना दिया। अब आपकी विचारधारा, आपका स्वभाव सब मिलेगा मुझसे। माँ-बाप से नहीं मिलता है। आप कहते भी हैं कि बेटा अच्छा नहीं है, पता नहीं किस पर गया है, पर गुरु यह कला करता है। इस बात में वज्रन है। भृंगा को भण्डारिन भी कहते हैं। वो बड़ा अजीब जीव है। सभी स्त्री-पुरुष हैं, पर वो केवल पुरुष है, उसकी मादा नहीं है। फिर वो बड़े प्यारे तरीके से अपनी पीढ़ी चलाता है। वो कीड़े को पकड़ अपनी आवाज़ सुनाता है और अपनी तरह कर लेता है। साहिब कह रहे हैं कि इस तरह गुरु भी अपनी तरह कर लेता है। प्रमाण मिल रहे हैं। जब भी आप अपने व्यक्तित्व को देख रहे हैं तो बहुत बड़ा बदलाव मिल रहा है। कभी अपने में बदलाव देख अचरज होता होगा आपको। एक दिन अवतार सिंह ने कहा कि मुझे लगता था कि मुझसे बुरा कोई नहीं है दुनिया में, सभी गलत काम कर लेता था मैं, पर अब लगता है कि मुझसे अच्छा कोई नहीं है। मैं बदल गया हूँ। कहा-अगर मैं कई जन्म तपस्या भी करता तो भी शायद इतना नहीं बदल सकता था। साहिब सच ही तो कह रहे हैं-

सतगुरु मोर रंगरेज़, चुनरि मोरि रंग डारी.....

आपको बदल दिया। फिर वाणी में आ रहा है-

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं।

प्रेम गलि अति साँकरी, तामें दो ना समाहिं ॥

आखिर क्या करते हैं गुरुदेव? आप हम सब वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। क्लोन्स बन रहे हैं। बकरी के क्लोन्स, इंसान के क्लोन्स, पर वो हमारे बाहरी रूप को बदल रहे हैं, स्वभाव को नहीं बदल पा रहे हैं। यह वैज्ञानिकों की पकड़ से बाहर है। फिर क्या है संत के पास, जो वो बदलने में सक्षम है।

पारस सुरति संत के पासा.....

उनकी सुरति में एक ताक़त है। जैसे सीपी में स्वाति की बूँद को मोती में बदलने की ताक़त है। उसके पेट में यह सिस्टम है। पर पानी की बूँद को

मोती बनाना वैज्ञानिकों के बस की बात नहीं है। किसी ने आज तक यह काम नहीं किया है। यह काम एक वैज्ञानिक नहीं कर सकता है। **उसके बस की बात नहीं है। मृगा की नाभि में सिस्टम है कि वो कस्तूरी का सृजन करता है। कस्तूरी मृगा का वीर्य है। वो कस्तूरी में बदल जाता है। पर अभी तक कोई केमिकल्स से कस्तूरी नहीं बना पाया है। इस तरह एक महापुरुष की सुरति के अंदर ताक़त है कि आपको बदल सकता है। क्या है ध्यान? यह ध्यान ही आत्मा है। जब वहाँ पहुँचती है तो बाकी सब कुछ छूट जाता है, कुछ बचता है तो ध्यान, सुरति बचती है।** वो परमात्मा के सम्मुख पहुँचती है, भौतिक शरीर छूट जाता है। वो उसका विषय नहीं है, उसमें वहाँ पहुँचने की ताक़त नहीं है। जैसे नासिका में सूँघने की ताक़त है, पर यह काम कानों से नहीं हो सकता है। ऐसे ही वो परमात्मा केवल आत्मा से जाना जा सकता है। इसका मतलब है कि आत्मा में ताक़त है। तो वो परम चेतन हो जाती है। यही चीज़ महापुरुषों के सान्निध्य में मिलती है। उनकी हाज़िरी में बड़ा अंतर है, बड़ी अनुभूतियाँ होती हैं। उनकी सुरति से हो जाता है। कभी आप कहते हैं कि गुरु जी, हमपर ध्यान रखना, सुरति देना, कृपा करना। ऐसा क्यों कहा गया? जैसे बरसात में छाता रख देते हैं तो धूप नहीं लगती है। इस तरह उनकी छत्रछाया में कुछ अजीब मिलेगा, ठंडक मिलेगी। यह तय है कि मिलेगा। इस तरह उनका ध्यान सक्षम है। तभी तो साहिब कह रहे हैं—

सुरति में रच्यो ससंरा, सुरति का है खेल सारा।

आपके व्यक्तित्व में सबसे अलग सुरति ही है।

सुरति संभाले काज है, तू मत भ्रम भुलाय।

अगर दुनिया में आपका कुछ भटक रहा है तो वो है—ध्यान, अगर उत्थान-पतन हो रहा है तो वो है मन। वो हमारी सुरति को भ्रमित कर रहा है।

गुरुजनों से पास जाकर कहते हैं कि हृदय में प्रकाश कर दो। क्या किया जा सकता है? हाँ! कौन-सा प्रकाश? क्या बल्ब जगाना है कोई? यह हृदय प्रकाश से क्या मतलब है? कैसा प्रकाश चाहते हैं हम? ‘**शून्य महल**

में घोर अँधेरा, करो नाम उजियारा।' भाइयो, यह प्रकाश यानी सुरति से गुरु आपकी आत्मा को चेतन करता है। तब हृदय के विकार दिखते हैं। कमरे में अँधकार है तो कुछ नहीं देख पाते हैं। रोशनी होती है तो सब चीज़ दिखने लग जाती है। जब गुरुजन हृदय में प्रकाश करते हैं तो मन के सब खेल नज़र आने लग जाते हैं, काम, क्रोध आदि दिखने लग जाते हैं। कोई बल्ब, कोई दिया नहीं जलाना है। क्या प्रकाश होता है? बिलकुल। साहिब वाणी में कह रहे हैं—

नाम बिन हृदय शुद्ध न होई। कोटिन भांति करे जो कोई ॥

तो नाम दान की क्रिया हृदय को प्रकाशित करती है। अब आप बहुत बदल गये। पहले मन जहाँ चाहता था, वहाँ बराबर खींच ले जाता था, पर अब उसका ज़ोर नहीं चल रहा है, लगता है कि हृदय प्रकाशित हो गया। स्वभाव बदल गया। अब आप चाहकर भी पाप नहीं कर पा रहे हैं। जब आप अपनी पहली ज़िदगी से अपने को तोलते हैं तो पाते हैं कि बहुत बदलाव आ गया। हर नामी यह बदलाव अनुभव कर सकता है। जो मैं कह रहा हूँ कि जो वस्तु मेरे पास है किसी के पास नहीं है। इस वस्तु के साथ तीन चीज़ें आ जाती हैं। पहला तो मन और आत्मा अलग हो जाते हैं। दूसरा संसार का आकर्षण समाप्त हो जाता है, हृदय में रोशनी हो गयी, प्रकाशित कर दिया। सुकरात ने कहा कि अँधा वो नहीं है जिसकी आँखें फूटी हैं, अँधा वो है जिसे अंदर के दोष नहीं दिखते। अक्रल दे दी। किसी का क्या काम जब आप देखने और करने जायेंगे तो दिमाग़ समझायेगा कि यह गलत है। बड़ा तगड़ा दिमाग़ कर दिया।

देखो, ब्रह्माण्ड में विस्फोट हो रहे हैं। सूर्य से भी बड़ा ग्रह हैं, जहाँ इस समय मई 2007 को आतिशबाजी हो रही है। वो खरबों मील दूर है, उसके टुकड़े यहाँ नहीं आयेंगे। बड़े-बड़े धूमकेतु यहाँ पहुँचे हैं, बड़े-2 खड्डे किये हैं। 150 कि. मी. खड्डा किया था, पूरी धरती को हिलाकर रख दिया था। आज भी चल रहे हैं। वैज्ञानिक यहाँ से बड़ी-बड़ी दूरबीनों से देख रहे हैं। आम आदमी नहीं देख पा रहा है।

आपके शरीर में बड़ी लूट हो रही है।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे ।...

आप नहीं देख पा रहे हैं वो ब्लास्टिंग। नासा केंद्र से वैज्ञानिक देख रहे हैं। आप आकाश की तरफ देखें, पर नहीं दिखाई देगा। ऐसे ही आपको वो चश्मा दिया है कि अंदर के शत्रु दिख रहे हैं, विकारों को आप देख पा रहे हैं। यह मामूली काम नहीं है। आम आदमी नहीं देख पा रहा है। फिर तीसरा एक पूर्ण सुरक्षा मिल जाती है। आपमें ईश्वरीय सत्ता पैदा की। बच्चे को चिंता नहीं है कि खाना कब है, सोना कहाँ है। जानता है कि माँ की चिंता है। वो निश्चिंत है। उसने अजमाया है, वो दिल से मानता है कि माँ संरक्षक है। ऐसे ही आप जानते हैं कि गुरु संरक्षक है। आप अपने को संसार के लोगों में अलग पाते होंगे। उनका मन पर कोई नियंत्रण नहीं है। पर आपका मन पर होल्ड हो गया है।

एक महात्मा के अंदर यह होता है कि बदल देगा। दुनिया खालमखाली है, हम बदल देंगे आपको।

सतगुरु मोर शूरमा, कसकर मारा बाण।

नाम अकेला रह गया, पाया पद निर्वाण ॥

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अंतरो जान।

वह लोहा कंचन करे, गुरु करले आप समान ॥

सच मानना, अभी बार-बार चेताकर कह रहा हूँ, जब यहाँ से चला जाऊँगा तो दुनिया पछताएगी, क्योंकि सत्य है—जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है।



सुनो तात यह अकथ कहानी

यह आत्मा अनादिकाल से यहाँ भटक रही है। बड़े लंबे समय से यह यहाँ पर है। **‘जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कछु लेन न देन॥’** क्या हमारी आत्मा का जन्म-मरण से कोई संबंध है! अगर हम विचारकर देखें तो शास्त्र भी एक बात कह रहे हैं कि आत्मा बिना मतलब के माया में फँसी है। आखिर कारण क्या है? आत्मदेव की गलती क्या है? आप आज से यहाँ नहीं हैं, अनन्त जन्म आपके हो चुके हैं। इसकी पुष्टि धर्म-ग्रंथ कर रहे हैं। चिंतन करना। वासुदेव ने कहा—हे अर्जुन! मेरे और तेरे अनेक जन्म हो चुके हैं, मुझे वे सब याद हैं, पर तुम्हें याद नहीं हैं। फिर कहा कि जिस तरह मनुष्य पुराने वस्त्रों का त्याग कर नवीन वस्त्र धारण करता है, ऐसे ही यह आत्मा भी कर्मानुसार पुराने शरीर को छोड़कर नवीन शरीर को धारण करती है। इसका मतलब है कि कर्म ही आत्मा के जन्म-मरण का कारण है। यानी आत्मा कर्मानुकूल ही जन्म-मरण को प्राप्त कर रही है। बार-बार जन्म-मरण का कारण कर्म है। अब सवाल उठा कि कर्म से आत्मा का क्या संबंध है?

सबसे पहले देखते हैं कि मनुष्य कर्म क्या कर रहा है, क्यों कर रहा है, कर्म का अभीष्ट क्या है। **‘देह धरे का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोय। ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूर्ख भुगतत रोय॥’** कर्म का अभीष्ट है—यह देही। जितने भी कर्म हैं, घूम-फिरकर हरेक कर्म के पीछे एक ही बात निकलेगी कि शरीर के पौषण और निर्वाह के लिए मनुष्य कर्म कर रहा है। नौकरी क्यों कर रहा है? धन कमाने के लिए और धन से तात्पर्य शरीर का सुख है। अच्छा मकान बना रहा है। क्यों बना रहा है? शरीर के लिए। ए. सी. लगा रखा है तो क्यों? इस शरीर को गर्मी न लगे। कर्म का अभीष्ट यह देही है। हर मनुष्य शरीर के पौषण के लिए कर्म कर रहा है। निचौड़ निकालोगे तो हर कर्म शरीर के लिए है। यानी गठान यह है कि

अपने को शरीर मान लिया। 'जड़ चेतन हैं ग्रंथि पड़ गई। यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनाई॥' आखिर गठान कहाँ है? आत्मा और शरीर की कैसी गठान है? क्यों नहीं खुल रही? किसी को हथकड़ी लगी हो तो आप उसे बंधन से छुड़ाने के लिए हथकड़े खोल देते हैं। आत्मा का बंधन खोलना है तो पहले देखना होगा न कि गठान कहाँ है। पहली बात तो यह है कि आत्मा को गठान लग ही नहीं सकती है।

आत्म ज्ञान की बात बताता हूँ। गरुड़ जी विष्णु जी के वाहन हैं। जैसे गणेश जी की सवारी चूहा है, कार्तिक की सवारी मोर है, ऐसे ही विष्णु जी की सवारी गरुड़ जी हैं। **गरुड़ जी ने विष्णु जी से प्रार्थना की, कहा कि मुझे आत्मा का ज्ञान दो। विष्णु जी ने कहा कि आत्मा का ज्ञान चाहते हो तो काकभुशुण्डी जी के पास जाओ। आप सोचें यहाँ पर।** जैसे कोई इतिहास का प्रोफेसर होता है, उससे कोई बच्चा गणित का ऐसा प्रश्न पूछे जो उसे न पता हो तो वो कहता है कि गणित के प्रोफेसर के पास जाओ, उनसे पूछो। ऐसे ही गणित के प्रोफेसर से यदि इतिहास का प्रश्न कोई पूछे, जो उसे न पता हो तो वो इतिहास वाले प्रोफेसर के पास भेजता है। ऐसे ही विष्णु जी ने गरुड़ जी को काकभुशुण्डी जी के पास भेजा। क्योंकि वे आत्म ज्ञान के विशेषज्ञ थे, यह बात विष्णु जी को पता थी। काकभुशुण्डी जी पहले साहिब के शिष्य थे। गरुड़ जी भी रहे।

तो गरुड़ जी आत्म-ज्ञान पाने के लिए काकभुशुण्डी जी के पास गये। उन्होंने कई सवाल पूछे। पूछा कि आत्मा क्या है, समझाओ? पूछा कि आप आत्मज्ञानी हो तो कौवे क्यों हो? काकभुशुण्डी जी ने कहा कि पिछले जन्म में मैंने एक बार गुरु का अपमान किया था, मुझे अहंकार था कि मुझे गुरु से अधिक ज्ञान है, एक बार जब गुरु जी आए तो सबने प्रणाम किया, पर मैंने नहीं किया। मैं शिव मंदिर में था तो शिवजी ने मुझे शाप दिया, कहा कि मेरे स्थान पर गुरु की निंदा की, जा कौवा हो जा। तब मुझे गुरु का ध्यान आया, मैं उनके पास गया और कहा कि शिवजी

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

15

का वचन तो मिट नहीं सकता, पर आप कृपा करो। गुरु ने पूछा कि क्या चाहते हो? मैंने कहा कि मुझे कौवे की योनि में भी आत्म-ज्ञान रहे, मेरा आत्मज्ञान न मिटे।

तो फिर गरुड़ जी ने कहा था कि कई युग हो गये, अब तो यह शरीर छोड़ो। काकभुशुण्डी जी ने कहा कि मुझे यह शरीर बड़ा ही प्यारा है, क्योंकि इसमें आकर मुझे बड़ा ज्ञान मिला है, इसलिए मैं इसे नहीं छोड़ना चाह रहा हूँ। काकभुशुण्डी ने उस शरीर में बैठकर कई सृष्टियाँ देखी थीं।

तो आत्म ज्ञान की बात हुई, काकभुशुण्डी जी ने कहा—

सुनो तात यह अकथ कहानी।

समझत बने न जाय बखानी ॥

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।

चेतन अमल सहज सुखरासी ॥

सो माया वश भयो गुसाईं।

बन्धयो जीव मरकट की नाई ॥

यह 'तात' बड़ा प्यारा शब्द है। 'तात' शब्द किसी के लिए भी इस्तेमाल हो सकता है। गुरु के लिए भी, शिष्य के लिए भी, प्रीतम के लिए भी, पुत्र के लिए भी। तो कहा— '**सुनो तात यह अकथ कहानी।**' अकथ यानी कही न जा सकने वाली। '**समझत बने न जाय बखानी।**' कहा कि समझ लेना, वर्णन नहीं कर पाऊँगा। '**ईश्वर अंश जीव अविनाशी।**' यह आत्मा मामूली नहीं है। ईश्वर की अंश है, अविनाशी है।

इसलिए तो मैं आपसे रंग रूप से परे होकर बात कर रहा हूँ। जिसे भी आत्म-ज्ञान हो जाता है, सबमें एक आत्मा देखता है।

आप बहुरूपिये को देखते हैं कि वो कभी कुछ बनकर आता है, कभी कुछ। कभी वो हनुमान बनकर आपके सामने आता है, कभी कृष्ण बनकर, कभी सिकंदर बनकर। उसका काम है आपको हँसाना। तो जो

वहाँ के लोग हैं वो जानते हैं कि यह तो फलाना है, कहते हैं कि वो आ गया। यदि उसका नाम रामपाल है तो वो कहते हैं कि देखो, रामपाल आ गया, हनुमान उन्हें बाद में दिखता है। इस तरह आत्मज्ञानी सबसे पहले सबमें एक आत्मा देखता है।

फिर यह '**चेतन अमल सहज सुखरासी ॥**' यह चेतन है। यानी सजीव है। शरीर तो जड़ है, पर यह जड़ चीज़ नहीं है। फिर यह अमल है। यानी मल रहित है। इसमें कोई भी गंदगी नहीं है। शरीर तो गंदगी से भरा है, बना भी गंदगी से ही है। पर आत्मा अत्यन्त निर्मल है। बड़ी ही प्यारी है, गंदगी से परे है। फिर सहज है। यानी यह छल-कपट से भी परे है। इंसान में तो छल-कपट है, यह मन का गुण है, आत्मा का नहीं। आत्मा छल-कपट से परे है। नितान्त ही सहज है। फिर यह आनन्दमयी है, आनन्द से भरी पड़ी है। इसमें कहीं से भी आनन्द को आहुत नहीं करना है, इसमें स्वतः ही आनन्द भरा पड़ा है। जैसे शरीर में तो आनन्द को आहुत करना है। पंच इंद्रियों के आनन्द को आश्रय की ज़रूरत है। पर आत्मा निराश्रित है। आँखों का आनन्द लेने के लिए सुंदर दृष्य की ज़रूरत है, कानों का आनन्द लेने के लिए शब्द की ज़रूरत है, जिह्वा का आनन्द लेने के लिए अच्छे-2 खाद्य पदार्थों की ज़रूरत है, त्वचा का आनन्द लेने के लिए स्पर्श चाहिए, नासिका का आनन्द लेने के लिए खुशबू वाले पदार्थ चाहिए। यानी पंच इंद्रियाँ आश्रित हैं किसी पर। नहीं तो नहीं मिल पायेगा आनन्द। स्पर्श नहीं मिला तो त्वचा का आनन्द नहीं मिलेगा, सौंदर्य न मिला तो आँखों का आनन्द न मिलेगा, अच्छी-अच्छी खाने की चीज़ें न मिलीं तो जिह्वा इंद्रि का आनन्द नहीं मिलने वाला, शब्द न सुनाई पड़ा तो कानों के आनन्द से वंचित रह जाओगे, खुशबू वाले पदार्थ न होंगे तो नाक का मज़ा नहीं मिल सकेगा। पर आत्मा को ऐसे आनन्द को कहीं से बुलाना नहीं है, इसमें स्वतः ही प्रस्फुटित हो रहा है।

तो कहा कि '**सो माया वश भयो गुसाई, बन्धयो जीव मरकट की नाई ॥**' कहा कि यह तोते और बंदर की तरह बँध गयी है। जैसे बंदर

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

17

कहीं बँधा नहीं है। वो तो खुद अपने को फँसाए हुए है। तोते को किसी ने नहीं पकड़ा होता, पर वो खुद ही नलनी को पकड़े रखता है, सोचता है कि किसी ने पकड़ लिया। ऐसे ही आत्मा को किसी ने नहीं पकड़ा है, आत्मा खुद कह रही है मेरा-मेरा। एक मन की अनुभूति है, एक आत्मा की। जो मेरा-मेरा कर रहे हैं, यह है गठान।

दो चीजों में यह आत्मा फँसी है। किसी भी व्यक्ति को देखें तो दो चीजें नज़र आती हैं—एक तो व्यक्ति और दूसरा उसका व्यक्तित्व। व्यक्तित्व में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार आते हैं। इन्हीं में आत्मा फँसी है। इसलिए आप कहते भी हैं कि मन और माया में फँसे हैं। माया यह शरीर और मन यह व्यक्तित्व है।

शिकारी के तोते की तरह यह आत्मा घूम-घूमकर इस शरीर रूपी पिंजड़े में आ रही है। जैसे उसे अफ़्रीम का नशा था, ऐसे ही आत्मा को आसक्ति हो गयी है माया में। माया का नशा चढ़ गया है। गुरु इस नशे को तोड़ता है।

I I I



अत्म ज्ञान बिना नर भटके।
क्या मथुरा क्या काशी ॥

भृंग मता होय जेहि पासा

सद्गुरु का भेद देते हुए साहिब धर्मदास को समझाते हैं—

भृंग मता होय जेहि पासा । सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

कह रहे हैं कि जिसके पास भृंग मता हो, वही सच्चा गुरु है, वही सद्गुरु है। अब यह भृंग मता क्या है? 27 लाख कीट हैं। भृंगा उन सबमें निराला है। वो केवल पुरुष ही है, उसकी मादा नहीं है। उसका वंश कैसे चलता है! वो किसी भी कीड़े को पकड़ लाता है। मिट्टी का घर बनाता है वो। उड़ता भी बड़ी स्पीड में है। उसकी आवाज़ में एक जादू है। वो कीड़े को मिट्टी के घर में रख कर अपनी आवाज़ सुनाता है। बड़ी रोमांचित करने वाली है उसकी आवाज़। उस आवाज़ से उसे वो अपने जैसा कर देता है। पर यदि कीड़ा उसकी आवाज़ सुने ही न तो नहीं हो पाता है वो उसकी तरह। तो भृंगा उसे छोड़कर इधर-उधर चक्कर काट कर आता है और फिर आकर अपना शब्द सुनाने लगता है। यदि वो फिर भी न सुने तो भृंगा फिर उड़कर चला जाता है और फिर एक चक्कर काटकर आता है और अपनी आवाज़ सुनाने लगता है। यदि वो सुन ले तो उसकी तरह हो जाए, पर यदि तीसरी बार भी न सुने तो भृंगा उसे छोड़ देता है। वो कीड़ा ही रह जाता है, भृंगा नहीं बन पाता है। अब वो दूसरे कीड़े को पकड़कर लाता है और यही खेल उसके साथ भी शुरू करता है।

यही काम सद्गुरु का है। सद्गुरु भी शिष्य को अपनी सुरति से अपने समान कर देता है। कीड़े को कुछ नहीं करना है। पकड़कर भी उसे भृंगा ही लाता है, नीचे गिराकर शब्द भी उसे खुद ही सुनाता है। उस कीड़े को तो केवल सहमति जतानी है, शब्द सुनना है। पर वो सुने ही नहीं तो कैसे होगा!

इसी पर साहिब कह रहे हैं—

भृंगी शब्द कीट जो माना ।

वरण फेर आपन कर जाना ॥

जो कीड़ा भृंगे का शब्द सुन लेता है, वो अपना वर्ण भूलकर उसकी तरह हो जाता है। यानी गुबरैला होगा तो वो अपनी आदतें भूलकर भृंगा हो जायेगा, ततैया होगा तो वो ततैया वाली आदतें, ततैया वाले गुण छोड़कर भृंगे के गुण अपना लेगा, उसकी तरह ही हो जायेगा।

कोई कोई कीट परम सुखदाई ।

प्रथम आवाज़ गहे चित्तलाई ॥

पर साहिब कह रहे हैं कि कोई-कोई कीट बड़ा सुखदाई होता है, जो पहली आवाज़ में ही शब्द को ग्रहण कर लेता है और उसी की तरह हो जाता है।

कोई दूजे कोई तीजे मानै ।

तन मन रहित शब्द हित जानै ॥

कोई दूजे और कोई तीजे शब्द में ग्रहण करता है। कुछ-कुछ कीट कठिन हैं, जो पहली में परिवर्तित नहीं होते हैं, दूसरी या तीसरी आवाज़ में परिवर्तित हो जाते हैं।

भृंगी शब्द कीट ना गहई ।

तौ पुनि कीट आसरे रहई ॥

पर जो कीड़ा उसका शब्द सुनता ही नहीं, तीसरी बार भी डर जाता है या सुनना नहीं चाहता, वो फिर कीड़ा ही रह जाता है।

गुरुशब्द निश्चय सत्य माने, भृंगि मत तब पावई ।

तजि सकल आसा शब्द बासा, कागा हंस कहावई ॥

ऐसे ही गुरु शब्द सुखदाई है। भृंगे की भू-भू की प्रकिया में स्पन्दन है। कुछ कीट पहले में नहीं हो पाते हैं परिवर्तित। क्यों नहीं हुए। क्योंकि समर्पित नहीं होते। जब तक समर्पित होकर नहीं सुनता, उसका परिवर्तन

नहीं हो पाता। फिर तीन बार में भी न हो तो भृंगा उसे छोड़ देता है, दूसरे को ढूँढ़ता है।

तो पुनि कीट आसरे रहई....

फिर नहीं बन पाता है वो भृंगा, कीट ही रह जाता है। उसने सहमति ही दी। यह सहमति साधारण नहीं है।

पहले दाता शिष्य भया, जिन तन मन अरपा शीश।

पीछे दाता सतगुरु भया, जिन नाम दिया बखशीश ॥

सभी सहज-मार्ग, सहज-मार्ग कहे जा रहे हैं, पर कमाई-कमाई कहे जा रहे हैं। ये दो पहलू हैं। साहिब कह रहे हैं कि तुम्हें कुछ भी नहीं करना है, सद्गुरु सभी चीज़ें उत्पन्न कर देगा। ये चीज़ें अपने आप आपमें आती जायेंगी। ज्ञान भी खुद ही आ जायेगा, भक्ति भी खुद ही आ जायेगी, मन पर कण्ट्रोल भी खुद ही आ जायेगा, रुहानियत भी खुद ही आ जायेगी, शक्तियाँ भी खुद ही आती जायेंगी। आप कहेंगे कि हम नहीं करेंगे तो कैसे होगा! यह जो हम है, इसे संचालन कौन कर रहा है नाम के बाद! गुरु की ताक़त ही इसका संचालन कर रही है, इसलिए अपनी मैं नहीं लाना बीच में, केवल सहमति रखना।

एक ने कहा कि यदि गुरु की कृपा से ही सब होता है तो जो हम ठगी कर रहे हैं, वो भी उसकी ही इच्छा से होता होगा। मैंने कहा-सुन, पूरा-पूरा जबाव दूँगा। यह तब होता है जब हम पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते हैं। तब चाहकर भी गलत नहीं कर पायेंगे। अभी आप प्रभु के भरोसे चल रहे हैं, प्रारब्ध आपका संचालन कर रहा है, कर्मानुसार आपको फल मिलेगा। मान लो कि कुँए में गिरना होगा तो पक्का गिरोगे। पर जब सद्गुरु पर आश्रित होते हैं तो सद्गुरु कर्म को एक तरफ कर देते हैं। वो घटना टल जाती है।

कोटि कर्म पल में कटे, जो आवे गुरु ओट ॥

जो भी काम करेंगे, जो भी नुक़सान या अहित होने वाला होगा, वहाँ गुरु की ताक़त रक्षा करेगी। जो भी होगा वो हित में ही होगा। इसलिए

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

21

हित-अनहित सबमें उसी की रज़ा मानना। ...तो कहने का भाव है कि सब कुछ वही करेगा, तुम्हें कुछ नहीं करना है।

सुरति करौ मम साईया, हम हैं भवजल माहिं।

आप ही हम बह जायेंगे, जो न गहोगे बाहिं ॥

अर्थात् साहिब ने इंगित किया कि वो अविलंब बदल देगा। कैसा बना देगा? स्वयंमय बना देगा। यही कह रहे हैं कि परिश्रम करने की ज़रूरत नहीं है।

कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया लखाय ॥

अपने कल्याण के लिए कुछ नहीं करना। यहाँ सावधानी बर्तना। देखो, पी. डब्ल्यू. वालों ने स्पीड ब्रेकर लगाए हैं। क्या गाड़ियों को पलटने के लिए? नहीं। एक्सीडेंट बचाने के लिए। उसके कुछ पहले बोर्ड भी लगाए हैं, उनपर लिखा है कि आगे स्पीड ब्रेकर है, अभी से अपनी गति कम कर लो। यदि आप उपेक्षा करें तो कैसा है! एक नदी में ट्रक गिर गया, मैं कहीं से आ रहा था तो देखा। क्या उसे गिराने के लिए लगाया गया था ब्रेकर। नहीं, वहाँ रास्ता ही कुछ ऐसा था, इसलिए पहले स्पीड ब्रेकर लगा दिया था कि गति कम हो और एक्सीडेंट बच जाए। पर वो ड्राइवर शराब पी रखा होगा, उसने पालन नहीं किया।

आपके साथ भी ऐसा मामला है। आपके अंदर पूरा मामला फिट कर दिया है। जब भी कुछ गलत करने जाओगे तो सिग्नल मिलेगा कि मत करो। यह है सहज-मार्ग कि खुद-ब-खुद आपको अंदर से सफ़ा कर दिया जायेगा।

दुनिया में अनेक गुरु हैं जो कहते हैं कि आपको पार कर देंगे, पर जब उनके लोगों को देखते हैं तो पता चलता है कि उनमें कोई बदलाव नहीं आता है। यानी वे सच्चे गुरु नहीं हैं। इसलिए साहिब ने सतर्क करते हुए कहा—

भृंग मता होय जिहि पासा। सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

जैसे भुंगा कीट के बिना प्रयास के उसे बदल देता है, ऐसे ही शिष्य की चेष्टा बिना ही यह काम कर देता है। इसलिए— ‘शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ॥’

मैं नाम दे रहा था। जब सबको बताया कि यह-यह नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, माँस नहीं खाना आदि नियम बताए तो एक लड़का खड़ा हो गया, कहा कि यदि हममें इतनी ताकत होती कि इन नियमों पर चल सकते तो आपके पास क्यों आते! कहा कि फिर तो हम महात्मा हो जाते। मैंने कहा कि तुमने बड़ी प्यारी बात कही, सुनो, वो क्षमता भी दी जायेगी, घबराओ मत।

ना कुछ किया ना कर सका, ना करने योग शरीर।

जो कुछ किया साहिब किया, भया कबीर कबीर॥

एक माई ने कहा कि मेरा बंदा नाम लिया है तो काम करना ही बंद कर दिया है। मैंने बंदे से पूछा तो कहा कि मैं साइकिल पर घरों में सिलेण्डर स्पलाइ करता हूँ। वो 295 में पड़ता है, मैं घर तक पहुँचाने के 300 रुपये लेता हूँ। मैंने कहा कि ठीक तो है। वो कहा कि पूरे दिन में ऐसे 100 रुपये ही बन पाता है। इससे क्या होगा! मैं फिर 2 किलो गैस हरेक सिलेण्डर से निकालता था। पर अब जब निकालने लगता हूँ तो आप खड़े हो जाते हैं। मैं नहीं कर पाता हूँ यह काम। इतने कम पैसे में बच्चों को कैसे पालना है!

एक दूधिये ने नाम लिया। उसकी बीबी ने भी कहा कि जबसे इसने नाम लिया है, काम करना ही बंद कर दिया है। मैंने कहा कि यह तो ठीक नहीं है। फिर तो लोग कहेंगे कि साहिब-बंदगी वाले निकम्मा बना देते हैं। मैंने बंदे से पूछा तो कहा कि आपसे क्या छिपा है। मैं एक किलो यूरिया, एक किलो सरों का तेल, एक किलो निरमा और थोड़ा पाउडर लेता था, सबको मिलाकर दूध तैयार करता था। इससे चिकनाहट भी आ जाती है, दूध गाढ़ा भी लगता है और यह फटता भी नहीं है। पर इससे फेफड़े, किडनी बगैरह का सत्यानाश हो जाता है। उसने कहा कि दिल्ली

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

23

के अंदर दूधियों की बड़ी-2 कोठियाँ हैं, कई लाख किलो दूध लगता है, इतना कोई मंजों से थोड़ा आता है। यह काम होता है। पर नाम के बाद जब मैं जैसे ही यह काम करने लगा तो आप खड़े हो गये, कहने लगे कि यह क्या कर रहे हो! तब से मैं काम नहीं कर पा रहा हूँ।

गुरु के पास पारस सुरति है, उससे बदल देगा। गुरु अपनी पूरी ताकत आपमें प्रत्यारोपित कर देगा।

लोहे को जंग से बचाने के लिए आग में डाल दिया जाता है। लोहे में मिट्टी मिली होती है। सोने को जंग नहीं लगती है।

एक जमाना था, जब कीटनाशक खेतों में फेंका जाता था, पर वो वातावरण को दूषित करता था। वैज्ञानिकों ने समझा इस बात को और अब तो बीज ही ऐसा तैयार कर दिया कि उसे कीड़ा लगे ही न। इस तरह आपको मौत रूपी कीट अब नहीं लग सकता। दुनिया में जन्म-मरण रहेगा, पर आपका जन्म-मरण छूट जायेगा। लोहे को पारस का स्पर्श मिल गया तो जंग नहीं लगेगा, सोना हो जायेगा। इस तरह गुरु अपने समान कर लेगा तो जन्म-मरण की जंग नहीं लगेगी। जैसे गुरु का मन पर होल्ड है, आपका भी हो जायेगा, जैसे उसमें शक्तियाँ हैं, आपमें भी आ जायेंगी।

आप नहीं देख रहे हैं अपने बच्चों को कि उनमें आपकी आदतें आ रही हैं। यह आपका एक शुक्राणु है। गुरु की सुरति शिष्य की आत्मा तक पहुँची। उसमें सब चीज़ें सहज ही आ गयीं। फिर काम, क्रोध नहीं लगेगा। साहिब ने ऐसे गुरु के लिए कहा कि जो भृंग की तरह बदलने की क्षमता रखता हो। 'गुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया ॥' अध्यात्म की खोज समाप्त हो जाती है। योग में यह प्रावधान नहीं है।

कहीं सगुण निर्गुण की तरफ चलता है तो कहीं निर्गुण सगुण की तरफ चलता है। इनमें तात्त्विक भिन्नता नहीं है। फिर एक हो जाते हैं। पर साहिब ने दोनों के परे बताया।

जिसके पास जो है, उसका ध्यान करके वो पाया जा सकता है, सुरति से सब पाया जा सकता है। यदि कभी आप नहीं कर पा रहे हैं तो गुरुजन आपका ध्यान करके वो तत्व आप तक पहुँचा देंगे। ये तो सभी बाद में संतों की नक़ल कर रहे हैं। जब आप आज्ञाचक्र में ध्यान रोकोगे तो वो गुरु का ध्यान कैसे हुआ! इसलिए गुरु को परखना होगा कि भृंगमते वाला है या नहीं। क्योंकि वो तो थोक में सारी चीज़ें आप तक पहुँचा देगा। वो अपने अंदर की सारी रुहानियत आपको दे देगा।

जब भी मैं नाना मत-मतांतरों की तरफ देखता हूँ तो हैरत होती है, लोगों से गोष्ठी होती है तो पाता हूँ कि उन्हें अंदर की दुनिया के बारे में ज्ञान नहीं है, वे नहीं गये होते हैं, उन्हें नहीं मालूम है कि कैसे जाना है। वे गोष्ठियाँ कर रहे हैं, अंदर की दुनिया की बात कर रहे हैं, पर त्रुटियाँ मिल रही हैं। पहली बात है कि जिस बिंदू पर ध्यान रोक रहे हैं, वो गलत है। उन्हें पता नहीं है, केवल किताबी बातों से वाद-विवाद कर रहे हैं। यथार्थ में कुछ भी अनुभव नहीं है, परैक्टिकल ज्ञान नहीं है उनके पास।

साहिब की वाणी सर्वमान्य है। जब चाचरी मुद्रा वालों को पूछता हूँ तो उन्हें अपनी मुद्रा के बारे में कुछ ज्ञान नहीं होता है कि कैसे जाना है। अगोचरी वालों से पूछता हूँ कि तुम शब्द सुरति अभ्यास करते हो, कैसे जाते हो? पर उन्हें भी पता नहीं होता है। जब भी रुहानी दुनिया में जाते हैं तो एक अंतवाहक शरीर से जाना होता है। जब तक वो शरीर पूरी तरह से स्थूल शरीर से नहीं उठता, तब तक नहीं जाया जा सकता है, तब तक आंतरिक यात्रा नहीं हो सकती है।

मानव के स्थूल शरीर में भी ताक़त है। इसमें जाग्रत का विशेष महत्व है। इसी चेतन के ज्ञान द्वारा सभी काम कर रहे हैं। चेतन अवस्था इसका संचालन कर रही है। सूक्ष्म में भी पूरी चेतना एकाग्र होकर वहाँ पहुँच रही है। सवाल यह है कि किस तरह उन शरीरों में प्रवेश लिया

जाए। नाना मत-मतांतरों के लोग कोरी बहस कर रहे हैं। साहिब ने खरा कहा- 'तेरा मेरा मनवा कैसे इक होई रे... ॥'

जब भी सूक्ष्म में प्रवेश लेती है चेतना तो उसी के अनुसार काम करने लगती है। बिजली का पॉवर पंखे में पहुँचता है तो घूमने लगता है, जब लिफ्ट में पहुँचता है तो वज्रन उठाने का काम करता है, जब ए. सी. में लगता है तो ठंडक देने का काम करता है, जब प्रेस में लगता है तो गर्मी देने का काम करता है। जैसा पात्र मिला, उसी के अनुसार काम किया।

यह चेतना, यह कॉन्शियस जिस भी शरीर में प्रवेश लिया, उसी के अनुसार काम करता है। स्थूल का संचालन दिमाग़ कर रहा है। दिमाग़ की जैसी संरचना है, उसी के अनुसार मनुष्य काम करता है। निद्रा में यह चेतना सूक्ष्म शरीर में प्रवेश ले लेती है। पर बड़ा कौतुक है कि हर मनुष्य अपने जीवन का 1/3 हिस्सा सोकर गँवाता है। जब भी नींद में जाता है तो सूक्ष्म शरीर मिलता है। इसे लिंग देही भी कहते हैं। पर एकाग्रता उसमें बहुत कम होती है। बहुत सूक्ष्म होता है। लेकिन जीवन में कई बार उस शरीर से निकलने के बाद भी इंसान को मालूम नहीं है। अगर किसी की उम्र 90 साल है तो समझो कि 30 साल वो वहाँ गुज़ारा। इतनी देर वहाँ रहा, पर ख़बर नहीं होती कि कैसे जा रहा हूँ, कैसे वापिस आ रहा हूँ।

पूरा खेल अवस्था का है। यह अवस्था अत्यंत न्यून चेतना की है। जैसे गाड़ी में 5 गेयर हैं। एक नंबर पर रफ़्तार कम होती है, दूसरे पर थोड़ी अधिक, तीसरे पर और ज़्यादा, चौथे पर बहुत तेज़ होती है और पाँचवें में सुपर हो जाती है। इस तरह चेतना की विभिन्न स्थितियों में एकाग्रता बढ़ती जाती है। पर निद्रा वाले से वहाँ का हाल पूछा जाए तो मालूम नहीं है।

योगावशिष्ट में संवाद आता है कि वशिष्ट जी अंतर्वाहक शरीर से इंद्र लोक पहुँचे, इंद्र को जगाया। इंद्र ने अपना वज्र छोड़ा, पर उन्हें कुछ न

हुआ। इंद्र ने पूछा कि तुम कौन हो? तुम मुझे दिखाई नहीं दे रहे हो, मेरे पास तो कोई नहीं आ सकता है। वशिष्ठ ने कहा कि मैं अंतवाहक शरीर से आया हूँ। वो अलग है। वो कानों के बिना सुनता है, आँखों के बिना देखता है। गीता में भी आता है कि इस आत्मा के हाथ नहीं हैं, पर फिर भी सभी दिशाओं काम कर सकती है, इसके पैर नहीं हैं, फिर भी सभी दिशाओं से चल सकती है। तो कहा—हे इंद्र! मैं अंतवाहक शरीर से आया हूँ।

मनुष्य जब स्वप्न में गुज़रता है तो वहाँ का हाल सत्य लगता है, पर बाद में लगता है कि झूठ था। इस तरह हाल की अवस्था भी भ्रमांक है। जब प्रज्ञा में पहुँचते हैं तो ज्ञान होता है। तीसरा कारण शरीर बड़ा बारीक होता है। जैसे कभी-2 कोई चिंतन में खोया होता है तो आप पूछते हैं कि भाई कहाँ हो? क्योंकि यथार्थ में कहीं चला गया होता है वो। कैसा शरीर है वो? अब वहाँ की घटना उसे पता नहीं चलेगी, क्योंकि कारण शरीर निकलकर चला गया। कुछ अनुभव करने लगता है साधक। देही यहीं होती है, खुद कहीं चला जाता है। आप पास जाकर उसे हिलाते हैं, कहते हैं कि कहाँ हो? वो सच में अजीब संसार देखता है। इसे कहते हैं विचारों में खोना। इसका प्रेक्टिकल बोध भी हो रहा है, पर नहीं जान पा रहा है कोई।

जानवरों के पास सूक्ष्म शरीर नहीं है, वो निद्रा में नहीं जा सकते हैं। उनके पास महाकारण शरीर नहीं है, इसलिए वो प्रज्ञावस्था में नहीं जा सकते हैं। अगर मानव शरीर को देव दुर्लभ कहा तो कारण है, यथार्थ में बड़ा दुर्लभ है। देवता ब्रह्म-लोक का भ्रमण कर सकते हैं, पर महाशून्य में भ्रमण नहीं कर सकते। मनुष्य में यह दाद ही है कि महाशून्य में और उस अमर-लोक में भी जा सकता है, इसलिए वो भी चाहते हैं।

तो साधक कारण में रहता है। आप कई बार चले जाते हैं, खो जाते हैं कहीं। बड़ा हल्का है वो। आप ख्यालों में खो जाते हैं। कभी आपको लगता है कि फ़लाना आपके पास आने वाला है। ख़याल आता है और वो

आपके पास पहुँच जाता है, आप कहते हैं कि अभी तो तुम्हारा ख्याल आया था।

चौथा महाकारण शरीर है। इसका ज्ञान व्यास जी को था। संजय को इसी का ज्ञान दिया था। संजय इसे प्राप्त कर कुरुक्षेत्र का हाल बता रहा था। यह आपके पास भी है। कभी कहते हैं कि अंतर्दृष्टि खुल गयी। बहुत सिस्टम हैं आपके अंदर। मोबाइल में बड़े सिस्टम हैं, पर ज्ञान नहीं है तो कोई फ़ायदा नहीं है। इस तरह यदि ज्ञान नहीं है तो कुछ लाभ न होगा। यह तो नारायणी देही है।

तो महाकारण शरीर निराला है। इसका ज़िक्र भी आता है। सिद्ध लोग इसे प्राप्त कर लेते हैं। वो काफ़ी काम कर लेते हैं, बड़ी दूर तक देख लेते हैं। तभी तो महात्मा के पास जाकर पूछते हैं कि फ़लाना काम शुरू करना है, देखकर बताओ कि सफल होगा कि नहीं। यानी मानव के पास दिव्य शक्तियों का भण्डार है। साधक ऐसे शरीरों को प्राप्त कर लेता है जो आंतरिक संसार में जाते हैं। फिर बाहरी संसार का रोमांच समाप्त हो जाता है, फीका हो जाता है यह संसार। संसार में संभोग के आनन्द को सबसे बड़ा माना जाता है, पर संभोग से हजार गुणा ज़्यादा वो आनन्द है आंतरिक संसार का। पर ये चीज़ें धीरे-2 समाप्त होती जा रही हैं। समग्र विनाश नहीं होता किसी भी चीज़ का। झूठ का भी अंश रह जाता है। सतयुग में भी झूठ था, पर कम था।

इस तरह फिर पाँचवीं ज्ञान देही है। जब इसे प्राप्त करता है तो बड़ी शक्तियाँ आ जाती हैं। कुछ भी कर लेता है। वो चाहे तो बरसात भी कर लेगा। ऐसा लगता है कि मैं सब कुछ कर सकता हूँ। वशिष्ठ जी से राम जी ने ऐसे ही दीक्षा नहीं ली थी। कहीं मनुष्य ने दिव्य शक्तियाँ प्राप्त की, इसलिए देवत्व भी आकर दीक्षा लिए। विष्णु जी का अवतार कृष्ण जी थे, उन्होंने दुर्वासा जी से दीक्षा ली। इसलिए पता चलता है कि मानव के पास बड़ी शक्तियाँ हैं। गुरु बनाना कोई छोटी बात नहीं है।

राम कृष्ण से को बड़ा, तिन भी तो गुरु कीन।

तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन॥

बाली, बलि आदि को देखें तो कितनी शक्तियाँ आ गयी थीं। योगियों ने भी बड़ी शक्तियाँ प्राप्त कीं।

फिर विज्ञान देही है। इसका न आगा है, न पीछा है, न हल्का है, न भारी है। यह अनूठा है। महायोगेश्वर इसकी प्राप्ति करते हैं। संतों ने भी इसका उल्लेख किया है। इसके आगे संत होते हैं।

तो इन सबके बारे में जब नाना मत-मतांतरों के लोगों से बात करता हूँ तो उन्हें ज्ञान नहीं होता है इनका। वे केवल पुस्तक का अध्ययन करके वाद-विवाद कर रहे हैं।

अब तो खिचड़ी पंथ बन गये हैं। आप जान नहीं पायेंगे कि बाबा जी का रास्ता क्या है। जैसे एक कहानी शुरू करें और पाँच कहानियाँ उसमें मिला दें तो पता नहीं चलेगा कि क्या बोला। ऐसे ही आज महात्मा लोगों को खुद पता नहीं है कि वो बोल क्या रहे हैं। आज आंतरिक दुनिया की बात कोई नहीं कर रहा है। 'मैं आया मुम्बई से, खबर कहे मेरा भाई॥' वाली बात हो गयी है। एक प्रोफेसर थे, बच्चों को समझाते थे कि सिगरेट बड़ा हानिकारक है। बड़ा-सा लेक्चर देकर जब अपने कमरे में जाते थे तो सिगरेट लगा लेते थे। लड़के उनको देखकर हँसते थे। आज महात्माओं का यही हाल है। केवल पुस्तक की बातें रह गयी हैं। आप अपने अनुभव की बात करें। यदि नहीं है तो दुनिया को बुद्ध मत बनाओ न, यह तो आत्मा के साथ खिलवाड़ है।

एक ने मुझे इंदौर से फोन किया, कहा कि आप जो बोल रहे हैं, वो किस किताब से पढ़कर बोल रहे हैं या फिर आप वहाँ गये हैं। मैंने कहा कि आपका क्या ख्याल है! आप समझो न यह बात, नहीं तो किसी समझदार को ले आओ, मैं बात कर लूँगा।

मैंने एक सार शब्द वाले से पूछा कि क्या है सार शब्द तो उसने

कहा कि गुरु जी ने कहा है कि बताना नहीं है। वाह! बताना नहीं है। जैसे कोई किसी बच्चे को पूछे कि ग्वालियर का रास्ता कहाँ है? वो बच्चा कहे कि जानता तो हूँ, पर मेरे बाप ने कहा है कि किसी को मत बताना। इस तरह वे तो बस अपनी खोपड़ी पर अहंकार का पिटारा लेकर घूम रहे हैं, वास्तव में कुछ पता नहीं है।

सहज-मार्ग क्या है? पूरी जिम्मेदारी गुरु की है। आपकी मोह-माया हटती जायेगी, आपके अंदर के विकार समाप्त होते जायेंगे, एक चौकीदार आपकी सुरक्षा के लिए खड़ा रहेगा हमेशा। 'मेरा हरि मौको भजे, मैं सोऊँ पाँव पसार ॥' वाली बात हो जायेगी। यह है सहज-मार्ग। तुम्हें कुछ नहीं करना है। यह है भृंग मता।

गुरु को कीजे दण्डवत्, कोटि कोटि प्रणाम।

कीट न जाने भृंग को, करिले आप समान ॥

आदमी तो शंका में है कि हमें क्या करना है। कोई कुछ कह रहा है, कोई कुछ। अपनी ताकत से आप माया को नहीं छोड़ सकते हैं। गुरु नाम की ताकत खुद यह काम करेगी।

हमारे देश में शीश पर हाथ रखकर नाम दिया जाता है। कोई कहता है कि हमें गुरु जी ने माइक पर नाम दिया, कोई कहता है कि टी. वी. पर दिया। नहीं, नाम ऐसे नहीं दिया जाता। एक ने मुझसे भी पूछा कि यदि आपको हज़ार आदमी को एक साथ नाम देना पड़ेगा तो क्या तब भी ऐसे ही शीश पर हाथ रखकर देंगे? मैंने कहा कि यदि एक लाख आदमी को भी नाम देना पड़ा तो ऐसे ही दूँगा, क्योंकि नाम देने की विधि ही यही है। वो ऐसे ही दिया जाता है। यही सिस्टम है नाम का। क्योंकि वो किरणें शिष्य को प्रदान करनी हैं।

एक शराबी मेरे पास आया, थोड़े दिन हुए थे शराब छोड़, कहा कि नाम दो। मैंने कहा कि अभी थोड़ा कण्ट्रोल करो, बाद में दूँगा। बाद में वो किसी दूसरे महात्मा से नाम लेकर आया, अपने ही गुरु को गालियाँ

देन लगा, कहा कि मैं शराब में धुत था तो नाम दे दिया, क्या ऐसे देते हैं नाम! मुझे तो पता भी न चला कुछ। यानी गुरु जी को शिष्य की कुछ खबर ही नहीं थी कि क्या मामला है। तभी कहा— ‘पानी पीजिये छानि के, गुरु कीजे जानि के ॥’ गुरु जी तो बस अपनी संख्या बढ़ाने में लगा था। मैं समाज को कह रहा हूँ कि ऐसे लोगों से सतर्क रहो, जिनको आपकी खबर ही नहीं है कि क्या कर रहे हैं आप। यदि गुरु जी को आपके पाप कर्मों की खबर नहीं है तो फिर वो आपका कल्याण भी नहीं कर पायेगा, क्योंकि जब काल आपकी आत्मा को लेने आयेगा तो भी उसे खबर न होगी और वो आपको कहीं भी जाकर पटक देगा। आपका वो पाखण्डी गुरु आपको काल से बचा नहीं पायेगा। इसलिए पूर्ण गुरु की खोज करनी होगी। साहिब के ये शब्द याद रखने होंगे—

भृंग मता होय जिहि पासा। सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

जो आपको कह रहा है कि कुछ कर, कमाई कर, समझना कि वो संत नहीं है, संत वेश में कोई पाखण्डी है, जिसे यथार्थ ज्ञान कुछ भी नहीं है, केवल किताबों से पढ़कर सुना रहा है। संत तो सक्षम होता है, पर वो अक्षम है, संत आँखों देखी वाली बात करता है, वो किताबों वाली बात कर रहा है, संत यथार्थ में अमर-लोक से होकर आते हैं, उसने कभी अमर-लोक सपने में भी नहीं देखा है। यदि सपने में भी देखा होता तो जान जाता कि अपनी ताकत से नहीं देखा, कोई दिखा गया। यह पक्की बात है कि सपने में भी अमर-लोक नहीं देखा जा सकता है। फिर वहाँ पहुँचना तो बड़ी दूर की बात है। इसलिए जिसके पास भृंग मते वाली थ्युरी नहीं है, वो आपका बहुत बड़ा बैरी है, क्योंकि आपको धोखे में रखे हुए हैं। इस बात को अपने दिल में गहराई से उतार लेना कि वो आपका सर्वनाश करने पर तुला है, जो कह रहा है कि कुछ कमाई कर, कुछ साधना कर, तभी कुछ होगा। क्योंकि उस पाखण्डी को पता नहीं है कि—

ना कुछ किया ना करि सका, ना करने योग शरीर।

जो कुछ किया साहिब किया, भया कबीर कबीर ॥

जो कमाई करने को कह रहा है, इसका सीधा सा मतलब है कि वो कहना चाह रहा है कि उसने भी अपनी कमाई से ही सब कुछ हासिल किया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि वो कभी अमर-लोक गया ही नहीं है। उसका गुरु भी संत नहीं हो सकता है। यदि होता तो वो ऐसी बात नहीं करता। कहीं से भी उसका मत संत-मत नहीं है, कहीं से भी उसका मत भृंग-मत नहीं है। वो एक झूठा है, जो अपने साथ-साथ आपको भी भवसागर में डुबाने में लगा हुआ है। उसका मुद्दा केवल धन कमाना हो सकता है, आपकी मुक्ति नहीं।

दादू दयाल जी सहज मार्ग की बात करते हुए कह रहे हैं—

सतगुरु मिले तो पाइये, भक्ति मुक्ति भण्डार।

दादू सहजे देखिये, साहिब का दीदार ॥

सतगुरु काढ़े केस गहि, डूबत इहि संसार।

दादू नाव चढ़ाइ कर, कीया भवजल पार ॥

दादू उस गुरुदेव की, मैं बलिहारी जाऊँ।

जहाँ आसन अमर अलेख था, ले राखे उस ठाऊँ ॥

इसलिए ऐसे गुरुओं से बचो। अपने जीवन को ऐसे गुरुओं की भेंट न चढ़ाओ और संत-सद्गुरु की खोज करो, भृंग-मता वाले गुरु की खोज करो, क्योंकि—

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

I I I



काग पलट हंस कर देना।

ऐसा पुरुष नाम मैं दीना ॥

बाकी से अलग है हमारी भक्ति

हमारा विरोध होना स्वाभाविक है, क्योंकि हमारी भक्ति बाकियों से अलग है। अगर हम भक्ति-क्षेत्र पर नज़र डालें तो दो धाराएँ दिखाई देती हैं—सगुण और निर्गुण। विरोध तो खुद सभी धर्मों के बीच है। इस्लाम के अंदर भी है। शिया और सुन्नी की आपस में पटती नहीं है। हिंदुओं में भी सनातनी और आर्यसमाजियों की विचारधारा में विरोध है। जैनियों में भी श्वेताम्बर और पीताम्बर एक दूसरे के विरोधी हैं। ऐसे ही अकालियों में भी है, ईसाइयों में भी है। समय-समय पर आपस में युद्धें भी होती रही हैं।

मनुष्य ने जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर क्रूर व्यवहार किये हैं। वर्ल्ड वॉर-2 में नाज़ी यहूदियों को मार रहे थे और यह वर्ल्ड वॉर एक गाँव से शुरू हुई। आप मानना, एक व्यक्ति की विचारधारा से शुरू होती है। यहूदियों पर बड़ा जुल्म किया गया, नाज़ियों की हुकूमत थी। आप मत सोचना कि खत्म हो गया है युद्ध। आज हम विश्व युद्ध के माहौल में जी रहे हैं।

युद्ध का केंद्र ही धर्म-स्थान हैं। नाज़ी कहते हैं कि क्राइस्ट के हत्यारे यहूदी हैं। वो मानते हैं कि हमारे भगवान के हत्यारे यहूदी हैं।

लोग सोचते हैं कि हिटलर ने 3 लाख लोगों को गैस चेंबर में मारा था। नहीं, कइयों को भूख से भी मारा था। पूरी-पूरी बस्तियों को उसके आदमियों ने घेरा, बाहर नहीं निकलने दिया, लोग भूख से तड़प-तड़पकर मर गये।

मैं मान रहा हूँ कि वर्तमान में विश्व युद्ध का कारण भी धर्म है। मदरसों में बगावत हो रही है, पर मुशर्रफ नहीं होने दे रहा है। वो खड़ा है। जैसे हमारे यहाँ आर. एस. एस. है, ऐसे ही पाकिस्तान में मदरसों की शिक्षा है। किसी ने नहीं सोचा था कि आगे मदरसे पाकिस्तान का ही विरोध करेंगे। उस गहराई में कोई नहीं गया। जैसे अल्ट्रासाउण्ड करने

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरू सत्य धर्मदासा ॥

33

वाले का नज़रिया था कि माँ के पेट के अंदर पल रहे बच्चों की जाँच की जा सके, यदि कोई रोग है तो दूर किया जा सके। पर वो भ्रूण हत्या की तरफ नहीं सोच पाया था। जिसने बल्ब का सृजन किया, वो रो रहा होगा। क्योंकि अब वैज्ञानिकों को पता चला है कि यह तो वातावरण को दूषित कर रहा है, बड़ा ही हानिकारक है, ग्लोबल वार्मिंग में इसका योगदान है। पहले कितनी खुशियाँ मनाई थीं कि अँधकार मिट गया, पर यह नहीं सोचा था कि यह तो गहरे अँधकार की तरफ ले चलेगा। यह तो खतरनाक हो रहा है।

इस तरह मानव धर्माधता के साए में जी रहा है। जब मुसलमान देखता है कि इतने हिंदू मर गये तो बड़ा खुश होता है, जब हिंदू देखता है कि इतने मुसलमान मर गये तो वो भी बड़ा खुश होता है। अपना दायरा बढ़ाओ। यह सब कुदरत ने नहीं बनाया। प्रकृति का विधान तो सबके लिए बराबर है।

हर धर्म में कट्टरवादिता है। यह एक धर्म की समस्या नहीं है। यह कट्टरवादी तपका हर धर्म में पनपता है और मानव को पीड़ा देता है। पर इन्होंने ऊपर से धर्म का चोला पहना है, बड़ा खतरनाक है। आदमी धर्म का आवरण पहनने वालों से सतर्क नहीं है। एक ने अपनी गाड़ी के पीछे लिखा था कि '*अपनों से बचाना*।' यानी वो कहना चाह रहा था कि हे प्रभु! अपने दुश्मनों से तो निपट लूँगा, सावधान हूँ, पर अपना तो कहीं भी चोट पहुँचा सकता है। ये हालात हर जगह होते हैं। इस धरती को कुदरत और ईश्वर की तरफ से दुख नहीं है, इस धरती को नरक बनाने वाला बंदा है। जब बाबरी मस्जिद गिरी तो पहले लड़ाई भोपाल से शुरू हुई। बड़ा कत्लेआम हुआ। साहिब ने इसी पर चोट की।

हिंदू कहे राम राम, मुसलमान रहमाना।

आपस में दोउ लड़े मरत हैं, मरम कोई न जाना ॥

जब भी कलयुग आता है तो धर्मक्षेत्र पर दुष्ट लोगों का अधिकार हो जाता है। शुरुआत यहीं से होती है। इस समय धार्मिक स्थानों पर क्रूर

तपका निवास कर रहा है। इस विश्व में वर्तमान में भक्ति की दो विचारधाराएँ हैं। बुल्लेशाह कितनी जोरदार बात कह रहे हैं— **ठाकुरद्वारे ठग हैं बसदे...**। क्योंकि वो सच में संत थे, किसी का पक्ष नहीं लिया, एकतरफा वाणी नहीं है। साहिब ने भी कहा— **संतो पाण्डे निपट कसाई**। ये वाणियाँ बड़ी प्लानिंग से पाखण्ड पर हमला करने के लिए संतों ने कही हैं। ज्ञान की तलवार से हमला किया है, विरोध जताया कि गलत हो रहा है यह सब।

साहिब का कोई आश्रम नहीं था, नानक देव का कोई आश्रम नहीं था, कोई किला नहीं बनाया, घूम-फिरकर संदेश देते थे। साहिब ने 52 लाख लोगों को नाम दिया उस समय। इस समय भी 52 लाख लोग किसी पंथ में नहीं होंगे। जो 2 करोड़ बोल रहे हैं, वो झूठ बोल रहे हैं। यह बड़ी संख्या होती है। हम रिजिस्ट्री कर रहे हैं, उतना ही बोल रहे हैं, जितनो को नाम दिया। कुछ हमारे लोग कहते हैं कि 5 लाख हैं, मैं कहता हूँ कि यह तो झूठ है, कैसे कह रहे हो, जिसको नाम दिया, उसका नाम है। 3 लाख के करीब को अभी दिया है। वो कहने लगा कि बच्चे भी तो हमारे ही हैं। तो कहने का भाव है कि झूठ क्यों बोलना। यदि 103 आश्रम हैं तो उतने ही हैं, एक हजार क्यों बोलूँ? मैं तो गिना भी दूँगा। 70 केवल जम्मू में हैं, 18 उत्तर प्रदेश में हैं, 5 मध्य प्रदेश में हैं, 5 पंजाब में हैं, 2 हिमाचल में, एक दिल्ली में, एक राजस्थान में और एक उत्तराखण्ड में।

कहीं भी झूठ न हो, पीवर सच हो। 19 का 20 भी न हो। तो वो लोग झूठ बोल रहे हैं। साहिब का कोई भी आश्रम नहीं था। न रेलगाड़ी थी, न हवाई जहाज, कितनी मेहनत की होगी उस दाढ़ी वाले ने! कितनी मुसीबत थी तब! अब तो कहीं भी कुछ हो तो लोग इकट्ठा हो जाते हैं। उन्हें 52 बार फाँसी दी गयी, इतनी यात्नाएँ दी गयीं। उनका मुकाबला नहीं है। शेक तक़ी ने बड़ी सज़ा दी। राजा सिकंदर नहीं देना चाहता था। राजा जानता था कि बेकसूर हैं, पर दी गई सज़ा राजा कुछ नहीं कर

सका। क्योंकि तकी के कोप का डर भी था।

सुकरात को जब सज़ा दी तो राजा ने कहा कि तुम क्या कह रहे हो? सुकरात ने बताया कि ऐसे-ऐसे यह सब अंधश्रद्धा है, हमारा परमात्मा इन चीज़ों से परे है। मैं अपने अनुभव की बात कह रहा हूँ। राजा समझ गया। पर फैसला करने वाले पाँच जज थे। राजा ने उनसे कहा कि आप विचार करो कि इसने कोई गलती भी नहीं की है। पर राजा को धर्मवेत्ताओं का डर था कि शाप न दे दें।

बिल्ली माँस खाए बिना नहीं रह सकती। फैसला करने वाले वो थे जिनके हितों को नुकसान पहुँच रहा था। सुकरात ने राजा को तर्क दिये, राजा ने बात समझी कि विद्वान है। वो चाहता था कि सज़ा न हो उसे। वो चाहता था कि ऐसे विद्वान उसके राज्य में रहें। पर धर्मवेत्ता चाहते थे कि मारना ही है। क्योंकि वो जानते थे कि आगे इसकी शिक्षा चलेगी तो हमारा बेड़ा खराब हो जायेगा। धर्मवेत्ता ही जज थे। वो अपने हितों के लिए पाखण्ड का कार्य कर रहे थे। राजा ने कहा कि वो निजी तौर पर कोई अपराधी भी नहीं है।

तो एक विकल्प रखा, कहा कि मौत की सज़ा माफ कर देंगे, पर आपको एथेंस छोड़कर जाना होगा। सुकरात ने कहा कि यदि मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो क्या मैं कभी न मरूँगा? कहा-मरना तो होगा ही। सुकरात ने कहा कि फिर मैं भगौड़ा होकर क्यों मरूँ?

मुझे भी बहुत डराया गया, कहा कि अण्डरग्राउण्ड हो जाओ। लिख भी दिया कि राँजड़ी वाला अण्डरग्राउण्ड हो गया है। यानी भाग गया है। देखा, पब्लिक को कैसे भ्रमित किया। बड़ी अफ़वाह फैली थी। मेरी याददाश्त बड़ी तेज़ है। भूतकाल का सब याद है, भविष्य का भी सब दिख रहा है। **मैंने सोचा कि कुछ भी परिणाम हो, भागूँगा नहीं। फाँसी भी चढ़ा देते तो ख़त्म नहीं होता, पर यदि भाग जाता तो ख़त्म हो जाता।**

पाँच हज़ार लोग हमला करने आए, पर मैंने सोचा कि मौत

मंजूर है, भागना मंजूर नहीं। सुकरात ने भी यही कहा कि ना तो मैं माफ़ी माँग रहा हूँ, न भाग रहा हूँ। अपराध नहीं किया है तो क्यों भागूँ? जब बच्चे को भी बिना वज़ह मारो तो मंजूर नहीं करेगा, कहेगा कि गलती तो बताओ।

तो सुकरात को कहा कि एथेंस में भी रह ले, पर जो तू कह रहा है, यह मत कहना। सुकरात ने कहा कि यह तो मैंने कहना ही है, समाज को रोशनी में लाना है, सही दिशा देनी है।

मुझे कोई कहे कि परम-पुरुष की भक्ति की बात न करो, तो कैसा है! मैंने तो जीवों को सत्य-भक्ति में लगाना ही है, काल की भक्ति से सतर्क करना ही है, पाखण्डियों से बचाना ही है। सुकरात ने भी यह कहा कि यह सब अंधश्रद्धा है। वो नहीं मरा। साहिब भी नहीं मरे। कहा-मार दो। यदि उसे फाँसी न लगी होती तो उसे कोई भी नहीं जानना था। रावण का नामोनिशान मिट जाना था, यदि उसने सीता को लौटा दिया होता तो। राम की बढ़ाई में रावण का योग अधिक है। नींव ही रावण है।

आपसे दो आदमी घृणा करते हैं तो आप परेशान हो जाते हैं, टेंशन में आ जाते हैं। महापुरुष को देखो, पूरी दुनिया निंदा करती है, पर वो मस्त घूमता है। यदि कोई कह रहा है कि आप गलत हैं तो क्यों परेशान हो रहे हैं! कोई हजार तर्क दे तो भी मैं मानता हूँ कि फौजी को अक्ल कम होती है। फिर आप कहेंगे कि आपको भी कम है। मैंने फौज में रहकर फौज का पूरा रंग अपने पर नहीं चढ़ने दिया। फिर आप कहेंगे कि आपने दिल से, जी-जान से फौज की नौकरी नहीं की। नहीं, मैंने उन पहलुओं को कभी टच नहीं किया, जो अक्ल कम करें। कमाण्डर चाहता है कि अक्ल कम हो। यदि अक्ल हो तो कई सवाल करेगा। अंग्रेज़ों ने फार्मूला निकाला कि जोर-जोर से पाँव नीचे पटकते रहो। इससे भेजा हिल जाता है। वहाँ अक्ल इस्तेमाल नहीं करने देते हैं। बाप भी ऐसा बेटे को नहीं बोलता है, कहते हैं कि बोलना नहीं है।

एक पण्डित था, कमाण्डर ने उससे पूछा कि अब तुम रिटायर हो रहे

हो, वहाँ जाकर क्या करोगे? कहा कि वहाँ जाकर अब मैं अक्ल का इस्तेमाल करूँगा। कमाण्डर ने कहा—तो क्या इतनी देर फौज में बिना अक्ल के काम कर रहे थे। पण्डित ने कहा कि यहाँ कोई अक्ल का इस्तेमाल करने कहाँ देता है। कमाण्डर ने कहा कि वो कैसे। पण्डित जी ने कहा कि मैं गाड़ी चलाता था। पहले भी मैं अच्छा ड्राइवर था। जब मैं फौज की ट्रेनिंग में था तो मुझे मिट्टी लाने भेजा गया। फौज का ड्राइवर हवालदार था, उसने गाड़ी फँसा दी, निकल नहीं रही थी। मैंने कहा कि मुझे दो, मैं निकालता हूँ। मैं जानता था कि यह ठीक नहीं चला रहा है। वो मुझे तमाचा मारा, कहा कि अक्ल लड़ा रहे हो, देख नहीं रहे कंधे पर, यह ऐसे ही नहीं है। यानी वहाँ अक्ल स्टारों से मानी जाती है, दिमाग से नहीं। तो कहा कि देख नहीं रहे हो 3 स्टार। उसके बाद मैंने जान लिया कि यहाँ अक्ल लगाना बेवकूफी है। ऐसे में मेरी अक्ल सीज़ हो गयी, क्योंकि कभी इस्तेमाल नहीं की। अब जाकर इस दिमाग की परतें खोलूँगा।

मैं दबाव में नहीं आया। अक्ल का इस्तेमाल किया। एक कमाण्डर था, वो ट्रेनिंग दे रहा था। मैं धीरे-धीरे पाँव मार रहा था तो वो मेरे पास आया, कहा—ओ लड़के, तुम धीरे पाँव क्यों मार रहे हो? मैंने कहा कि यह क्यों करवा रहे हो? कहा कि सॅल्यूट मारने की ट्रेनिंग देनी है। मैंने कहा कि मैं तुझसे अच्छी सॅल्यूट मारकर दिखा दूँगा। ऐसे ही आधा घण्टा बेकार में यह सब करवा रहे हो। मैं कोई गुण्डा नहीं था, पर बड़े-2 कमाण्डर भी झिझकते थे। मैंने अक्ल को सीज़िंग वाला मामला नहीं अपनाया, आधी ब्यालियन को अपना चेला बनाया। बड़ी दिक्कतें भी आईं।

एक बड़े ऑफिसर ने कह दिया कि वो लड़कों को बिगाड़ रहा है। मैं शाम को उसके बंगले में चला गया, कहा कि आपने लड़कों को ऐसा क्यों कहा? वो कहा कि एक फौजी को खूँखार होना चाहिए, मीट नहीं खाने देते हो, मना कर रखा है। मैंने उसकी नानी याद दिला दी, ऐसे-2 तर्क दिये।

अगर वकील होना था तो किसी वकील को बोलने नहीं देना था अपने आगे। यदि जज होना था तो धड़ाम से फैसला करना था। तो मैंने उस ऑफिसर से कहा कि आपको पता है कि मेरे नामी लड़के कैसे हैं और बाकी कैसे हैं। बाकी वेश्याओं के पास भी जाते हैं, पर मेरे लड़के नहीं जाते हैं। फौज में तो यह जुर्म है। आपको ख़बर ही नहीं है। फिर बाकी लड़के ब्लू फिल्म देखते हैं चुपके से, पर मेरे नामी नहीं देख रहे हैं। आपको पता ही नहीं है। यह भी तो फौज में वर्जित है। आपको खुद भी अपने पर कण्ट्रोल नहीं है। पर मेरे नामी का कण्ट्रोल तो देखो।

मैंने उसे एक उदाहरण दिया, कहा कि राणा सांगा ने बाबर के छक्के छुड़ा दिये थे। वो तो एक छोटा राजा था, पर बाबर पूरे भारत का राजा था। देश की सेना बहुत है। राणासांगा ने उसे भगा दिया। बाबर को हरा दिया। हिंदोस्तान का राजा हार गया। क्यों? क्योंकि उसके सिपाही शराब का सेवन करते थे। फिर बाबर ने सबसे प्रतिज्ञा करवाई कि आज से कोई भी सिपाही शराब नहीं पियेगा। उसके बाद बाबर की फौज कभी नहीं हारी।

तो मैंने कहा कि हो सकता है कि मेरी अक्ल तुमसे कहीं अधिक हो, पर मेरी मजबूरी है कि तुझे सलाम कर रहा हूँ।

तो अक्ल कम करने वाली कोई बात मैंने नहीं की। एक ने कहा कि आप तो बादशाह की तरह रहे। आपने किसी की चलने नहीं दी। पर मैं कोई हठी भी नहीं हूँ। 'जैसे आए खसम की वाणी, तैसे बजाऊँ सुनो ओ लालो ॥' **मुझे 52 बार चार्जशीट पर मार्क भी किया गया। वहाँ कोई गवाही भी नहीं चाहिए, सज़ा होनी ही है। मैं तर्क देता था, कहता था कि पक्षपात किया। बाद में वो डर गये, कहा कि इसका क्या बिगड़ना है, इसके आगे नहीं बोलना है, चुप ही रहना है।**

देखो, कैसा संयोग है, पलाँवाला में एक कर्नल है—विश्वनाथ सिंह चौहान। उसने 71 की लड़ाई में बड़ा काम किया। उसे कृष्ण राव बड़ा मानते थे, उसके नाम के आगे ही राव लगा दिया। उसकी लड़की बी. ए.

के पेपर दे रही थी। कर्नल साहब का लड़का नहीं था। उनकी पत्नी आई। वो राजपूत थे और पत्नी गोरखा। लव मेरिज़ की थी। किसी ने मेरे लिए बताया कि ये महात्मा हैं, तो मेरे पास आए। मेरे पाँव छुए, कहा कि मैंने आपके बारे में सुना है, मुझे बच्चा नहीं है। मैंने कहा कि आपकी लड़की तो बी. ए. के पेपर दे रही है। तो कहा कि पुत्र नहीं है। आपकी कृपा हो जाए तो सब कुछ हो सकता है। उनकी पत्नी कोई 37-38 साल की होगी तब। 40 के करीब नारी हो जाए तो बच्चे को जन्म देना आसान नहीं होता है। 20 साल में कोई नहीं हुआ था। मुझे विचार आया कि यह बड़े भरोसे के साथ आई है, इसने पाँव भी छुआ है। यह कर्नल की बीबी होकर सिपाही के पाँव छुआ है। तो साहिब की कृपा से उन्हें पुत्र हुआ।

कुछ समय पहले मुझे मेरी ब्यालियन ने बुलाया, कहा कि आशीर्वाद देने आओ। मैं गया तो उसका लड़का भी कर्नल है। वो पाँव छुआ। एक पुराने आदमी ने मुझे बताया कि यह फलाने साहब का बेटा है। मैंने कहा कि मुझे जानते हो? कहने लगा—हाँ, माँ ने बताया था आपके लिए। उसका नाम आर. के. चौहान है। उसने दादे परदादे वाला नाम ही रखा है।

...तो मैं कह रहा था कि जब वर्तमान में सभी धर्मों की बागडोर गलत हाथों में आ गयी है। कोई त्रिशूलों से, कोई डण्डों से, कोई बंदूकों से प्रशिक्षण दे रहा है। कुछ गलत लोग भक्ति-क्षेत्र पर अधिकार कर लेते हैं तो ऐसा होता है। **परम्परा इतनी गंदी हो गयी है कि नाम कोई दे रहा है और कह रहे हैं कि गुरु किसी और को मानना। गुरु तो वही है, जिसने नाम दिया। मैंने अभी तक किसी को भी नाम देने का हक नहीं दिया है। दो वज़ह हैं। एक तो यह नाम एक पूर्ण गुरु ही दे सकता है। दूसरा अन्य कोई होगा तो वो अपनी बात भी बीच में मिला देगा, निरंजन की बात भी कर देगा। मैं योजना के साथ भक्ति को चला रहा हूँ। किसी से कुछ माँग नहीं रहा हूँ। सिद्धांत रखा कि श्रद्धा है तो रख दो, तुम्हारी इच्छा हो कि परमार्थ में लगे तो रखो। एक ने मुझे करोड़ रुपया दिया तो मैंने कहा कि सीना नहीं फुलाना**

कि तुमने दिया, मेरा एहसान मानना कि मैंने तुमसे यह पैसा लिया। इसे मैं ठीक जगह लगाऊँगा, पर ऐसा भी नहीं है कि बदतमीजी से बात करूँ। पर होल्ड रख रहा हूँ, सब काम खुद कर रहा हूँ। पर कभी नहीं कह रहा हूँ कि पैसा दो। फिर आपकी भक्ति गोल हो जायेगी, आप मालिक रूप को कैसे देखेंगे! चेले से अधिक गुरु को सावधान रहना है। हम सावधान हैं आपसे।

तो जितने भी धर्म हैं वर्तमान में दो धाराएँ हैं—सगुण और निर्गुण। मेरा विरोध होगा, होने दो, यह स्वाभाविक है, इसकी चिन्ता न करो। एक ने कहा कि आप निरंकारी भी नहीं हैं, राधा स्वामी भी नहीं हैं, जैनी भी नहीं हैं, मुसलमान भी नहीं हैं, फिर मामला क्या है? फिर क्या हैं? मैंने कहा कि यह फ़िलासफ़ी समझने में बड़ा समय लग जायेगा। किसी को इस्लाम समझाना हो तो कुरान आगे रख दो, समझा जायेगा। हिंदू धर्म समझाना हो तो बता दिया जाता है कि त्रिदेव हैं। ईसाई धर्म समझाना हो तो क्राइस्ट का संदेश दे दो। किसी को राधा स्वामी बताना हो तो भी बता दिया जाता है कि यह-2 है, फलाने ने यूँ कहा। पर किसी को साहिब-बंदगी समझाना हो तो पसीना छूट जाता है। इसलिए आप परेशान हो जाते हैं। मैंने समझा दिया है आपको। आपके बस की बात नहीं है।

पहले जितने भी आए, काल की भक्ति कही। हम किसी ऋषि-मुनियों के उदाहरण नहीं दे रहे हैं। क्योंकि उन्होंने तो काल की बात की है। हमारी फ़िलासफ़ी तो ऐसी है कि एक छोटा सा लड़का गाता फिरता है— ‘मुझे अपने ही रंग में रँगदा फिरे, साहिब अपने ही रंग में रँगदा फिरे ॥’ जो कह रहे हैं कि किसी को नहीं मानता, ठीक कह रहे हैं। हम मीराबाई की फ़िलासफ़ी पर नहीं हैं। क्योंकि उन्होंने तो पहले सगुण भक्ति की है, सगुण पद भी गाए हैं। बाद में जब रविदास जी से दीक्षा ली तो सत्य-भक्ति में आई। तो पहले वाला कोई पढ़ेगा तो कहेगा कि एक ही बात है। हम अंतर ठीक से समझायेंगे। पलटू साहिब भी पहले निरंजन के दायरे में घूम रहे थे। नानक देव स्वयं

ओंकार की उपासना कर रहे थे। बाद में साहिब से नाम लिया। हम एक को बाँयकाट नहीं कर रहे हैं। उसकी वाणी पर चलो, यह नहीं कह रहे। जो लोग कह रहे हैं कि किसी को नहीं मानता, वो ठीक ही कह रहे हैं। कबीर की फ़िलासफ़ी पर चलना, यह भी नहीं कह रहा हूँ। समय के साथ लोगों ने उनकी वाणी को इतना तोड़-मरोड़ दिया है कि कुछ कहते नहीं बनता। भ्रमित हो जाता है इंसान। सबने अपनी बात बीच में मिला दी है। अपनी सुविधाओं के अनुसार लिख दिया है। इसलिए मैं जो आपके पास पहुँचा रहा हूँ, वो शुद्ध है।

एक माई ने कहा कि साहिब को मेरे लिए कहना कि मेरा कष्ट दूर करे। मैं पूछना चाहता हूँ कि वो फाल्ट में थी कि नहीं। एक ने कहा कि जब ध्यान में बैठती हूँ तो कभी आपके गुरु जी आ जाते हैं, कभी कबीर साहिब आ जाते हैं। मैंने कहा—माई, तू तीन किश्तियों पर क्यों खड़ी है!

आपने मेरे गुरु से क्या लेना है! आपको कबीर साहिब से क्या लेना है! आपको तो मुझसे काम होना चाहिए, केवल मुझसे। ‘मुझे है काम सतगुरु से....’ वो कबीर साहिब अपनी शरण नहीं बता गया, वो सारा भार गुरु को सौंप गया। कहा—

गुरु मानुष कर मानते, चरणामृत को पान।

ते नर नरकैं जायेंगे, जन्म जन्म होय खान ॥

मेरे गुरु देव मेरे गुरुभाइयों को बोल गये कि इन्हें ही गुरु मानना मेरे जाने के बाद, क्योंकि मैं अब अपने बिंदू पर जा रहा हूँ। तो हम सद्गुरु फिलासफी पर चल रहे हैं।

गुरु आज्ञा ले आवही, गुरु आज्ञा ले जाहीं।

कहैं कबीर ता दास को, तीन लोक डर नाहीं ॥

हम कह क्या रहे हैं, यह समझो। गुरु ताक़त देता है, उसी से पार हो सकते हैं। मेरी वाणी में कमाई की बात नहीं मिलेगी। सेवा करो, यह भी नहीं कह रहा हूँ।

जैसे किसान ने बीज बोया तो बहुत बड़ा काम हो गया। जमीन को गोड़ित किया, सींचा। फिर समय समय पर खाद भी डालनी है, सींचते भी रहना है। इस तरह आगे भी देखना है। मैंने जो आपको देना है, दे चुका हूँ। अब तो गहन सत्संग से उलझनों से परे कर रहा हूँ। बस, एक व्यक्तित्व कबीर साहिब को ओवरटेक नहीं कर रहा हूँ। बाकी किसी की फ़िलासफ़ी पर नहीं चल रहे हैं। मगहर में किताबें मिल रही थीं तो मैंने कहा कि नहीं ख़रीदना। पर कुछ ने मेरे मना करने पर भी चुपके से ख़रीद लीं। उसमें तो गलत बताया गया है। बाद में लोगों ने अपने विचार उसमें मिला दिये हैं। उसमें बताया गया है कि कबीर ने आत्मा को ही सब कुछ कहा है। किसी सत्लोक की बात नहीं है।

तो मैं आपको शुद्ध चीज़ दे रहा हूँ। माँ ने बेटे को जन्म दिया तो बाद में खिलाया, पढ़ाया, लाड़-प्यार देकर बड़ा किया। नाम-दान के समय मेरा काम ख़त्म नहीं हो गया। माँ को परवरिश करनी होती है। तो मैं इसलिए दौड़ता घूम रहा हूँ। रोज़ के 5-5 सत्संग दे रहा हूँ। इसलिए हमारी फ़िलासफ़ी है—**सद्गुरु भक्ति।**

जो सत्लोक की बात कह रहे हैं, उनमें भी भ्रान्तियाँ हैं। वो तो पढ़कर बोल रहे हैं। कोई कहे कि जम्मू शहर समुद्र के बीच टापू पर है तो जम्मू में रहने वाले हैं, उनको कैसा लगेगा! ऐसे ही मैं जान जाता हूँ कि ये खुद नहीं गये हैं। मैं तो स्वर्ग जाना हो तो चला जाता हूँ, ब्रह्माण्ड में घूमता रहता हूँ। पर सच यह है कि मैं अपने से बाहर नहीं निकलना चाहता हूँ।

तो दूसरा हमारा जो मत है, वो है भृंग-मता। यह क्या है? भाई, बाकी जो जीव हैं, वो पेट में रखकर जन्म देते हैं बच्चे को। पर भृंगा यह नहीं कर रहा है। वो पल भर में अपने समान कर रहा है। इस तरह हम भी आपको अपनी तरह करके चल रहे हैं। इसलिए जितने भी उदाहरण दिये, साहिब की वाणी से। बाकी की फ़िलासफ़ी में दोष है, धोखा है, छल है।

धर्मदास जी भी पहले ठाकुरपूजा करते थे। साहिब से पूछा कि एक ही परमात्मा हैं, ठाकुर जी। साहिब जी धर्मदास जी को बड़े तरीके से लाइन पर लाए, कहा—

**तीन लोक जो काल सतावे। ताको सब जग ध्यान लगावे ॥
निराकार जेहि वेद बखानै। सोई काल कोइ मरम न जानै ॥
त्रिगुण जाल यह जग फँदाना। गहै न अविचल पुरुष पुरान ॥
जाकर ई जग भक्ति कराई। अंतकाल जिव सो धरि खाई ॥**

कहा कि काल की भक्ति कर रहे हैं। जिसकी सारा संसार भगवान समझ कर पूजा कर रहा है, वही अंतकाल में जीवों को खा जाता है। उसी निरंजन के त्रिदेव पुत्र हैं।

**सबै जीव सतपुरुष के आहीं। यम दै धोखा फँदाइस ताहीं ॥
प्रथमहि भये असुर यमराई। बहुत कष्ट जीवन कहँ लाई ॥
दूसरि कला काल पुनि धारा। धरि अवतार असुर सँघारा ॥
जीवन बहु विधि कीन्ह पुकारा। रक्षा करन बहु करै पुकारा ॥
प्रभुता देखि देखि कीन्ह विश्वासा। अंतकाल पुनि करै निरासा ॥**

कहा कि सभी परम-पुरुष की आत्माएँ हैं, पर निरंजन ने धोखे से उन्हें फँसाकर रखा है। पहले तो वो खुद ही राक्षस बनता है, जीवों को सताता है, फिर खुद ही अवतार धारण कर राक्षसों को खा जाता है। जीव लीला देखकर सोचते हैं कि यही हमारा रक्षक है, पर अंतकाल में यही जीवों को निराश करता है।

साहिब ने कोई भी बात फिजुल में नहीं कही है। तर्क दिये हैं।

कह रहे हैं—

**द्वापर देखहु कृष्ण की रीती। धर्मनि परिखहु नीति अनीति ॥
अर्जुन कहँ तिन्ह दया दृढ़ावा। दया दृढ़ाय पुनि घात करावा ॥
गीता पाठ कै अर्थ बतलावा। पुनि पाछे बहु पाप लगावा ॥
बँधु घातकर दोष लगावा। पाण्डो कहँ बहु काल सतावा ॥**

**भेजि हिमालय तेहि गलाये । छल अनेक कीन्ह यमराये ॥
बहु गंजन जीवन कहँ दीन्हा । ताको कहे मुक्ति हरि दीन्हा ॥**

द्वापर में देख लो, कृष्ण जी ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, फिर घात करवाया ।

साहिब ने धर्मदास से कहा कि जिनकी भक्ति कर रहे हो, उनमें दोष है । मुझे बताना पड़ेगा, मेरी मजबूरी है । लोगों ने निंदा समझ लिया । बताना पड़ेगा कि यह काल के दायरे की भक्ति है, इससे ऊपर उठ ।

तो फिर बाद में कहा कि तू पाप कर गया है । अर्जुन चौंका, कहा कि आपने ही तो कहा था । उसने तर्क दिया । पर कृष्ण जी ने कहा—नहीं, वो राजनीति थी, पर तूने बंधुओं को मारा है, धर्म के अनुसार यह पाप है ।

यदि मैं मोहनलाल को कहूँ कि फलाने को मार । वो कहे कि यह तो पाप है, कैसे करूँ ! मैं कहूँ कि मैं आज्ञा दे रहा हूँ, मार । वो मारे तो बाद में मैं कहूँ कि तूने तो पाप कर दिया तो यह कैसा है ! यह तो विरोधी वाणी हुई । मेरे शब्द विरोध में नहीं जाते हैं ।

तो फिर यज्ञ करवाया । लेकिन तब भी पिण्डा नहीं छूटा पाण्डवों का । फिर कहा कि हिमालय में जाकर प्रायश्चित्त करो । इतनी सदी में गलना पड़ा । फिर भी नहीं छूटा पिण्डा । फिर नरक में जाना पड़ा ।

तो यह सब निंदा है क्या ! नहीं, यह तो सभी को पता है । बस, साहिब तो तर्क देकर समझा रहे हैं कि मुक्ति के लिए कहीं आगे बढ़ना होगा । ‘बहु गंजन जीवन कहँ कीन्हा । ताको कहे मुक्ति हरि दीन्हा ॥’ यह कौन सी मुक्ति थी !

तो साहिब धर्मदास को आगे समझाते हुए कह रहे हैं—

**बलि ते सो छल कीन्ह बहूता । पुण्य नसाय कीन्ह अजगूता ॥
छल बुद्धि दीन्हे ताहिं पताला । कोई न लखै प्रपंची काला ॥
लघु सरूप होय प्रथम देखाये । पृथिवी लीन्ह पुनि स्वस्ति कराये ॥
स्वस्ति कराइ तबै प्रगटाना । दीर्घ रूप देखि बलि भय माना ॥**

**तीनि परग तीनौ पुर भयऊ । आधा पाँव नृप दान न दियऊ ॥
देहु पुराय नृप आधा पाऊँ । तो नहिं तव पुण्य प्रभाव नसाऊँ ॥
तेहि कारण पातालहिं दीन्हा । अन्धा जीव जल प्रगट न चीन्हा ॥
तब लै पीठ नपाय तेहि दीन्हा । हरि ले ताहि पतालै कीन्हा ॥
यहि चर जीव देखि नहिं चीन्हा । कहै मुक्ति हरि हमको दीन्हा ॥**

बलि की क्या गलती थी! साहिब तर्क से समझा रहे हैं, मुक्ति के विषय में सोचने को कह रहे हैं। आखिर हम सब कौन सी मुक्त चाह रहे हैं, यह समझाने का प्रयास कर रहे हैं। बाकी उनकी किसी से दुश्मनी नहीं थी। तो कहा कि पहले छोटा रूप धारण कर बलि से साढ़े तीन पग धरती माँग ली, फिर बाद में अपना रूप बड़ा करके तीन-लोक तीन पग में नाप लिये और आधा पाँव रह गया। आधा पाँव बलि राजा दान नहीं दे सका तो उसके परिणाम स्वरूप उसे पाताल भेज दिया गया। साहिब कह रहे हैं कि यह अंधा मनुष्य समझता नहीं है। स्पष्ट देखकर भी समझता नहीं है। यह सब होने के बाद कहता है कि हरि ने मुक्ति दी। पाताल में भेज दिया गया। क्या यह थी मुक्ति?

लोग तो साहिब की वाणी को तोड़ मरोड़ कर कह रहे हैं—

तू राम सुमर पछतायेगा ।

हम कह रहे हैं—

तू नाम सुमर पछतायेगा ।

हम आपको शुद्ध चीज़ दे रहे हैं। हम घी खिला रहे हैं और वो भी शुद्ध दे रहे हैं, बिना लस्सी वाला दे रहे हैं। बाकी से अलग भक्ति दे रहे हैं। बाकी काल की भक्ति दे रहे हैं, हम परम-पुरुष की भक्ति दे रहे हैं।

I I I



गुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया

इस तन को आत्मदेव ने अपना समझा। इसकी एक विशेषता है कि जिस भी देही में जाती है, उसे ही नित्य समझती है, उसे ही अपना समझती है। अज्ञान के कारण यह अपने को शरीर मान रही है। अगर संसार के जीवों की तरफ दृष्टि डालें तो सभी भूले हुए हैं, सभी शारीरिक जीवन जी रहे हैं। गोस्वामी जी कह रहे हैं— ‘जबसे जीव भयो संसारी, छूटे न ग्रंथि न होय सुखारी ॥’ जबसे आत्मा ने अपने को शरीर माना, तबसे ही दुखों का प्रारंभ हुआ। क्यों माना? कुछ ऐसी ताकतें हैं, जो विवश कर रही हैं।

काया काल पसार है।

यदि शरीर के नियमों की तरफ देखें तो कहीं से भी समस्त आदतें आत्मा के अनुकूल नहीं दिख रही हैं। देही की आदतें कहीं से भी मिल नहीं रही हैं। जितने भी नियम हैं, काल के हैं। आत्मा का कर्म से किसी भी तरह से संबंध नहीं है। आत्मा को किसी कर्म से कुछ नहीं लेना है।

आज संसार में जितने भी लोग मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं, सभी काल का खेल है। गोस्वामी जी स्पष्ट कह रहे हैं—

जप तप व्रत यम नियम अपारा। श्रुति पुराण सद्ग्रंथन गावा ॥

संसार इन्हीं में उलझा है। मन अत्यन्त सूक्ष्म रूप में बैठ, जो भी चाहे, करवा रहा है। नाम की रोशनी के द्वारा ही हम इसे समझ सकते हैं।

अधिक से अधिक लोग निराकार की उपासना कर रहे हैं। जैसे वैज्ञानिक कह रहे हैं कि हरेक के ऊपर 450 टन हवा का दबाव है। अगर ऐसा न होता तो सभी कहीं-कहीं उड़ जाते। ऐसे ही मन का दबाव भी है। मन जो भी चाहता है, करवाता है।

पाँच तत्त्व गुण तीन निरमाया। तीन लोक काल निरमाया।

इसलिए आज जितने भी धर्म हैं, देखने पर आप पायेंगे कि सभी निराकार की बात कर रहे हैं। सभी पढ़ी-लिखी बातें कर रहे हैं। तभी कहा साहिब ने—

तेरा मेरा मनवा कैसे इक होई रे।

तू कहता कागज़ की लेखी, मैं कहता हूँ आँखिन देखी ॥...

जब भी संसार के लोगों को देख रहे हैं तो पढ़ी-सुनी बातें अधिक हो रही हैं। अंतर अनुभव की बात नहीं है। कुछ महात्मा मुझसे बात करते हैं, कहते हैं कि आप कड़वा बोल रहे हैं। जहाँ कहीं भी सत्य क्षति पहुँचाता है तो कड़वा लगता है, जहाँ लाभ देता है तो प्रिय लगता है। तो जितनी भी चीज़ें देख रहे हैं, पढ़ी, लिखी, सुनी हुई लगती हैं। इन्हीं के आधार पर सत्संग करते हैं। मैं उनसे साफ़ बात कहता हूँ कि जहाँ की बात कह रहे हो, वहाँ गये हो क्या? तो नहीं गये होते। जब भी ऐसी बात होती है तो दिल और दिमाग़ एक नहीं होते हैं, हिचक होती है। जब प्रत्यक्ष की बात करो तो दिल-दिमाग़ एक होते हैं।

जितने भी पीर-पैगंबर, मत-मतांतर भारत वर्ष में हैं, सभी काल की भक्ति कर रहे हैं। 16 बड़े पंथ भारत में, जिनकी संगत करोड़ों में है, सभी तीन-लोक की बात कर रहे हैं। कुछ **सचखण्ड** का ज़िक्र भी कर रहे हैं, पर उनका चिह्न भी निरंजन का है, उनके सिद्धांत भी निरंजन के हैं, उनका सुमिरन भी निरंजन का है। केवल फर्जी 'सच-खण्ड' रटे जा रहे हैं। पंच मुद्राओं में सभी घूम रहे हैं। ये कोशिकाओं से संबंध रखती हैं। कोई चाचरी में जा रहा है, कोई ज्योति का सुमिरन कर रहा है। इनसे सिद्धियाँ-शक्तियाँ अवश्य प्राप्त हो सकती हैं, पर काल के दायरे से पार नहीं हुआ जा सकता है। क्योंकि इनसे सेल जगते हैं। हम सुरति-शब्द अभ्यास नहीं बोल रहे हैं। कुछ अगोचरी से ध्यान कर रहे हैं, कहते हैं कि यही सब कुछ है। कुछ इसे ही सच्चा शब्द बोल रहे हैं। पर साहिब ने इसे सच्चा शब्द नहीं कहा। कुछ इसे आंतरिक नाम कह रहे हैं। पर नहीं, यह तो नाड़ियों की झंकार है। साहिब ने साफ़ कहा—

आँख न मूँदे कान न रूँधे, नहीं अनहद अरुझावे ।

सो सतगुरु मोहि भावे, जो आवागमन मिटावे ॥

तो जो सुरति शब्द अभ्यास कह रहे हैं, वो भी अटके हैं। हम सुरति योग की बात कह रहे हैं। सुरति को शब्द में लगा दिया, यही तो है सुरति शब्द अभ्यास। आवाज़ दो के बिना नहीं हो सकती है। साहिब वाणी में साफ़ कह रहे हैं— ‘सो तो शब्द विदेह।’ कुछ कह रहे हैं कि सत्लोक में धुनें हो रही हैं। यदि धुनें हो रही हैं तो वायु भी होगी वहाँ। पर वहाँ तो पंच तत्व का निशान भी नहीं है।

पवन न पानी, पुरुष न नारी । हद अनहद तहँ नाहिं विचारी ॥

इसलिए साहिब ने निःशब्द कहा।

कहैं कबीर धर्मदास से, यही निज भेद हमार ।

जो पावे निज नाम को, ले नहीं जग अवतार ॥

तो जितने भी 16 बड़े पंथ हैं, यह सब साहिब की नक़ल मात्र हैं, ये काल के हैं, इसका रहस्य केवल मैं जानता हूँ। जब साहिब मुत्यु लोक में आने लगे तो काल ने साहिब से कहा।

निरंजन

दयावंत तुम साहिब दाता । एतिक कृपा करो हो तात ॥

पुरुष शाप मो कहँ अस दीन्हा । लच्छ जीव नित ग्रासन कीन्हा ॥

जो जिव सकल लोक तुव जावे । कैसे छुधा सो मोरि बुझावे ॥

पुनि पुरुष मोपर दया कीन्हा । भौसागर कहाँ राज मुहि दीन्हा ॥

तुमहू कृपा मोपर करहू । माँगो सो वर मुहि उच्चरहू ॥

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं । तीनहु युग जीव थोरे जाहीं ॥

चौथा युग जब कलियुग आवे । तब तुव सरण जीव बहु जावे ॥

ऐसा वचन हार मुहिं दीजे । तब संसार गमन तुम कीजे ॥

निरंजन ने कहा कि आप दयालु हैं, मुझ पर कृपा करो। परम-पुरुष ने मुझे लाख जीव रोज़ खाने का शाप दिया है। यदि आप सभी

जीवों को अमर लोक ले जायेंगे तो मेरी भूख कैसे मिटेगी। फिर परम-पुरुष ने मुझे तीन-लोक के राज्य देकर कृपा की। अब आप भी मुझ पर कृपा करो और जो मैं माँगूँ, मुझे दो, सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में आप थोड़े जीवों का कल्याण करना और जब कलयुग आयेगा तो बहुत सारे जीव ले जाना। हार कर मुझे यह वचन दो और तब ही संसार में जाओ।

कबीर साहिब

हर काल परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख डारा ॥
विनती तोरि लीन्ह मैं जानी। मो कहँ ठगहि काल अभिमानी ॥
जस विनती तू मोसन कीन्ही। सो अब बकसि तोहि कहँ तीन्ही ॥
चौथा युग जब कलयुग आवे। तब हम आपन अंश पठावे ॥

साहिब ने कहा कि तूने अपना खूब जाल बिछाया है, तीन युग तक तूने जीवों को दुख ही दिया। मैंने तुम्हारी विनती मान ली, तूने मुझे ठग लिया है। तूने विनती की, इसलिए मैंने तुझे माफ़ किया, पर जब कलयुग आयेगा तो मैं अपने अंश भेजूँगा।

निरंजन

हे साहिब तुम पंथ चलाऊँ। जीव उबार लोक लै जाऊँ ॥
वंश छाप देखो जेहि हाथा। ताहि हंस हम नाउब माथा ॥
पुरुष अवाज लीन्ह मैं मानी। विनती एक करों तुहि ज्ञानी ॥
पंथ एक तुम आप चलाऊ। जीवन लै सत लोक पठाऊ ॥
बारह पंथ करों मैं साजा। नाम तुम्हार लै करों आवाजा ॥
द्वादश यम संसार पठैहों। नाम तुम्हार ले पंथ चलैहों ॥
मृतुअंधा इक दूत हमारा। सुक्रित ग्रह लैहै अवतारा ॥
प्रथम दूत मम प्रगटे जायी। पीछे अंस तुम्हारा आयी ॥
यहि विधि जीवन को भरमाऊँ। पुरुष नाम जीवन समझाऊँ ॥
द्वादश पंथ जीवन को ऐहैं। सो हमरे मुख आन समैहैं ॥
एतिक विनती करों बनाई। कीजे कृपा देउ बनसाई ॥

निरंजन ने कहा कि आप अपना पंथ चलाना और जीवों को अमर-लोक ले जाना। जिसके सिर पर आप हाथ रखेंगे, मैं उन्हें माथ नवाऊँगा। मैंने आपकी बात मान ली, पर मेरी भी एक विनती है। **आप अपना एक पंथ चलायेंगे तो मैं अपने 12 पंथ संसार में चलाऊँगा और तुम्हारा ही नाम लेकर चलाऊँगा। 12 यम संसार में भेजकर यह काम करूँगा। पहले मेरे अंश संसार में प्रगट होंगे, फिर तुम्हारा अंश आयेगा। ऐसे मैं जीवों को भटकाऊँगा। जो मेरे 12 पंथों में आ जायेंगे, वो मेरा ही ग्रास बनेंगे, पार नहीं हो पायेंगे। यह मेरी विनती मान लो।**

यानी जीवों को भ्रम में डालने के लिए निरंजन ने यह जाल बिछाया। सगुण-निर्गुण भक्तियों में उलझाया और वाणी कबीर साहिब की ली। आप देखते होंगे सगुण भक्ति वाला भी अपने प्रवचन शुरू करने से पहले साहिब का दोहा बोलता है, उन्हीं की वाणी से उदाहरण देकर सिद्ध करने का प्रयास करता है कि साहिब सगुण भक्त थे। निर्गुण वाला भी यही काम करता है। वो साहिब को निर्गुण भक्त सिद्ध करने का प्रयास करता है। यह सब निरंजन का खेल हो रहा है। इसलिए तो साहिब कह रहे हैं—

**भ्रम करि वेद कितेब बनाया। भ्रम करि द्वैताद्वैत बताया ॥
भ्रम करि कर्म धर्म ठहराया। भ्रम करि बड़ बानी कथि गाया ॥
भ्रम को धर्म सकल जग माहीं। सब जिव बले भ्रम की छाहीं ॥
भ्रम करिके षट दर्शन थापा। भ्रम करिके जिव लखै न आपा ॥
भ्रम करि ईश्वर दूर बताया। बिरही बने सकल जग खाया ॥
भ्रम करि इत उत ढूँढ़न लागे। भ्रम करि प्रेम भक्ति में पागे ॥
धोखे परा सकल संसारा। बिन सतगुरु भ्रम टरे न टारा ॥
सार शब्द सतगुरु को पावै। सब धोखा भ्रम दूरि बहावै ॥**

साहिब कह रहे हैं कि दुनिया को भ्रम में डालने के लिए ही वेद-कितेब बनाए गये, भ्रम में डालने को ही ईश्वर को द्वैत-अद्वैत बताया

गया। लोगों को भ्रम में डालने के लिए ही कर्म-धर्म आदि ठहराए गये। भ्रम में डालने के लिए ही कथावाचक पाठ करते हैं। भ्रम ही सारे संसार में फैला हुआ है। भ्रम में डालने के लिए ही छः दर्शन बने। इसी भ्रम में फँसकर जीव अपने को नहीं देख पा रहा है। भ्रम में डालने के लिए ही ईश्वर को कहीं दूर बताया गया, भ्रम में डालने के लिए ही उसे यहाँ-वहाँ तीर्थादि में ढूँढ़ने लगे। सारा संसार भ्रम में पड़ा है। सद्गुरु के बिना यह भ्रम किसी भी तरह से दूर नहीं किया जा सकता है। सद्गुरु से सार शब्द को पाकर ही सारे भ्रम को, सारे धोखे को दूर किया जा सकता है।

इस तरह 16 बड़े पंथ भी निरंजन के हैं और भी जितने सगुण-निर्गुण भक्ति के प्रचारक हैं, सब निरंजन के चेले हैं। साहिब ने कहा भी है—

**एकलक्ष अरु असी हजार। पीर पैगंबर को औतारा ॥
सो सब आहि निरंजन वंशा। तन धरि धरि निज पिता प्रशंसा ॥
दश औतार निरंजन केरे। राम कृष्ण सबमाहिं बडेरें ॥**

तो साहिब ने सच्चे नाम का भेद दिया। यह नाम करेगा क्या? क्या चीज़ है यह? यह पूर्ण गुरु देता है। जब नाम देता है तो तीन चीज़ कर देता है। पहला तो मन और आत्मा को अलग कर देता है। यह काम कोई अपनी क्रिया से, किसी योग से नहीं कर सकता है। करोड़ों युग की साधना से भी यह काम नहीं हो सकता है। करोड़ों युग कोई योग करता रहे तो भी यह काम नहीं हो पायेगा। तो दूसरा हृदय को प्रकाशित कर देता है। तभी विकारों का बोध होगा। तीसरा एक ताक़त को जगा देता है। पर साहिब कह रहे हैं—

नाम हमार जगत सब लहई। भेद हमार कोई न लहई ॥

साहिब एक और बात कह रहे हैं—

अब मैं नाम की युक्ति बताऊँ। तासे जीव अमर लोक ले जाऊँ ॥

कोई 71 नाम जपे जा रहा है, कोई 11 नाम जपे जा रहा है, पर साहिब कह रहे हैं कि हमारा नाम एक है।

ब्रह्मा विष्णु और शिव देवा । तिनहुँ न पायो नाम को भेवा ॥

कह रहे हैं कि नाम का भेद कोई नहीं पाया। आप कहेंगे कि साहिब यह कैसी बात बोल रहे हैं! गोस्वामी जी भी तो कह रहे हैं—

ब्रह्म राम ते नाम बड़, बरदायक वरदान ।

रामचरित्र सत कोटि में, लिया महेश यह जान ॥

सबसे पहले आपकी मूल सुरति को गुरु ने जगा दिया। वो जाग गया तो मन समझ आने लगा। जैसे पानी में गैसों नज़र नहीं आतीं, पर आग पर रखो तो दिखाई देने लग जाती हैं। ऐसे ही हुआ। 'कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया लखाय ॥' गुरु एक काम करता है, आत्मा को मन से हमेशा के लिए अलग कर देता है। 'दूध को मथ घृत न्यारा किया, फिरत फिर ताहि में नाहिं समाई ॥' यह काम पूर्ण गुरु कर सकता है।

सिद्ध साध नौ नाथ न पावें । और जीव की कौन चलावें ॥

बड़े-बड़े सिद्ध नहीं पा सके, नौ नाथ भी नहीं पा सके। साहिब कह रहे हैं—

गुलतान मता जब आवेगा तब जिवड़ा सुख पावेगा ।

आचार विचार छुटे या जिवका दुर्मति दूर नसावेगा ॥

माया मोह भरम का बादल परदा खोल बहावेगा ।

पाँच पचीस करो बस अपने सतगुरु शब्द लखावेगा ॥

रहनि गहनि की नाव सँवारो तब भव पार सिधावेगा ।

हंस सुजन जन बहुरि मिलेंगे साहब के गुण गावेगा ॥

अमर लोक अमृत की काया तहाँ बड़ा सुख पावेगा ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह तत्त बिरला पावेगा ॥

तो सभी पाँच नाम जपे जा रहे हैं। समस्त मत-मतांतरों की विचारधारा पढ़ें तो इनके इर्द-गिर्द ही घूम रही है। पर इनका भी पूरा ज्ञान उनके पास

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

53

नहीं होता है। वंशवाद चल रहा है। जब किसी महात्मा के शरीर त्यागने का समय आता है तो वो अपने बच्चे को गद्दी देकर जाता है। संतों ने यह काम नहीं किया। इससे आध्यात्मिकता लोप होती जा रही है। बहुत कम लोगों को इन मुद्राओं का ज्ञान है। सिर्फ इसकी व्याख्या किये जा रहे हैं। बोला जा रहा है केवल। वो भूचरी के सूत्र को भी नहीं जानते हैं। जब ऐसे लोग मिलते हैं तो पूछता हूँ कि कैसी अवस्था बनती है, कौन-कौन से लॉक खुलते हैं। तो वे साहिब की वाणियों, कहीं पलटू साहिब की वाणी, कहीं और किसी की वाणी से बात करना शुरू हो जाते हैं, आँखों देखी बात नहीं कह पाते। मैं पूछता हूँ कि तुमने क्या देखा, यह बताओ, तुम अंदर में कैसे गये, यह बताओ? पर वे नहीं बता पाते। उनकी बात वैसी ही होती है। **‘मैं आया बम्बई से, खबर कहे मोरा भाई॥’** अध्यात्मवाद लुप्त होता जा रहा है। जितने भी बाबे हैं, इनके इर्द-गिर्द ही घूम रहे हैं, सुषुम्ना खोलने का भेद भी नहीं जानते हैं। साहिब ने तो ध्यान रोकना भी अगल बताया। **‘सुरति बाँधि अस्थिर करो, गुरु में देय समाय।’** शरीर के किसी बिंदू पर ध्यान रोकना नहीं कहा।

नाम विदेह औ ध्यान विदेहा। तब तक मिटे नाहिं संदेहा ॥

ध्यान का बिंदू भी बोल रहे हैं।

ऊँची तानो सुरति को, तहाँ देखो पुरुष अलेख ॥

इड़ा पिंगला सुषुम्ना सम करे, अर्द्ध औ उर्द्ध विच ध्यान लावे।

कहैं कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म औ मरन का भ्रम भाने ॥

मध्य में बोल रहे हैं ध्यान भी। अर्थात् शरीर से सवा हाथ ऊपर बैठक चाहिए। इसलिए अनहद के ध्यान में नहीं उलझा रहे हैं। साहिब आज्ञाचक्र में ध्यान नहीं उलझा रहे हैं। क्योंकि जहाँ ध्यान की चाबी रखोगे, वहीं बिंदू खुलेगा।

साहिब ने किसी अलग धर्म की स्थापना नहीं की, पर यह जताया कि जितने भी धर्म हैं, सभी काल-पुरुष की भक्ति कर रहे हैं, इसलिए कोई भी मुक्त नहीं हो सकता है यहाँ से। 10वें द्वार का भेद ही बता रहे

हैं, पर साहिब ने 11वें द्वार की बात की। जितने भी मत-मतांतर हैं, आपने 10वें से आगे की बात नहीं सुनी होगी। एक माई ने कहा कि एक बाबा 12वें द्वार की बात कह रहा है। मैंने कहा कि ठीक है, उसने 11वें की बात सुनी तो 12वाँ शुरू हो गया। फिर पूछा कि क्या बोल रहा है। कहा कि कह रहा है कि अंदर में कहीं है, पर पता नहीं कहाँ है। यह है भ्रमित करना। यही काल ने साहिब से कहा भी है कि लोगों को भ्रमित करूँगा।

इस तरह समाज भ्रमित है। साहिब ने सतर्क किया, सावधान किया।

सिद्ध साध नौ नाथ न पावें। और जीव की कौन चलावे ॥

पावे ताका भ्रम मिट जाय। आवागमन में फिर नहीं आय ॥

जो सच्चे नाम का भेद जान गया, उसका आवागमन समाप्त हो जायेगा, वो मानो इस संसार में रहते हुए भी, शरीर में रहते हुए भी शरीर के बंधनों से मुक्त रहेगा, संसार से अलग रहेगा। यह है कि संसार के कार्य करते हुए भी मोक्ष मिल जायेगा। मुख्य चीज़ गुरु करता है कि मूल सुरति को जगा देता है। इसी को तो भ्रमित किया जा रहा है, इसी को मन नचाए जा रहा है। यह कुंद हो गयी है, यह उलझ गयी है, इसी को पकड़कर ले जा रहा है। इसी मूल सुरति की तरफ किसी का ध्यान नहीं है।

किसी की आँख में मोतियाबिंद हो जाए तो कुछ नज़र नहीं आता है, आगे वो बिंद आ जाता है। पीछे तो थी रोशनी, पर आगे बिंद आ गया। डॉ० उस बिंद को ही तो काटता है। ऐसे ही सुरति के ऊपर के पर्दे गुरु हटा देता है। अगर बल्ब पर नीला कवर लपेट दो तो नीली रोशनी हो जाती है, इस तरह मन के आवरण में संसार को मनरूप देख रहे हैं।

हवाई जहाज़ की यात्रा करते हैं तो लाइफ जैकेट होती है। कोई हादसा हो जाए तो जहाज़ को पानी के पास ले जाते हैं, कहते हैं कि कूदो। वहाँ से कूदो तो डूबोगे नहीं, केवल हाथ से थोड़ा चेष्टा करना, आप किनारे पर आ जाओगे। चेष्टा नहीं भी की तो वहीं पड़े रहोगे, डूबोगे नहीं। साहिब कह रहे हैं—

मन ही निरंजन सबै नचाये । नाम होय तो माथ नमावे ॥

वर्तमान में सत्संग दूषित हो गये, मूल तथ्यों की तरफ कोई नहीं ले जा रहा है। टॉइम पास वाला, आकर्षण वाला काम कर रहे हैं। एक ही तरह का घिसा-पिटा फार्मूला सबके पास है। ब्रह्माण्ड तो इतना विशाल है कि करोड़ों जन्मों तक भी उसके विषय में बोला जाए तो भी बच जायेगा। उन्होंने आंतरिक ब्रह्माण्ड का कोई अनुभव ही नहीं किया, गये ही नहीं।

तो साहिब कह रहे हैं—

नाम निःअक्षर न्यारा भाई । ताहि में तुम रहो समाई ॥

बड़े बड़े सिद्ध साधक भयऊ । नाम भेद ताहिं न लहऊ ॥

कह रहे हैं—हे भाई! वो निःअक्षर है, उसका भेद बड़े-बड़े सिद्ध, साधक भी नहीं जान पाए।

कहैं कबीर निज नाम बिनु, मिथ्या जन्म गँवाय ।

निर्भय मुक्ति निःअक्षर, गुरु बिनु कबहुँ न पाय ॥

कुछ सोहं शब्द की उपासना कर रहे हैं, पर साहिब कह रहे हैं—

जो जन होइहैं जौहरी, शब्द लेहु बिलगाय ।

सोहं सोहं जप मुआ, मिथ्या जन्म गँवाय ॥

सोहं सोहं जपे बड़ ज्ञानी । निःअक्षर की खबर न जानी ॥

साहिब कह रहे हैं—

आदि नाम निज मूल है, और मंत्र सब डार ।

कहे कबीर निज नाम बिन, डूब मुआ संसार ॥

अब सवाल उठा कि कालांतर में बड़े-बड़े योगी, तपस्वी, पीर, पैगंबर, ऋषि, मुनि हुए, पर वो नाम को नहीं जान पाए। कैसा नाम है यह! यह पोथियों में नहीं मिलता है। पर सबने पोथियों वाले नाम को ही नित्य करके माना। इसलिए जन्म मरन का चक्र समाप्त नहीं हुआ।

जन्म मरन मिटे न जीव की । खोज न पावे सच्चे पीव की ॥

खोजते-खोजते सब समाप्त हो गये।

कहैं कबीर गुप्त घर मेरा। काहू न भेद लहे मेरा॥

कह रहे हैं कि मेरे घर का भेद कोई नहीं जानता है। साहिब की वाणी की तो चोरी की गयी। सबने अपने स्वार्थ सिद्ध किये, पर किसी के पास सच्चा नाम नहीं था। तो कह रहे हैं—

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो।

यहि संसार काल है राजा, कर्म का जाल पसारा हो।

चौदह खंड बसे वाके मुख में, सबही को करत अहारा हो।

जारबार कोयला कर डारन, फिर फिर दे अवतारा हो।

ब्रह्मा विष्णु शिवतन धरिया, और को कौन विचारा हो।

सुर नर मुनि सब छलछल मारले, चौरासी में डारा हो।

मध्य अकाश आप जहँ बैठे, ज्योति शब्द ठहियारा हो।

ताको रूप कहाँ लग बरनो, अनन्त भान उजियारा हो।

श्वेत स्वरूप शब्द जहाँ फूले, हंसा करत बिहारा हो।

कोटिन चाँद सूर्य छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो।

वही पार इक नगर बसत है, बरसत अमृत धारा हो।

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो॥

कह रहे हैं—

सदा आनन्द होत है वा घर, कबहुँ न होत उदासा।

परम पुरुष जहाँ आप विराजे, हंसा करत विलासा॥

धर्मदास जी भी अपनी वाणी में कह रहे हैं—

जहाँ पुरुष सतभाव है, तहाँ हंसन को बास।

नहीं यमन को नाम है, नहीं तृष्णा नहीं आस॥

हर्ष शोक वहि घर नहीं, नहीं लाभ नहीं हान।

हंसा परमानन्द में, धरैं पुरुष को ध्यान॥

नहिं देवी नहिं देवा है, नहिं वेद उच्चार ।
 नहीं तीरथ नहिं वरत है, नहिं षटकर्म अचार ॥
 उत्पति प्रलय वहाँ नहीं, नहीं पुण्य नहिं पाप ।
 हंसा परमानन्द में, सुमिरैं सतगुरु आप ॥
 नहिं सागर संसार है, नहीं पवन नहीं पानि ।
 नहिं धरती आकाश है, नहीं ब्रह्म नहीं निशानि ॥
 चंद सूर वा घर नहीं, नहीं करम नहिं काल ।
 मगन होय नामहिं गह्यो, छुटि गयो जंजाल ॥
 सुरति सनेही होय तासु, यम निकट नहिं आवे ।
 परम तत्व पहिचान, सत्य साहब मन भावे ॥
 अजर अमर विनसे नहीं, परम पुरुष परकाश ।
 केवल नाम कबीर का, गाय कहैं धर्मदास ॥

जब मूल सुरति नाम से जग जाती है तो संसार स्वप्न लगने लगता है । यह केवल पूर्ण गुरु द्वारा ही संभव है । गोस्वामी जी को क्या पड़ा था यह कहने का—

हरि विरंच शंकर सम होई । गुरु बिन भव निध तरई न कोई ॥

कबीर साहिब के दस मुकामी रेखते में आता है—

चला जब लोक को शोक सब त्यागिया, हंस का रूप सतगुरु बनाई ।
 भृंग ज्यों कीट को पलट भृंगी करे, आप संग रंग दै ले उड़ाई ॥
 छोड़ नासूत मलकूत को पहुँचिया, विष्णु की ठाकुरी देख जाई ॥
 इंद्र कुबेर जहाँ रम्भा निरत है, देव तैतीस कोटिक रहाई ॥
 छोड़ि वैकुण्ठ को हंसा आगे चला, शून्य में ज्योति जहाँ जगमगाई ॥
 ज्योति परकाश में निरख निःतत्व को, आप निर्भय हो भय मिटाई ॥
 अलख निर्गुण जेहि वेद स्तुति करें, तीनहुँ देव को है पिताई ॥
 भगवान तिनके परे श्वेत मूरती धरे, भग को आन तंगवा रहाई ॥

चार मुकाम पर खण्ड सोलह कहे, अण्ड को छोड़ि वहाँ ते रहाई ॥
 सहस्र और द्वादशे रूह है संग में, करत किलोल अनहद बजाई ॥
 तासुके वदन की कौन महिमा कहूँ, भासती देह अति नूर छाई ॥
 महल कंचन बने माणिक तामें जड़े, बैठि तहाँ कलस अखण्ड छाजे ॥
 अचिंत के परे स्थान सोहं का, हंस छत्तीस तहाँ विराजे ॥
 नूर का महल और नूर की भूमि है, तहाँ आनन्द सो द्वंद भाजे ॥
 करत किल्लोल बहु भांति से संग येक, हंस सोहं की जो समाजे ॥
 हंस जब जात षटचक्र को भेदि के, सात मुकाम में नज़र फेरा ॥
 सोहं के परे जो सूर्ति इच्छा कही, सहस बावन जहाँ हंस हेरा ॥
 रूप के राशि ते रूप उनको बना, नहीं उपमा दूजे बनेरा ॥
 सुरति से मेटि के शब्द के टेक चढ़ि, देखि मुक्काम अंकूर केरा ॥
 सुन्न के बीच में विमल बैठक तहाँ, सहज स्थान है गैब केरा ॥
 नवें मुक्काम यह हंस जब पहुँचिया, पलक विलंब वहाँ किया डेरा ॥
 तहाँ से डोर मकरतार जो लागिया, ताहि चढ़ि हंस गो दे दरेरा ॥
 भये आनन्द से फंद सब छोड़ि के, पहुँचा जहाँ सतलोक मेरा ॥

इस सुरति के अंदर सिस्टम है। जैसे अंश अंशी की तरफ जाता है। धरती अपने स्रोत के चारों ओर चक्कर काट रही है, आग भी जलाएँ तो उसकी लपटें अपने स्रोत सूर्य की ओर ही उठती हैं। आत्मा को कोई दिक्कत नहीं है वहाँ जाने में, पर मन भ्रमित कर रहा है। नाम के बाद सूक्ष्म वेद की उत्पत्ति हो जाती है सुषुम्ना में। तब हृदय प्रकाशित हो जाता है, सब चीज़ें स्वयं ही समझ आने लग जाती हैं। पलटू साहिब कह रहे हैं—

दीपक बारा नाम का, महल भया उजियार।

महल भया उजियार नाम का तेज बिराजा।

शब्द किया परकाश मानसर ऊपर छाजा ॥

दसो दिसा भई सुद्ध बुद्ध भई निर्मल साची।

छुटी कुमति की गाँठि सुमति परगट होय नाची ॥

होत छतीसों राग दाग गूर्तिन का छूटा ।

पूरन प्रगटे भाग करम का कलसा फूटा ॥

पलटू अँधयारी मिटी बाती दीन्हीं टार ।

दीपक बारा नाम का महल भया उजियार ॥

नाम के बिना कमजोर है, मलिन है, मूर्ख है। नाम के बिना यह सुरति नहीं जाग सकती है। यह समस्त प्राणियों में है। यह पूर्ण सद्गुरु जगा देता है। तब पूरे खेल ठीक-ठीक समझ आने लगते हैं। आत्मा तो आज आँख बंद करके मन का अनुकरण कर रही है, पर तब नहीं करती है। चालाक से जैसे आप सावधान हो जाते हैं, जब पता चलता है कि यह तो अपना ही हित देख रहा है, ऐसे ही मन की चालाकी समझ आ जाती है।

मन जाता है जान दे, गहके राख शरीर ।

उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर ॥

तब मन की ताकत हीन हो जाती है। जैसे वशिष्ठ मुनि ने कहा—हे राम! आत्मा को जानने के बाद जीव संसार-सागर से पार हो जाता है। पर संतों ने आत्मा नहीं कहा। आत्मा में भी मन का रूप है। परमात्मा शब्द भी भ्रमांक है। वो मन को कहा है। जब मन सूक्ष्म रूप से मूल सुरति के अंदर रहता है तो कहा आत्मा। साहिब ने तो हंस कहा।

हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल वश आई ॥

हंसा से उदाहरण लिया। वो बड़ा निर्मल और सुंदर पक्षी है। तो तब वो मन का अनुकरण नहीं करता है। जब अंतिम पराकाष्ठा पर पहुँचता है तो परमहंस कहा। तब ऐसा होता है—

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल ।

लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल ॥

तो साहिब ने सगुण-निर्गुण दोनों से परे मकर तार का भेद दिया। मकर तार से भी झीनी डोरी यह मूल सुरति है। शब्द ने भी अपना रास्ता तय किया, सुरति भी अपना रास्ता तय करती है।

मकर तार के भेद को जानत संत सुजान ॥

सुरति से ही उस देश को देखा भी जा सकता है। 'सुरति से देख सखी वो देश।' वासुदेव ने कहा कि इसकी आँखें नहीं हैं, पर फिर भी सभी दिशाओं से देख सकती है। भाषा का अंतर है।

मेरी बातें सुनकर एक बाबा ने कहा कि ये कैसी बातें कर रहे हैं कि गुरु पार कर देता है! मैंने कहा कि अभी उसे यह फार्मूला पता नहीं है। गुरु ऐसी सत्ता रखता है, जो मूल सुरति को जगाने की क्षमता रखता है। बड़े-2 इस रहस्य को नहीं जानते हैं। साहिब कह रहे हैं—

यह जग पारख बिना भुलाना।

निर्गुण सगुण दोकर थापै अजपा धरि धरि ध्याना ॥

निर्गुण वंश सरगुण गुण रहितम गुण बिन कहा समाना ॥

द्वैत ब्रह्म सकल घट व्यापै त्रिगुण में लपटाना ॥

जल के सूखे कमल कुम्हलाना तब कहूँ कहाँ ठिकाना ॥

छओ चक्रवर्ति चार चतुर्दश वेद मती अरु ज्ञाना ॥

बंक नाल की डोरी खीचें योगिन युगति बखाना ॥

घर में कर्त्ता लोग बोलत हैं पाँचों तत्त्व नशाना ॥

करे विचार सकल मिलि ऐसा भेष विविध विधि बाना ॥

कहैं कबीर कोई गुरुमुख पावै पहुँचे ठौर ठिकाना ॥

आप विचार करें, चिंतन करें कि जब भी आप नाना मत-मतांतरों की तरफ चलते हैं तो ये चीजें इससे पहले कोई नहीं बोला है। आप उन महात्माओं के पहले के सत्संग भी सुनना पुराने वाले। और अब के भी सुनना। अब वाले में मेरी बातें भी मिलेंगी। मैंने पाया है कि सभी धीरे-धीरे मेरी वाणी की नक़ल करने लगे हैं। आगे देखना, जितनी भी बातें बोल रहा हूँ, बाकी भी बोलेंगे। किसी ने 11वें द्वार का रहस्य नहीं कहा। मैंने कहा, प्रमाण सहित कहा। आगे इसकी पूरी नक़ल होगी, 11वाँ द्वार भी बोला जाएगा। अभी तो आपने सुना था कि गुरु रास्ता बताकर पार कर देता है। मैं कह रहा हूँ कि गुरु पार ही कर देता है।

ना कुछ किया ना करि सका, ना करने योग शरीर।

जो कुछ किया सो साहिब किया, भया कबीर कबीर ॥

हालांकि साहिब ने कहा है, पर मूल धरातल तक पहुँचकर कोई नहीं कहा, क्योंकि कोई उस बिंदू तक पहुँचा नहीं। हम उस बिंदू तक पहुँचकर कह रहे हैं। हम नाम कह रहे हैं। **थोड़ी देर बाद सभी विदेह नाम की बात करेंगे, कहेंगे कि हमारे पास है वो। नक़ल का दौर है। साहिब की वाणी की नक़ल बहुत देर से की जा रही है, पर ठीक नहीं कर पा रहे हैं। अब मेरी बातें ही आपको चारों ओर सुनने को मिलेंगी। हो सकता है कि आप सोचने लग जाएँ कि शायद मैं ही नक़लची हूँ। आप कहेंगे कि आप भी तो यही कह रहे हैं, जो बाकी सब कह रहे हैं। क्योंकि वो हो सकता है कि मसाला लगाकर सुनाएँ।**

साहिब कह रहे हैं कि सच्ची डोरी सुरति और निरति से जोड़कर रखना। कुछ कहते हैं कि सुरति सुनने की ताक़त है और निरति जोड़ने की ताक़त है। यह अटकलपचू वाली बात है। जैसे एक ही नदी की दो धाराएँ हैं, जो कुछ आगे जाने पर मिल जाती हैं, ऐसे ही सुरति और निरति भी हैं। निरति समस्त अंगों को चेतन करती है, सुरति के द्वारा सब काम हो रहे हैं। मनुष्य कॉमा में पहुँचता है तो सुरति काम करना बंद कर देती है। जब सुरति और निरति एक हो जाती हैं तो आत्मा कहलाती है। निरति पवन में है और सुरति मन में समाई है।

सुरति निरति मेला भला, मन की हाजत नाहिं ॥

दोनों मिले तो मूल सुरति बन जाती है। कुछ मूलादार से पवन को उठा सुषुम्ना में ले जाते हैं। दूसरा 24 घण्टे यहाँ आपकी सुरति होगी, निरति भी वहीं समा जायेगी।

तो साहिब ने निःअक्षर नाम की बात की। वो 52 अक्षर से परे है। वो निःशब्द शब्द है।

जहँ लग वाणी मुख कही, तहँ लग काल को वास।

वाणी परे वो नाम है, सो सद्गुरु के पास ॥

यह नाम केवल संतों के पास है। अन्य वाणी में आने वाले जितने भी नाम हैं, काल के हैं। पलटू दास कह रहे हैं—

संत सनेही नाम है नाम सनेही संत ॥
नाम सनेही संत नाम को वही मिलावें।
वे हैं वाकिफ़कार मिलन की राह बतावें ॥
जप तप तीरथ वरत करे बहुतेरा कोई।
बिना वसीला संत नाम ते भेंट न होई ॥
कोटिन करे उपाय झटक सगरौ से आवे।
संत दुवारे जाय नाम को घर तब पावै ॥
पलटू यह है प्राण पर आदि सेती और अंत।
संत सनेही नाम है नाम सनेही संत ॥

कुछ ने तो धुनों को नाम बना दिया। अंदर में जो धुनें हो रही हैं, वो तो हमारी नाड़ियों की झंकार है। तभी तो कह रहे हैं—

भव के फँदे पच मुए, ब्रह्मा विष्णु महेश।
निःअक्षर जो जानही, छूटा जगत क्लेश ॥

यह वाणी का विषय नहीं। कुछ पंच शब्दों को नाम कह रहे हैं, कुछ सोहं को नाम कह रहे हैं, कुछ ररंकार को सार नाम कह रहे हैं।

सार नाम निःअक्षर रूपा ॥

बस, यह गुरु से ही मिलेगा। जैसे कितना भी भंयकर साँप हो, सोटी की एक उछाल दे दो तो मूर्छित हो जायेगा। नाम के समय गुरु एक उछाल दे देता है, तब जिंदा रहकर भी मन कुछ नहीं कर पाता है। इसलिए साहिब की वाणी नाम और गुरु के ईर्द-गिर्द ही घूम रही है और नाम गुरु से ही मिलेगा।

ना तो तन ही रहा, ना तो मन ही रहा।
गुरु मिलने से झगड़ा, ख़त्म हो गया ॥



आपका विरोध होगा

दुनिया के लोगों में भक्ति का नूर दिखाई नहीं दे रहा है। भक्ति समाप्त हो गयी है, केवल दिखावा रह गया है। आप देखना, आदमी पाप कर्म की तरफ चल पड़ा है और अपने को भक्त भी कहला रहा है। वो कह रहा है कि हम भक्त भी हैं। हम कह रहे हैं कि नहीं, यह भक्ति नहीं है। लोग माँस खा रहे हैं, शराब पी रहे हैं, छल-कपट आदि कर रहे हैं और कह रहे हैं कि हम भक्त हैं। हम कह रहे हैं कि नहीं, कम-से-कम यह भक्ति नहीं है। खामोशी से एक चीज़ और देख लेना कि आपका विरोध करने वाले लोग ठीक नहीं मिलेंगे, उनका खान-पान ठीक नहीं होगा, आचरण भी ठीक नहीं होगा। यह मेरा दावा है। वे छल-कपट भी कर रहे होंगे। लेकिन आपकी जीवन शैली उत्तम है। आप माँस नहीं खा रहे हैं, चोरी नहीं कर रहे हैं, गंदे काम नहीं कर रहे हैं, घूस नहीं ले रहे हैं। फिर क्यों विरोध है आपका?

इस युग में आदमी दूसरे को कन्सटेंटिली भटकाना चाहता है। **कलयुग कैसा है, बताता हूँ। एक बीरपुर का रहने वाला आदमी था, उसने ईसाई धर्म को अपना लिया। उसके रिश्तेदारों ने नहीं छोड़ा उसे, गाँव वालों ने भी कोई नाराज़गी नहीं दिखाई। उसने माता-पिता, भाई-बहनों को भी ईसाई बना दिया। सब ईसाई बन गये। किसी ने एतराज़ नहीं किया। रिश्तेदारों ने उसके यहाँ आना जाना नहीं छोड़ा। वो चर्च में आता-जाता था, माँस भी खाता था। कुछ हमारे नामी उसके संपर्क में आए तो बात हुई। वो सत्संग सुनने आया। वो प्रभावित हुआ, उसने नाम ले लिया। अब वो वापिस हिंदू धर्म में आ गया, माँस खाना, शराब पीना भी छोड़ दिया, गंदे काम भी छोड़ दिये। अब क्या हुआ कि रिश्तेदारों ने उसके यहाँ आना-जाना छोड़ दिया, गाँव वाले भी उससे नाराज़ हो गये। आप मानेंगे, सबने उसे छोड़ दिया।**

आप गौर करें, जब ईसाई बना तो गाँव वाले भी नाराज़ नहीं हुए, उसकी निंदा नहीं की, पर साहिब-बंदगी में आया तो उसकी निंदा होने लगी। क्यों हुई निंदा? क्या गाँव के लोगों ने नहीं देखा कि अब यह माँस नहीं खा रहा है, चोरी नहीं कर रहा है, गंदे काम नहीं कर रहा है, झूठ नहीं बोल रहा है, अच्छा हो गया है। देखा, सबने देखा। पर फिर भी क्यों हुए नाराज़? यह तो बड़ी उलटी बात लग रही है। भाई, ईसाई बन गया तो कोई नाराज़ नहीं हुआ। वो तो गाय का माँस भी खा लेते हैं। पर जब साहिब-बंदगी में आया तो नाराज़ हुए। ऐसा क्यों हुआ? कोई बुरा पंथ तो है नहीं। दो बेहतरीन चीज़ें बोल रहे हैं—सत्य और अहिंसा। फिर बुरे कहाँ से हैं! तो अब निंदा होने लगी। यह बड़े जुल्म की बात थी। उसने गलत रास्ता पकड़ा था क्या! बात यह थी कि पाखण्डी, शास्त्री आदि ने महसूस किया कि यह साहिब-बंदगी से जुड़ गया है और बाकी को भी वहाँ ले जायेगा, हमारे काम में रुकावट पड़ेगी, इसलिए उसका बहिष्कार किया था।

आपका विरोध होना ही है, क्योंकि लोग चाहते हैं कि आप सही राह पर न आएँ। एक चीज़ दावे से बताता हूँ कि मुझसे नाम लेने के बाद आदमी की आर्थिक दशा भी सुधर जाती है। गरीबी के सारे कारण माँस, शराब आदि छुड़ा दी। यहाँ तो कट्टुओं का माँस बेच रहे हैं। एक दिन एक लंबा-चौड़ा आदमी आया, कहा कि नाम दे दो। मुझे लगा कि यह कसाई है। मैंने पूछा कि क्या काम करते हो? कहा—हम सदन भगत की बिरादरी के हैं। मैं जान गया कि कसाई है। मैंने कहा कि तुम नाम लेने आए, ठीक है, मैं तुम्हें नाम दूँगा, पर हमारी शर्तें हैं, उनपर चलना होगा, यह माँस बेचने वाला काम बंद करना होगा। कहाँ कि हम माँस नहीं खायेंगे, नियम पर चलेंगे। मैंने कहा कि वो काम भी बंद करना होगा। कहा—फिर खायेंगे क्या? मैंने कहा कि सब्जी, फल आदि बेचो। वो कहा कि मेरे 16 बच्चे हैं, साग-सब्जी से क्या होता है! मैंने कहा कि बकरे सस्ते हैं क्या? वो कहा कि शाम तक 2-3 हजार कमा लेता हूँ। मैंने पूछा कि वो कैसे?

कहा कि आपसे क्या झूठ बोलना। कौन सा बकरा! एक बकरे की टाँग काटकर लटका देते हैं बाहर और कट्टू का माँस बेचते हैं। 300-400 में कट्टू मिल जाता है, 200-400 की तो खाल बेच देते हैं। फिर टुकड़े-2 करके अंदर दुकान में रख देते हैं। मैंने कहा कि तू तो बड़ा जुल्म कर रहा है, मिलावट कर रहा है, कट्टू खिला रहा है लोगों को। वो कहा कि सब तो मिलावट कर रहे हैं। उस समय हल्दी में लिद्द मिलाई जा रही थी। कहा कि देखो, सब जगह मिलावट है।

तो अब लोगों से हड्डी चबाना छूट नहीं रहा है। आपको अब यह सब अच्छा नहीं लग रहा है। इसलिए रिश्तेदार छूट गये हैं। आप अब ऐसे लोगों के घर नहीं जाना चाहेंगे जो माँस खाते हैं। वो कहते हैं कि हमने आपको छोड़ दिया। पर उन्होंने क्या छोड़ना था, आपने ही उन्हें छोड़ दिया है। इसलिए परेशान होकर विरोध कर रहे हैं।

आप देखें, शराब की 100-200 की बोतल के लिए दुकान में लाइन लगी हुई है, जबकि सेहतमंद दूध गली-गली गुज्जर दे रहा है, उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है। मैं पंजाब से आ रहा था, रोड़ पर दो टाँगें नज़र आईं। मैंने कहा कि यह तो इंसान की टाँगें लग रही हैं। मैंने गाड़ी रोकी तो देखा कि एक शराबी बंदा था। उसका बाकी शरीर पीछे झाड़ियों में था और टाँगें बीच रोड़ पर। मैंने सोचा कि कोई गाड़ी आएगी तो बेचारे की टाँगें चली जायेंगी, इसे जगाता हूँ। मैंने उसे जगाया, कहा कि तुमने दारू पी है, चलो थाने। वो कहा कि हाँ, चलो। वो आँखें नहीं खोले। मैंने कहा कि तुम गलत सोए हो। वो कहा कि मैं ठीक हूँ। मैंने अपने बंदे को कहा कि उसे परे करते हैं, बाद में उठ जायेगा। उसे दूर करके एक तरफ लिटा दिया।

एक दिन मैं अंबाला से आ रहा था तो रोड़ किनारे गोबर का ढेर लगाया था किसी ने। बहुत बड़ा ढेर था। नेशनल हाईवे तक टच कर रहा था वो। एक बंदा उसपर उलटा सोया था। शराब पीने वालों की हालत ऐसी होती है कि स्टाइल भी बड़ा अजीब हो जाता है। मैंने गाड़ी रोकी,

सोचा कि किसी का बेटा होगा, किसी का भाई होगा। वो बिलकुल रोड़ पर ही था। मैंने कहा-उठो, गलत सोए हो। वो कहा कि नहीं, आप जाओ, मैं ठीक हूँ। वो नशे में था। मैंने ड्राइवर के साथ उसे उठाया और कुछ दूर लिटा दिया।

अवगुण कहूँ शराब का, ज्ञानवंत सुन लेहिं।

मानुष से पशुआ करे, द्रव्य गाँठ का देही॥

तो हमारी निंदा शराबी-कबाबी ही कर रहे हैं। किसी भी शराबी से यह उम्मीद नहीं करना कि वो ठीक काम करेगा। आप परिश्रमी बन गये, आपने गंदे काम छोड़ दिये। वो चाहते हैं कि आप भी गंदे बनें। जब तक दुनिया में गंदे लोग रहेंगे, आपका विरोध होगा, इसलिए आपका विरोध कभी ख़त्म नहीं होने वाला है, क्योंकि दुनिया से बुरे लोग कभी ख़त्म नहीं होंगे। जब तक यह दुनिया रहेगी, आपकी तरह अच्छे लोग भी रहेंगे और आपकी निंदा का बीड़ा उठाने के लिए बुरे लोग भी रहेंगे।

रामगढ़ में छोटा आश्रम है, वहाँ संगत बहुत आती है। वहाँ गाड़ी खड़ी करने की जगह भी नहीं मिलती है। एक ने कहा कि रोड़ पर खड़ी करें तो लोग गाली देते हैं। उसने कहा कि आपने सबको अमीर बना दिया है, सबके पास गाड़ी हो गयी है। मैं कहना चाहता हूँ कि नाम पाने के बाद गरीबी कम हो जाती है। सबसे बड़ी बात है कि आप संतुष्ट हैं।

मैं सभी आश्रमों में जाता हूँ। सबमें पूरा-पूरा इंतजाम किया है। कुछ ऐसी ऐसी जगहों पर हैं कि वहाँ की पब्लिक यदि चाहे भी तो 100 साल में भी इतना पैसा नहीं दे पायेगी, जितना वहाँ लगाया है। क्योंकि गरीब पब्लिक है।

हमारी एक ही गरज़ है कि आपको खींचकर सत्लोक लेकर चलना है। हमारे मिशन में पैसे वाला चक्कर नहीं है। अमीरों ने हमारी जमकर निंदा की है, इसलिए नहीं आ रहे हैं। फिर वे गरीबों को देखकर सोचते हैं कि इनके पास जाने से इज्जत कम होगी हमारी। मैं कहता हूँ कि तू इज्जत ही सँभाल।

अकबर एक दिन शिकार को निकला। उसे प्यास लगी। एक किसान हल चला रहा था, उसने उसकी बड़ी सेवा की। फिर अपने काम पर लग गया। पर उसे यह नहीं मालूम था कि यह अकबर है। अकबर ने अपने सिपाही से कहा कि इसे मेरे लिए बताओ कि राजा हैं। सिपाही ने बताया। उसे कोई फर्क नहीं पड़ा, वो वैसे ही अपने काम में लगा रहा।

अकबर ने सोचा कि शायद इसे पता नहीं चला है। उसने फिर सिपाही से कहा कि दुबारा अच्छी तरह बताओ। सिपाही ने फिर बताया। किसान ने कहा कि सुन लिया है। वो फिर अपने काम में लगा रहा, कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं जताई। उसका काम ही सेवा था। तब अकबर खुद किसान के पास गया, कहा कि यदि कोई काम पड़े तो मेरे पास आ जाना। किसान ने कहा—ठीक है। एक दिन कोई 2 साल बाद किसान को कोई काम पड़ गया, वो चल पड़ा। गेट पर सिपाही ने पहचान लिया कि यह वही किसान है, पूछा क्या काम है? किसान ने बताया। वो अकबर के कक्ष में पहुँचा तो अकबर नीचे झुका हुआ था। फिर उठा तो देखा कि किसान खड़ा है। उसने भी किसान को पहचान लिया, कहा—कहो, कैसे आना हुआ? किसान ने कहा कि पहले यह बताओ कि आप यह क्या कर रहे थे? अकबर ने कहा कि खुदा से प्रार्थना कर रहा था कि मेरी जनता ठीक रहे, कोई मुसीबत हमपर न आए, ज़्यादा बरसात न हो। किसान ने कहा—अच्छा तो मैं चलता हूँ। अकबर ने कहा कि रुको तो, बताओ तो कि किस काम से आए थे। किसान ने कहा कि आपसे क्या माँगना, आप तो खुद ही माँगते हो। जिससे आप माँग रहे थे, मैं भी उसी से माँग लूँगा।

दाता एक साहिबा, भिखारी सारी दुनिया ॥

मुझे आपसे कुछ माँगना नहीं है। एक दिन किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी तो एक नामी लड़के को कहा कि एक लाख उधार दे दो, बाद में दे दूँगा। उसने दे दिये। मैं जब डायरी पर लिखने लगा तो कहा कि रहने दो, आपके ही हैं। मैंने कहा कि फिर उठा ले ये पैसे, मैं नहीं लूँगा। फिर तो मैं चोर हो गया, ठग हो गया। मैं कभी यह काम नहीं करता हूँ।

...तो एक बात के लिए दुनिया हैरान है कि साहिब-बंदगी में गरीब, बीमार ज्यादा हैं, फिर इन्होंने इतने कम समय में 100 से अधिक आश्रम कैसे बना दिये। इतनी बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें हैं, पैसा कहाँ से आया, यह सोचकर वो परेशान हो जाते हैं। बस, जो परेशान हैं, वही तो विरोध कर रहे हैं।

तो मेरे विचार से आपकी फिजूल खर्ची कम हो गयी, बीमारियाँ कम हो गयीं। हमने आपके सेहतमंद रहने के फार्मूले बताये, जिससे आपकी बीमारियाँ कम हुई। आप फालतू घूमते-फिरते भी नहीं। आपकी आर्थिक दशा ठीक हुई। फिर आपका विरोध क्यों? आप किसी को परेशान भी नहीं कर रहे, किसी के साथ मारपीट भी नहीं कर रहे। हर नामी महात्मा वाला जीवन जी रहा है। आप किसी से छल-कपट नहीं कर रहे। फिर क्या बात है!

मैंने एक उदाहरण दिया। लोग चाहते हैं कि आप सच पर न चलें, आप अच्छे काम न करें। फिर कैसे लोग हैं ये! आज ईर्ष्या का युग है। किसी को इस बात से परेशानी नहीं है कि उसके पास यह चीज़ क्यों नहीं है, उसे परेशानी है तो इस बात की कि दूसरे के पास यह क्यों है। वो दूसरों के सुख से दुखी है। आप संतुष्ट हैं। इसलिए आपको लोग असंतुष्ट करने की कोशिश करना चाहेंगे।

मैं कलमसिंह का उदाहरण देता हूँ। पहले वो बड़ा ही खतरनाक था, शिकारी टाइप था। मारकाट करना, कुछ भी खा जाना। बड़ा खूँखार था। सभी बुराइयाँ थी उसमें। उसने जमीनें खरीदीं, मकान बनाए, 3 दुकानें बना लीं, अच्छा बन गया। जो उसने होटल बनाई, उसमें पत्नी खाना बनाती है और खुद वो परोसता है, कहता है कि हलवाई नहीं रखना चाहता हूँ, क्योंकि खाते-पीते हैं, गंदे होते हैं।

ऐसे राक्षस को अच्छा बनाया तो नमस्कार करना चाहिए, धन्यवाद देना चाहिए या निंदा करनी चाहिए! यानी बुरे लोगों का समूह चाहता है कि आप भी बुराई से न निकलें।

आप तो अब चाहकर भी पाप नहीं कर पा रहे हैं। आप नेक इंसान बन गये हैं। यदि आप अपने पूर्व जीवन की तरफ देखें तो पायेंगे कि आपकी करनी में, आपकी रहनी में बहुत अंतर आ गया है। आप पूरे बदल चुके हैं, ज्ञानी महात्मा हो गये हैं।

काशी के एक पंडित जी हैं। वे ब्राह्मणों को पढ़ाते हैं। काशी हिंदू धर्म की राजधानी है। वो बहुत बड़े विद्वान हैं। एक दिन मेरे पास आए। एक अनपढ़ नामी उन्हें लाया। पंडित जी ने मुझे प्रणाम किया, कहा—महाराज! यह आपका एक शिष्य है, मैं इसे देखा तो आपके पास आया। आपने इसे क्या बना दिया, यह तो महात्मा से भी ऊपर है। कहा कि यह झूठ नहीं बोलता है। हम तो ज्ञानी हैं, फिर भी कभी-कभी बोल देते हैं, पर यह नहीं बोलता है। इसका आचरण भी बहुत ऊँचा है, गाय-भैंस चराता है। इतना अक्लमंद है कि फालतू बात नहीं करता है, हक़ की कमाई खाता है, संतुष्ट है, शांत है। 2-3 बच्चे हैं इसके, पर संतुष्ट इतना कि परम ज्ञानी भी इतना संतुष्ट नहीं हो सकता है। हम ज्ञानी हैं, पर कई बार जीवों को मार देते हैं। यह है कि किसी भी जीव को नहीं मारता है। मैंने इसे देखा, मुझे विचार आया कि इसे किसने ऐसा बनाया!

वो इतना बड़ा ज्ञानी ऐसी बात कह रहा है। मैंने आपको पहले कहा कि कोई भी नेक इंसान हमारी निंदा नहीं कर सकता है। निहायत ही गंदे लोग ही मेरी निंदा कर रहे हैं। उनको नाम की ताक़त नज़र नहीं आ रही है।

मेरे हर नामी से पूछना कि बदलाव आया कि नहीं। आपकी करनी चेंज हो गयी, हृदय प्रकाशित हो गया, किसी भी जीव को आप कष्ट नहीं दे रहे हैं। बुद्धि उत्तम हो गयी, कोई पापिष्ठ कर्म नहीं कर रहे, तीसरा आपको अच्छा सरंक्षक मिल गया है, फिकर नहीं है, जानते हैं कि साहिब सब करेगा, क्योंकि वो ही करता आ रहा है।

तेरी कृपा से ही मेरा, सब काम हो रहा है।

करते हो तुम ही साहिबा, मेरा नाम हो रहा है ॥

कई मौकों पर आपने यह चीज़ देखी है। अब आप भ्रमित नहीं हो रहे हैं। हालांकि आपको भ्रमित करने की कोशिश की जा रही है, आपको मजबूर किया जा रहा है कि आप ग्रह दशा मानें, आप भूत-प्रेत मानें, पर आप मजबूत हैं, दृढ़ हैं।

नाम के बाद ताक़तें काम करेंगी आपके साथ। आप नहीं चिंता करना, आप नहीं भ्रमित होना। आप जो अच्छे हुए उसमें आपका कोई योगदान नहीं था। हम यही तो कह रहे हैं, पर अहंकार से नहीं, **एक भरोसे से। संतत्व की धारा चल ही कृपा पर रही है, कमाई पर नहीं।**

कुछ दूर-दूर से फोन करते हैं। जब मैं पूछता हूँ कि कैसे हो तो कहते हैं कि बड़े खुश हैं। आपने इतना ज्ञान दे रखा है कि कोई हमसे बात नहीं कर पाता है। सच है, **‘मेरा कर्ता मेरा साईया।’** कुछ पढ़े लिखे भी नहीं होते।

नाम की ताक़त मदद करती चलती है। एक लड़के ने बंदूक का गलत रिन्यू कर दिया। सात केस पकड़े गये। उसकी नौकरी जाने का सवाल था। उसने बताया कि भूल से हो गया है ऐसा। मैंने सोचा कि भ्रष्टाचार में यदि इसकी नौकरी चली गयी तो यह ठीक न होगा, मैं चिंतित हुआ। वो घूस भी नहीं लेता है, मेरी ही बात करता रहता है, यदि उसकी नौकरी छूट जाती तो मेरे गाल पर तमाचा था। पर वो ताक़तें ऐसे नहीं इस्तेमाल की जाती हैं। यदि जुकाम हो जाए या बुखार हो जाए तो उसके लिए आध्यात्मिक शक्ति थोड़ा लगानी है। तो मैंने उससे कहा कि चिंता नहीं करना। साहिब की कृपा हुई, डी. आई. जी. ने उसे कहा कि चिंता मत करो, हम इस केस को रफ़ा-दफ़ा ही कर देते हैं।

मैं कहना चाहता हूँ कि आपके साथ मैं कोई मामूली ताक़त नहीं है। एक गलत काउण्टर हुआ, दो आदमी मारे गये। आरोप मेरे नामी पर आया, पर वो तब वहाँ था ही नहीं। उसे डराया गया, ऊपर से दबाव डाला गया, उससे कबूल करवाया गया कि उसी ने यह काउण्टर किया है। मैंने पूछा तो उसने कहा कि मैंने नहीं मारा है। वो परेशान हो गया।

मैंने कहा—सुन, भरोसा रख। वो मामला ही बंद हो गया। पर ऐसा नहीं है कि कत्ल करके आ जाओ और कहो कि बचाओ। फिर तो हम अपराधी हो गये। बात यह हो—

गुरु आज्ञा ले आवही, गुरु आज्ञा ले जाहीं।

कहैं कबीर वा दास को, तीन लोक डर नाहीं॥

कुछ लोग बड़े आडू टाइप होते हैं। एक ऐसा ही साँबा में मिला, उसने बड़ा झगड़ा मचाया, कहा कि मुझे साँप ने काटा, मेरे लड़के को भी दो बार काटा। मैंने कहा कि घर के पास सफ़ाई रखो, प्याज़ काटकर रखो। उसने कहा—गुरु जी, साँप बाहर काटा।

अरे भाई, बरसात में निकल आते हैं। बारिश के कारण मेंढक हो जाते हैं तो उन्हें खाने निकल आते हैं। पर वो कहा कि साँप ने क्यों काटा, मैंने नाम लिया है। मैंने कहा कि नाम—भजन करना, भरोसा रखना। वो कहा कि सब कुछ आपपर छोड़ रखा है तो साँप क्यों काट रहा है? वो कहने लगा कि गाँव वाले कह रहे हैं कि साहिब कौन सी रक्षा कर रहा है! वो बाहर न निकले। मैंने कहा कि इसे बाहर करो। मैं आधा पौन घण्टा वहाँ आराम किया। वो बाहर भी झगड़ा करता रहा। उसने बड़ा शोर मचाया। मैंने पौन घण्टे बाद बाहर आकर कहा कि क्या बात है, क्यों शोर मचा रहे हो? वो कहा कि आपने मेरी बात नहीं सुनी। मैंने कहा कि सुनी तो है, बता भी दिया है कि भरोसा रखना और नाम करना। वो कहा कि फिर साहिब की ताक़त! वो किसी को नहीं मान रहा था, न ट्रस्टियों को, न किसी और को। मुझसे भी झगड़ा कर रहा था। कह रहा था कि नाम लिया है, साँप ने क्यों काटा जी। मैंने कहा—ओ मूर्ख के पुत्र! सुन, तू साहिब की कृपा नहीं मान रहा कि अभी तक तू भी जिंदा है और तेरा बेटा भी। बेटे को दो बार साँप ने काटा, तुझे भी एक बार काटा। अभी तक तो तुझे मर जाना चाहिए था। वो कहा—यह बात आपने पहले क्यों नहीं बताई! मैंने कहा कि तूने खुद नहीं सोचा कि साँप ने काटा तो मर जाना चाहिए था। तो कहा कि मैंने सोचा कि देवते छोड़ दिये कहीं

इसलिए तो नहीं काटा! कहा—यदि आप यह बात पहले बता देते तो इतना रोड़ा नहीं पड़ना था।

अब वो तो चाहता था कि मैं उसे ऐसा बरदान दे दूँ कि साँप काटे ही नहीं। मैं ऐसा नहीं करने वाला हूँ। किसी को पुत्तर मिला तो यह थोड़े कहा कि पुत्रवती भवः। यह काम चुपके से होता है।

एक फौज में नाई था, वो बाल काटता था। मेरी बड़ी सेवा करता था। वो चुपके से जूते भी साफ़ कर देता था, बर्तन भी माँज देता था। बाद में मुझे पता चला तो मैंने कहा कि न किया करो। वो कहने लगा कि 20 साल हो गये हैं, बच्चा नहीं है। उसने सेवा से अधीन कर लिया था। मैंने कहा दिया कि जाओ, एक बेटा हो। 35 साल पहले की बात है। मैं रात को बैठा तो गुरुदेव ने कहा कि तूने आज जुल्म कर दिया। इसकी स्त्री को तो गर्भाशय ही नहीं है। यानी यहाँ बच्चा पोषित होता है, वो स्थान ही गल चुका था, फिर कहाँ होना था! तो फिर साहिब को उसके पेट में बैठकर पूरा सिस्टम ठीक करना पड़ा था।

इसलिए यह नहीं कहता हूँ कि जाओ, सर्वकार्यसिद्धः। यह नहीं बोलने वाला। सर्प दंश न लगे, इसका आशीर्वाद भी नहीं देने वाला। चाहे हजार साँप क्यों न काटें। आपकी बात सुनता हूँ, फिर अपने कम्प्यूटर में जाकर देखता हूँ। फिर जो निर्णय लेना होता है, वो लेकर काम करता हूँ।

एक माई थी, वो मुंजी लगा रही थी। उसे साँप ने झपेटा मारा, पर काटा नहीं। उसने दिमाग़ लगाया, कुछ नहीं किया, दूर करने की कोशिश नहीं की। साँप ने सोचा कि यह मार नहीं रही है। वो चला गया। वो तभी काटते हैं, जब उन्हें लगे कि ख़तरा है। तो अपनी तरफ से भी सतर्क रहो।

यह पंथ समय आने पर बहुत बड़ा होगा, बड़ी ज़ोरदार शक्तियाँ काम कर रही हैं। छोटे बच्चे बड़े मजबूत होकर उठेंगे। समय आयेगा। कहना नहीं चाहिए, पर मुझे मुम्बई से आस्था वालों ने फोन किया, कहा कि कुछ बड़े-बड़े कथावाचक चाहते हैं कि

साहिब-बंदगी वाला प्रोग्राम न आए, क्योंकि इससे बाकी सभी के प्रवचन फीके पड़ रहे हैं, आपके प्रवचन के आगे उनका वजूद मिट रहा है। वो आनन्द जोशी साफ़-साफ़ कहा कि महात्मा कह रहे हैं कि इनका प्रोग्राम चलाओगे तो हम अपना प्रोग्राम बंद कर देंगे, क्योंकि जबसे इनका प्रोग्राम आ रहा है, हमारा प्रोग्राम फीका पड़ गया है, कोई नहीं देख रहा है।

हमने तो किसी का प्रोग्राम बंद नहीं करवाया। बाकी कह रहे हैं कि इनका प्रोग्राम बंद करो। ये कैसे लोग हैं, विचार तो करो। हमारा प्रोग्राम ही नहीं आने देना चाहते हैं। पर मैं इससे परेशान नहीं हूँ, मेरा तो पूरा प्रोग्राम लाइव चल रहा है। एक ने मुझसे कहा कि आपका लिटरेचर पढ़ना चाहता हूँ। मैंने कहा कि तुम नहीं पढ़ पाओगे। उसने सोचा कि शायद बहुत बड़ा है, कहा कि कितना है? मैंने कहा कि मेरी संगत ही मेरा लिटरेचर है, उन्हें पढ़ो। मेरा एक-एक नामी मेरी पुस्तक का एक-एक पन्ना है। पढ़ो मोहनलाल को कि वो पहले कैसा था और अब कैसा हो गया है, पढ़ो लहरसिंह को कि वो पहले कैसा था और अब कैसा हो गया है, पढ़ो जवान बच्चों को कि उनका चरित्र कैसा हो गया है!

हमारी निंदा स्वाभाविक है, यह कड़ियों की मजबूरी बन गयी है। एक सयाना अपने एरिये में खिलाफ़त करता है, मुझे लोग आकर बोलते हैं, मैं कहता हूँ कि छोड़ो, उसकी मजबूरी है। कुछ मुझे सड़क पर ऐसे घूरकर देखते हैं कि जैसे मैं उनकी दादी को भगाकर ले गया हूँ। मैं दूर से ही जान जाता हूँ और उनकी तरफ़ देखता ही नहीं हूँ।

एक ने कहा कि अपने नामी को पहचान लेते हो। मैंने कहा-हाँ। कहा कि आप तो अंतर्दामी हैं। मैंने कहा कि इसमें अंतर्दामी वाली कोई बात नहीं है। जब मेरा नामी मेरे पास आयेगा तो उसमें अपनापन होगा, प्रेम होगा, श्रद्धा होगी। उसके लिए शक्ति थोड़ा लगानी है। मैं यही चीज़ें तो नाम देते समय भी देखता हूँ। दूसरे तो देखते हैं कि माई अमीर कितनी है, पैसा देगी कि नहीं। वो ऐसे छाँटते हैं। अमीरों के लिए अलग। मैं

आँखों में देखता हूँ कि विश्वास कितना है, प्रेम कितना है, रुहानियत कितनी है। बाकी कपड़े देखकर, गहने देखकर चुन रहे हैं, हम आपकी श्रद्धा, आपके प्रेम को देखकर चुन रहे हैं।

...तो कइयों के व्यवसाय को मुझसे अंतर पड़ा। रॉजडी मोड़ पर एक पोलिटरी फार्म था, वो बड़ी निंदा करता था। मैंने अपने लोगों से कहा कि यह तो ठकुरा है, कोई सयाना भी नहीं है, फिर इसे क्या लेना है? उन्होंने कहा कि आपने तो इसका बेड़ा ही गर्क कर दिया है। इसने दो कोठियाँ बनाई अपने पोलिटरी फार्म से। पर अब इसका धंधा ही समाप्त हो गया है। कई शराबी-कबाबी इसके पास आते थे। शाम तक यह 2 हजार कमा लेता था। पर अब यह गरीब हो गया है। तो वो अपने अंदर की भडास निकाल रहा था।

इस तरह कुछ मुझतक नहीं पहुँच पाते हैं तो आपसे अपनी भडास निकालते हैं, कभी कहते हैं कि यह मुसलमान है, कभी कहते हैं कि यह तो चमार है, कभी कहते हैं कि इसने तो धर्म बदल दिया। आप ध्यान देना, खामोशी से देखना तो लगेगा कि वे खुद भी निजी तौर पर अच्छा नहीं होगा। उसने मान लिया है कि ये न मुर्गी खा रहे हैं, न सूत्रे पर, न किसी तिथि-त्यौहार पर बुला रहे हैं। जितनी गहराई से हमारे नामियों ने हमें पकड़ा है, उतना किसी भी पंथ की संगत ने अपने गुरु को न पकड़ा होगा। आप दृढ़ रहना, विरोध की चिंता नहीं करना, यह तो होगी ही। आप नाम में लगे रहना।

तू नाम सुमर जग लड़ने दे... ॥

I I I



**बड़े पुण्य से मिलत है, श्री गुरु चरण में ठौर।
सुखदायक स्थान नहीं, तीन लोक में और॥**

कर्म धर्म ते रहे उदासा

कर्म जाल में इस संसार को उलझाया गया है। सब कर्मों का लक्ष्य शरीर से है। निरंजन ने जीवों को जन्म-मरण में फँसाने के लिए ही कर्म का जाल लगाया। साहिब कह रहे हैं—

कर्म कथा अब कहूँ बखानी। जौन फाँस अटके नर प्राणी ॥
चारों खानि कर्म अधिकाई। चहूँ खानि मिलि कर्म दृढ़ाई ॥
कर्महि धरती पवन अकासा। कर्महि चंद सूर परकासा ॥
कर्महि ब्रह्मा विष्णु महेशा। कर्महिते भये गौरि गणेशा ॥
सातबार पंद्रह तिथि साजा। नौग्रह ऊपर कर्म विराजा ॥
कर्महि राम कृष्ण औतारा। कर्महि रावण कंस संहारा ॥
कर्महि ले वसुदेव घर आवा। कर्म यशोदा गोद खिलावा ॥
कर्महि ते बन गऊ चराई। कर्म ते गोपी केलि कराई ॥
कौशल्या तप कर्म जो करिया। कारण कर्म राम औतरिया ॥
कर्महि दशरथ कीन्ह उदासा। कर्महि राम दीन्ह बनवासा ॥
कर्म जाय जब धनुष चढ़ावा। कर्महि जनक सुता सिरनावा ॥
कर्म रेख ते कोई न मुक्ता। लछिमन राम करम फल भुगता ॥
कर्म हरी सीता कहँ आई। दुख सुख कर्म ताहि भुगताई ॥
कर्म सागर बाँधेउ बंध कहिया। कर्महि जल जीवन दुख सहिया ॥
रुद्र राम की कीन्ह लड़ाई। भल मिलाप हनू भेंट चढ़ाई ॥
कर्म रेख नहिं मिटे मिटाई। जिव पपील लंका होय आई ॥
कर्म रेख लंकापति गयो। लंकापति विभीषण भयो ॥
कर्म रेख सबहिन पर छाजा। कहाँ राम कहाँ रावण राजा ॥
कर्म रेख सबहिन पर होई। देखो शब्द विलोय विलोय ॥
कर्म रेख सागर बँध लीना। बिरला कोई चीन्हें चीन्हा ॥

कर्म की कहानी बताते हुए साहिब कह रहे हैं कि कर्म की फाँस में ही सभी अटके हैं। चारों खानियाँ कर्म के कारण ही मिलती हैं। कर्म के कारण ही यह धरती है, कर्म के कारण ही यह पवन और अकाश हैं, कर्म के कारण ही चाँद और सूर्य प्रकाशित हो रहे हैं, कर्म के कारण ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं, कर्म के कारण ही पार्वती जी हैं, और कर्म के कारण ही गणेश जी हैं। नौ ग्रहों पर कर्म ही विराजमान है, कर्म के कारण ही राम और कृष्णावतार हुए, कर्म के कारण ही रावण और कंस मारे गये। कर्म के कारण ही बसुदेव के घर में कृष्ण जी आए और कर्म के कारण ही यशोदा जी ने उन्हें गोद में खिलाया। कर्म के कारण ही उन्हें बन-बन गाए चरानी पड़ीं, कर्म के कारण ही गोपियों के साथ रास लीला रसाई। कौशल्या जी ने जो तप वाला कर्म किया, उसी के फलस्वरूप राम जी उनके घर में अवतरित हुए, कर्म के कारण ही दशरथ जी राम जी को वनवास देकर उदास हुए, कर्म के कारण ही राम जी ने धनुष तोड़कर सीता जी से विवाह किया, कर्म के कारण ही सीता जी का हरण हुआ, कर्म से कोई भी रहित नहीं रहा, कर्म के कारण ही सबने सुख-दुख को सहा। कर्म के कारण ही सागर पर पुल बाँधा गया। कर्म के कारण ही लंका का राजा रावण मारा गया और विभीषण राजा बना। कर्म की फाँस सब पर है, इससे परे कोई नहीं है।

साहिब कह रहे हैं—

कर्म रेख सागर बन्धयो, सौं योजन मर्याद ।

बिन अक्षर कोई न छुटे, अक्षर अगम अगाध ॥

कर्म के कारण वो सागर बँध गया, जो सो योजन लंबा था। साहिब कह रहे हैं कि बिना नाम के कोई भी इस कर्म फाँस से नहीं छूट सकता है।

सागर भव सागर की धारा । नहिं कुछ सूझे वार न पारा ॥

तहवाँ बावन अक्षर लेखा । कर्म रेख सबहिन पर देखा ॥

कर्म रेख बँधा सब कोई । खानी बानी देखि बिलोई ॥
 वेद कितेब करम कहि गाया । कर्महि को निःकर्महि बताया ॥
 सतगुरु मिले तो भेद बतावें । कर्म अकर्म मध्य दिखलावें ॥
 कर्म अकर्म मध्य है सोई । सो निःकर्म अकर्म न होई ॥
 अक्षर सागर निर्भय वाणी । अक्षर कर्म सबन पर जानी ॥
 गोरख भरथरि गोपीचंदा । कर्म फाँस सबही पुनि फँदा ॥
 नौ औ सात चौदह एक्रीसा । ब्रह्मा के चौरासी भेसा ॥
 कर्म फाँस तहवाँ लग राखा । जहाँ लग वेदव्यास कछु भाखा ॥
 दस औ द्वादस कर्म बखाना । जिन जाना तिनहीं पहिचाना ॥
 कर्म अकर्म भूल जो करई । गहे मूल सो कर्म न परई ॥
 अक्षर सागर मूल भण्डारा । अक्षर मूल भेद उजियारा ॥
 अक्षर मूल भेद जो जाने । कर्मी होय निःकर्म बखाने ॥

संसार रूपी सागर की धारा में कहीं भी किनारा दिखाई नहीं देता है । जहाँ तक बावन अक्षर की बात है, सब जगह कर्म की फाँस है । कर्म की फाँस में सब कोई बँधा है । साहिब कह रहे हैं कि सब खानियों को एक-एक करके देख लिया, सब कर्म की फाँस में बँधे हैं । वेद-कितेब भी कर्म की बात ही कर रहे हैं और कर्म को ही निःकर्म बता रहे हैं ।

पर सद्गुरु के मिलने पर ही भेद मिलता है । वो कर्म और निःकर्म के मध्य की स्थिति बताता है । कर्म और अकर्म के मध्य की बात कर रहे हैं । गोरखनाथ, गोपीचंद आदि सभी कर्म की फाँस में बँधे हैं ।

कर्म कथा सुनाते हुए साहिब आगे कह रहे हैं—

सतयुग तप कीन्हे रघुराजा । कारन कर्म नन्द घर गाजा ॥
 एक नारि रघुवर दुख पावा । सोलह सहस गोपी निरमावा ॥
 कारन कर्म केलि भव कीन्हा । कुंज कुंज गोपिन सुख दीन्हा ॥
 जहाँ तहाँ गोरस जाय चुरावा । जहाँ जहाँ कर्म तहाँ ले खावा ॥

कर्म कंस ठीका आयो जबहीं । मारन कृष्ण विचारयो तबहीं ॥
 कर्म पूतना भेष बनायो । कर्म पयोधर कृष्ण लगायो ॥
 कर्म कारण जो तहाँ सिधारा । कारन कर्म पीव विषधारा ॥
 मारि तासु कीन्ही गति चारा । कर्म फाँस बोयो संसारा ॥
 कर्म इंद्र बरस्यो दिन साता । कर्म कृष्ण गिरि लीन्यो हाथा ॥
 कर्महि मारि विध्वंस जो कीना । कर्म फाँस सबही आधीना ॥
 कुबजा कछु कर्म जो कीन्हा । कारन कर्म कृष्ण गति दीन्हा ॥
 कर्म पाताल कालेश्वर नाथा । साँवर अंग भयो तेहि साथा ॥
 अश्वमेध यज्ञ करत बलि राजा । कर्म ते जाय पाताल विराजा ॥
 कर्महि बावन रूप बनाया । बलि राजा पै दान दिवाया ॥
 कर्म अहूठ नापि पग लीन्हा । तीनों पग तीनों पुर कीन्हा ॥
 आधा पाँव कर्म अधिकारी । बाँधि नृपति पातालहिं डारी ॥
 जहँ लगि जीव जंतु उत्पानी । तहँ लगि कर्म राय परबानी ॥
 कर्म फाँस ते कोई न छूटे । कर्म फाँस सबहिन घर लूटे ॥

सतयुग में रघु नामक राजा ने तप किया था, जिसके फलस्वरूप वे अगले जन्म में नन्द हुए और उनके घर में कृष्ण जी आए। फिर विष्णु जी की रामावतार में एक पत्नी थी और नारद जी के शाप के कारण उन्हें नारी के विछोह का दुख सहना पड़ा था, पर कृष्णावतार में उनकी सोलह हजार रानियाँ हुईं। कर्म के फलस्वरूप ही उन्होंने संसार में गोपियों के साथ क्रीड़ा की। कर्म के अनुसार ही जब कंस का मरने का समय आया तो कृष्ण जी ने उसे मारने का विचार किया। कर्म के कारण ही पूतना ने भेष बनाकर कृष्ण को अपने ज़हर भरे पयोधर से दूध पिलाना चाहा और कर्म के कारण ही उसे मारकर कृष्ण ने उसे गति प्रदान की। कर्म के कारण ही इंद्र सात दिन लगातार कोप के कारण भारी वर्षा किया और कर्म के कारण ही कृष्ण जी ने पर्वत को उठा लिया था। कुबजा ने जो

कर्म पिछले जन्म में किये थे, उसके कारण ही कृष्ण ने उसे गति दी। कर्म के कारण ही कृष्ण जी ने पाताल में जाकर कालेश्वर नाग को नथा और उनका रंग साँवला हो गया। अश्वमेध यज्ञ करने वाले बलि राजा को कर्म के कारण ही पाताल में जाना पड़ा। कर्म के कारण ही विष्णु जी ने बावन रूप धारण करके उससे दान में सब कुछ छीन लिया। कर्म के कारण ही विष्णु जी ने तीन पग में सब कुछ नाप लिया और कर्म के कारण ही आधा पग उसके शीश पर रख दिया और राजा बलि को बाँधकर पाताल में भेज दिया। साहिब कहते हैं कि जहाँ तक जीव जंतुओं की सृष्टि है, सबको कर्म की फाँस लगी है। कर्म फाँस से कोई भी छूटा हुआ नहीं है, कर्म फाँस ने सबको लूट लिया है।

साहिब कह रहे हैं—

जो कुछ कर्म जगत में करई। करि करि कर्म बहुरि भव परई ॥
 एक न होय यज्ञ व्रत ठाना। एक न पाप पुण्य पहचाना ॥
 एक कर्म कुल लीन्ह उठाई। कर्म अकर्म न जानै भाई ॥
 एक छापा और तिलक बनावै। पहिरि मेखला साधु कहावै ॥
 वैष्णव होय करे षट् कर्मा। वेद विचार सदा शुचि धर्मा ॥
 कथा पुराण सुनै चितलाई। कर्महिं सुमिरै बहु विधि भाई ॥
 विष्णु सुमिरि तब बहु विधि कियो। सो निःकर्म विष्णु नहिं भयो ॥
 कर्म की डोरि बँधा संसारा। क्यों छूटे उतरे भव पारा ॥
 एक अभंग एकादशी करई। तन छूटे वैकुण्ठहिं तरई ॥
 यह वैकुण्ठ न स्थिर होई। अंत कर्मगति परलय सोई ॥
 करै कर्म वैकुण्ठहि जाई। कर्म घटे भव जल फिरि आई ॥
 योगी योग कर्म को साधे। किरिया कर्म पवन आराधे ॥
 योगी कर्म पवन को किरिया। भुगतै कर्म देहु पुनि धरिया ॥
 सन्यासी जो बन बन फिरही। होय निःकर्म कर्म फिर परही ॥

जीयत दग्ध देह को करई । जटा बढ़ाय व्यसन परिहरई ॥
 कोई नग्न कोई वज्र कछोटा । भरतम फिरै सहै पग ढोटा ॥
 राजद्वार पावै औतारा । भुगतै कर्म अकर्म व्यवहारा ॥
 पण्डित जन सब कर्म बखानी । नख शिख कर्म फाँस अरुझानी ॥
 कर्म धर्म की युक्ति बतावे । दान पुण्य बहु विधि अस्थावे ॥
 वज्र दान ले जन्म गँवावे । होई ऊँच बहु भार लदावे ॥
 एक जो करे बरत अवतारा । होइहै शूकर स्वान सियारा ॥
 शूकर श्वान हो कर्म जो भुगता । बिन निःकर्म न होइहैं मुक्ता ॥

साहिब कह रहे हैं कि जो भी मनुष्य जगत में कर्म करता है, उन्हीं कर्मों के कारण बार-बार भवसागर में आता है । कोई यज्ञ, व्रत आदि कर रहा है, कोई भी पाप-पुण्य की पहचान नहीं कर रहा है । कोई भेष बनाकर अपने को साधु कहलवा रहा है, कोई वैष्णव होकर षट् कर्मों में लगा है, कोई वेदानुसार विचारकर धर्म का पालन कर रहा है, कोई विष्णु जी की भक्ति कर रहा है । कर्म की डोरी में सारा संसार बँधा है, फिर यह जीव छूटकर पार कैसे हो सकता है ! कोई वैकुण्ठ जाने के चक्कर में है, पर यह नहीं पता है कि वैकुण्ठ भी स्थिर नहीं है, कर्म समाप्त होने पर फिर वहाँ से भवसागर में आता है । योगी योग कर्म करता है, पवन की साधना करता है, पर कर्मों का फल भोगकर वो भी शरीर धारण करता है । सन्यासी, जो कि बन-बन फिरता है, अपने को निःकर्मों बताता है, वो भी तो कर्म कर रहा है । वो तो जीते जी शरीर को कष्ट दे रहा है, जटा बढ़ाकर व्यसनों को त्यागने की कोशिश में लगा है । कोई तो नग्न होकर घूम रहा है, कोई कठोर धोती पहनकर घूम रहा है और सब सह रहा है । सभी कर्मों की ही बात कर रहे हैं, नख से शिख तक कर्म में उलझे हैं । सब इस तरह कर्मों में ही उलझे हैं, पर निःकर्म हुए बिना तो मुक्त नहीं हुआ जा सकता है ।

सब वैकुण्ठ जाने की बात करते हैं। वैकुण्ठ के विषय में साहिब कह रहे हैं—

कहु वैकुण्ठ कहाँ रे भाई ॥

कितना ऊँचा कितना नीचा केती है चौड़ाई ।

अटकल पच्चो भरमत डोलें कौन महल को जाही ॥

जिस साहिब ने किया पसारा ताको चेतत नहीं ।

करत फिरे सगरी बद फेली चारों गई भुलाई ॥

कोई कोई पहुँचे ब्रह्म लोक को धरि माया ले आई ।

आन पड़े यम काल के फँदे फिरि फिरि गोता खाई ॥

साहिब सतर्क कर रहे हैं कि वहाँ जाने के बाद भी कल्याण नहीं है, इसलिए वहाँ जाकर मुक्त होने की बात तो अटकल पच्चो वाली है। यहाँ तक कि ब्रह्म लोक में जाने के बाद भी माया वापिस इस संसार में पकड़कर ले आयेगी और फिर बार-बार इस संसार-सागर में गोते खाते फिरोगे।

साहिब आगे कह रहे हैं—

शब्द भेद निःशब्द बताओ । किर निःकर्म हंस मुक्ताओं ॥

निरालंब अवलंब न जाने । शब्द निरंतर भेद बखाने ॥

पाप पुण्य की छोड़े आशा । कर्म धर्म ते रहे उदासा ॥

रहे उदास नाम लौ लाई । तत्वभेद निःतत्व समाई ॥

तीरथ व्रत के निकट न जाई । भ्रम भूत को दर्द बडाई ॥

सुख संपत्ति नहीं विपत्ति विचारे । काम क्रोध तृष्णा परचारे ॥

क्रिया कर्म आचार बिसारे । होय निःकर्म कर्म निरवारे ॥

सो ग्रहें जो निग्रह काया । अभि अंतर की मेटै माया ॥

शील स्वभाव शरीर बसावे । अंतरं स्थिर ध्यान लगावे ॥

ब्रह्म अग्नि मन में परजाले । ताको विष्णु चरन परछाले ॥

गहै तत्व निःतत्व विचारा । काम क्रोध को करै अहारा ॥
 सहज योग सो योगी करई । कर्म योग कबहुँ नहिं परई ॥
 धन योवन की करै न आशा । कामिनि कनक से रहे उदासा ॥
 चहुँ दिशि मंसा पवन ककोले । ज्ञान लहर अभ्यंतर डोले ॥
 उनमुनि रहे भेद नहिं कहई । तत्वभेद निःतत्वहि लहई ॥
 जो कोई आय अग्नि होय दहई । आप नीर होय नीचा बहई ॥
 मन गयन्द गुरुमत से मारा । गुरु गम लूटे ज्ञान भण्डारा ॥
 शब्द होय से सन्मुख जूझै । भोंदू शब्द भेद नहिं बूझै ॥
 दुखिया होय रैन दिन रोई । भोगी भोग करे सुख सोई ॥
 दुख सुख भोग सोग सम जाने । भली बुरी कछु मन नहिं आने ॥
 भली बुरी का करे सो त्यागा । निश्चय पावै पर बैरागा ॥
 सोंगी अक्षय रैन दिन बाजै । सिद्ध साधु तहँ आसन छाजै ॥

साहिब कह रहे हैं कि मैं निःशब्द शब्द का भेद बताकर हंस को कर्म फाँस से मुक्त कर देता हूँ। वो फिर पाप-पुण्य की आशा छोड़कर कर्म धर्म से उदास ही रहता है। वो फिर नाम में ही लौ लगाकर उसी में समाए रहता है। तीर्थ, व्रत आदि कर्मों से वो परे ही रहता है, उसका सारा भ्रम समाप्त हो जाता है। वो फिर सहज योग ही करता है, कर्म योग नहीं करता। धन और योवन की आशा को त्यागकर कनक और कामिनी के प्रति उदास ही रहता है। वो मन को मारकर दुख सुख से परे हो जाता है और उसके दिल में वैराग्य उत्पन्न हो जाता है।

कर्म फाँस छूटे नहीं, केतौ करो उपाय ।

सतगुरु मिले तो ऊबरे, नहिं तो परलय जाय ॥

सद्गुरु के बिना कोई कितना भी प्रयास कर ले, कर्म की फाँस से नहीं छूट सकता है।



कुरीतियों से बचो

अगर हम निष्पक्ष होकर साहिब की शिक्षा पर चिंतन करें तो एक बात मिलती है कि कुछ उन्हें आलोचक कहते हैं, उनकी धारणा है कि उन्होंने आलोचना की है। अगर चिंतन करें तो एहसास होगा कि उनकी वाणी आलोचना न होकर चेतावनी है। उनकी वाणी में चेताने वाले शब्द हैं। जनसाधारण में आध्यात्मिक चेतना जगाई। उनकी शिक्षा सर्वांगीण है, सभी पहलुओं पर बड़ी बारीकी से बात की है। उनकी वाणी किसी जाति, धर्म या बिरादरी के दायरे में नहीं है, पूरी मानवता के लिए है। समाज सुधार में उन्हें बड़ा उत्तम स्थान मिला।

अगर हम चिंतन करें तो वर्तमान में धार्मिक कुरीतियाँ समझ आने लग जायेंगी। हम क्यों उन्हें नज़रअंदाज कर रहे हैं? बुद्धिजीवी वर्ग को चाहिए कि चिंतन करे, वास्तविकता को पहचाने। साहिब ने कुरीतियों पर ही प्रहार किया है, समाज को उनसे सतर्क किया है। धर्म में जो कुरीतियाँ पनपीं, उनसे समाज को सतर्क करने का प्रयास किया। अंधश्रद्धा तो इस सीमा तक पहुँच गयी है कि कुछ कहते नहीं बनता। **मुझे एक भक्त ने अखबार का टुकड़ा दिखाया, जिसमें लिखा था 11 हजार रुपये में मुक्ति की गारंटी। कोई कार्रवाही नहीं होने वाली है ऐसे लोगों पर। क्योंकि नेता लोगों तक पहुँच है। उन्हीं की प्रेरणा से कर रहे हैं। जैसे बाजार में बाकी चीज़ें बिक रही हैं, ऐसे ही मुक्ति भी बिकने लगी है। यानी आने वाले समय में गरीबों के लिए मुक्ति का स्थान अब नहीं होगा। पहले तो सुना था कि पाप कटेंगे पैसे से, पर अब बात मुक्ति तक भी आ गयी है। और लोग भी लगे हैं। बुकिंग हो रही है। जिसके पास पैसे हों, वो मुक्ति को खरीद सकता है। रेडिमेड मुक्ति मिल रही है। ऐसी चीज़ों पर ही साहिब ने आपेक्ष किया। आप सोचें कि वर्तमान में भक्ति क्षेत्र कितने अंधकार में पहुँच गया है। जीवन जीने की कला 500 रुपये में सिखाई जा रही है। जैसे बाज़ीगर या जादूगर एक तमाशा करके धन-संग्रह करते हैं, पर कम-से-कम**

वो कहते हैं कि हमारा धँधा बाज़ीगरी है, जादूगरी है, हम तमाशा करके पैसे अर्जित करने आए हैं। धर्मवेत्ता तो धर्म का आवरण लेकर पैसा लूटने में लगे हैं। समाज चिंतन करे कि यह धन कमाने की कला है या फिर जीवन जीने की! मेरे विचार से यह धन कमाने की कला है।

कुछ अपने ई. मेल के माध्यम से दान माँग रहे हैं, कुछ ड्राफ्ट भेजने की सलाह दे रहे हैं। जो ज़्यादा दान देता है, उसका नाम भी बोला जाता है कि महा दानी हैं ताकि ऐसे कई महादानी मिल जाएँ, जो उनकी पैसे की भूख को मिटा सकें। विचार तो करो कि ये महात्मा हैं या भिखमंगे। गुरु नानक देव जी के पास बड़े-बड़े थे, पर किसी से पैसा नहीं लिया। रविदास जी के यहाँ बड़े-बड़े लोग आते थे, पर किसी से कुछ नहीं माँगा, न ही लिया। जो जूतियाँ रोज़ गढ़ते थे, एक दान में दे देते थे और एक बेचकर रोटी खाते थे। एक दिन उनके पास एक सिद्ध आया, कहा कि यह पारस पत्थर ले लो, आप बहुत गरीब हैं, कुछ दिन बाद मैं ले जाऊँगा। रविदास जी ने कहा कि मुझे नहीं चाहिए। उसने जोर दिया कि ले लो, आपके पास कुछ नहीं है। रविदास जी ने कहा कि मुझे ज़रूरत ही नहीं है। जब वो विनती करता रहा तो अंत में रविदास जी ने कहा कि रख दो, अपने काम में लगे रहे। उसने झोंपड़ी में एक जगह रख दिया और चला गया। कुछ महीने बाद वो आया, देखा कि रविदास जी वहीं अपनी झोंपड़ी में जूतियाँ गाँठ रहे हैं। उसने सोचा था कि इन्होंने बड़ी कोठी बना ली होगी। उसने पूछा कि वो पारस पत्थर कहाँ है? रविदास जी ने कहा कि कौन सा पारस पत्थर! उसने कहा कि मुझे नहीं पता था कि आप झूठ भी बोलोगे। मैं आपको पत्थर देकर गया था। रविदास जी ने कहा कि देख लो, जहाँ रखा था तुमने, वहीं पड़ा होगा, मुझे नहीं पता है। उसने देखा तो वहीं पड़ा था। यानी रविदास जी ने देखा भी नहीं था। पर कलयुग के महात्मा तो पैसे के बिना बात ही नहीं करते हैं।

समाज चिंतन क्यों नहीं कर रहा है इस पर। साहिब की वाणी चेताने वाली है। मानव को आगाह किया, सतर्क किया कि इनसे बचो। कहा कि यह भक्ति नहीं है। किसी भक्ति की निंदा तो की नहीं, सतर्क किया।

आए दिन नये-नये विवरण सुनने को मिलते हैं। आलोचना होती है, निंदा होती है तो कई बार कुछ से पूछता हूँ कि कृपा करके बताओ तो सही कि क्यों कर रहे हो? मैं 24 साल नौकरी करके आया, उग्रवादी कहाँ से हुआ! सैनिक जब भरती होता है तो पूरी जाँच होती है, पटवारी सब कुछ लिखता है कि फलाने का पुत्र है, फलानी जगह रहता है। फिर एस. पी., डी. सी. भी हस्ताक्षर करता है। फिर शंका कहाँ से आई? नहीं, बात यह है कि वो टीम बड़ी ख़तरनाक है।

धर्म में कुरीतियाँ हैं सावधान रहें। पुलिस यह बोलती फिर रही है कि किसी के हाथ के चीज़ न खाएँ, उसमें ज़हर हो सकता है, खिलाकर कोई लूट सकता है आपको। क्यों कह रही है। सरकार अपना कर्तव्य मान रही है कि नागरिकों को कोई लूट न पाए। इस तरह एक महात्मा समाज के लिए जीता है, उन्हें सतर्क और सावधान करता है, धर्म की यथार्थ परिभाषा की ओर ले चलता है। वो निंदा नहीं करता। पर जब भी ऐसा महात्मा आता है जो निष्काम भाव से समाज की सेवा करता है तो समाज उसके साथ बुरा व्यवहार करता है। साहिब जी को 52 बार सज़ाए मौत दी गयी, गुरू नानक देव जी को जेल में भेजा गया, सुकरात जी को ज़हर दिया गया, तुलसीदास जी को भी अकबर ने जेल में भेजा, मीरा बाई को ज़हर दिया गया, शिवली को सूली पर चढ़ाया गया। अगर इतिहास को देखें तो पता चलता है कि किसी के साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं किया गया। बाद में दुनिया उन्हें पूजने लगती है, उनके स्थान पर जाकर माथा टेकती है। यानी हमारी रस्म बन गयी है कि हड्डियों की पूजा करनी है।

एक माई मेरी नामिन है, वो भक्तिन भी है, समाज सेवा की भावना थी तो मुझसे कहा कि मैं चुनाव लड़ना चाहती हूँ। मैंने कहा कि नहीं जीत सकोगी, मत लड़ो। उसने कहा कि कैसे नहीं लड़ूँ, गाँव में एक गुण्डा है, वो मार-पीट करता है, माइयों-बहनों को छेड़ता है, आतंक फैलाता है, यदि वो जीता तो समाज को पीड़ा देगा, मैं लोगों के लिए आगे आना चाहती हूँ, लोग कह रहे हैं कि आप खड़े हों, हम आपको वोट डालेंगे। मैंने समझाया कि नहीं खड़े हो, हार जाओगे। उसने कहा

कि नामांकन पत्र भी भर दिया है। जब उसने कहा कि नामांकन पत्र भी भर दिया है तो मैंने कहा कि फिर आजमाकर देख ले। माता कर्मठ थी, वो परमार्थी थी, गरीबों की सहायता करती थी। वो रिटायर टीचर थी। जब चुनाव के बाद मेरे पास आई तो उदास थी, कहा कि गुण्डे को जिता दिया, कैसे लोग हैं। मैंने कहा कि आपको पब्लिक ने नहीं हराया, यह गुण्डों का हाथ था। बात यह थी कि बाकी गुण्डों ने कहा कि यदि यह जीत गई तो माता सख्त है, हमारा जीना हराम कर देगी। वो सब इकट्ठा हुए और बदमाश का प्रचार करने लगे और माई के खिलाफ भड़काने लगे कि वो तो बूढ़ी हो चुकी है, क्या कर सकती है! सब उसके कार्यकर्ता बन गये, रातों में घर-घर जाकर सबको भटकाने लगे। उन्होंने सोचा कि यह एक बार जीते तो सही। माई ने तो कहा था कि गुण्डागर्दी ज्यादा हो गयी है, मैं सेवा करूँगी, मुझे वोट दो, पब्लिक को समझाया, पर बूथ कैपचरिंग हुई। यह पाँच तरह से होती है। इसलिए अच्छे लोग कम जीत पाते हैं।

बूथ कैपचरिंग में एक तो जाति-पाति के नाम पर होती है, दूसरी जाली वोट डाले जाते हैं, तीसरा जिस गाँव या इलाके में पता हो कि कोई वोट नहीं डालने वाला हमें, वहाँ एक आदमी जाकर कहता है इतनी देर हो गयी, यहाँ किसी ने कुछ नहीं किया, हम नहीं डालने जायेंगे वोट। सब कहते हैं कि हाँ, हम नहीं जायेंगे। चौथा डण्डे लेकर खड़े हो जाते हैं, सबको अपने साथ मिला लेते हैं। फिर पाँचवाँ बंदूकें लेकर खड़े हो जाते हैं। ऐसे वोट डाले जाते हैं।

तो वो माई आई, हताश थी। मैंने कहा कि तुझे समझाया भी था, इशारा दिया था। ऐसे ही जब कोई महात्मा बदलाव लाना चाहता है तो वो तपका समाज को भटकाता है, कहता है कि वहाँ नहीं जाना, वो तो धर्म ही बदल देता है, वो तो बेकार है, देवी-देवताओं को छुड़ा देता है। दुनिया को बुद्ध बनाकर सत्य से परे किया जाता है।

एक मिस्त्री है, उसने कहा कि चारों तरफ आपकी निंदा देख मैं दुखी हो गया हूँ, अगर मेरी इतनी निंदा होती तो घर से बाहर नहीं निकल सकता था, आत्म-हत्या ही कर लेता। मैंने कहा कि मैं तो 24 साल फौज

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरू सत्य धर्मदासा ॥

87

में नौकरी किया, देश की सेवा की, फिर समाज की सेवा की, कोई ऐसे काम भी नहीं किये, जिससे समाज को कष्ट पहुँचे। कोई धन भी इकट्ठा नहीं किया, ऐसा कोई काम नहीं किया, रहनी सामने है। 10 साल में 100 से ज़्यादा आश्रम बना दिये, चंदा भी नहीं किया। आखिर समाज का क्या लिया! मैंने कइयों का नशा छुड़ा दिया, लाखों को कौवे से हंस बना दिया। कोई महात्मा आता है तो करोड़ों का पैसा ले जाता है, पर मैं यह काम नहीं किया। मैंने किसी का धर्म भी नहीं बदला। इसलिए मैं दुखी नहीं होता हूँ, परेशान नहीं होता हूँ। मैं जानता हूँ कि यह गलत हो रहा है। दूसरी बात है कि मेरा कोई घर-परिवार नहीं है, ऐसे नहीं करूँगा किसी को कुछ दूँगा। निष्पक्ष हूँ। सेवा ही मेरा लक्ष्य है। इसलिए मेरे हौसले पर हमला करने के लिए निंदा कर रहे हैं। पर मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। मुक्का मारने वाला खाने की भी क्षमता रखता है।

मैं रात-दिन लगा हूँ, लोगों को चेतन कर रहा हूँ। भक्ति के सिद्धांत भी कोई खराब नहीं बोल रहा हूँ, फिर मामला क्या है? समाज देखे तो सही मेरे लोगों को। मजाल है कि कोई झूठ बोले, मजाल है कि कोई घूस ले। मन-वचन-कर्म से हम किसी को सता भी नहीं रहे हैं। चंदे वाला काम भी नहीं कर रहे। निंदा वाला पवाइंट क्या है? जब मैं सतर्क कर रहा हूँ कि धर्म में दूषण आ गया है, सतर्क हो जाओ तो पाखण्डी मचल रहे हैं।

आप अपने बच्चों को सावधान करते हैं कि देखो, वो लड़का चोर है, उसके साथ मत खेलना, फलाना लड़का आवारा है, उसके साथ मत घूमना। इस तरह मैं भी आपको सतर्क कर रहा हूँ कि कोई भूत-प्रेतों के नाम पर धन ले रहा है, कोई जादू-टोने के नाम पर आपको ठग रहा है, कोई ज्योतिष-विद्या के नाम पर आपको भटका रहा है, आप सतर्क हो जाओ। मैं आपको सतर्क कर रहा हूँ कि चंदा मत दो, भूत-प्रेत मत मानो, क्योंकि इसमें आपका हित नहीं है। यह बात शास्त्रानुकूल भी है, कोई जाहिल बात नहीं बोल रहा हूँ।

समाज चिंतन क्यों नहीं कर रहा है! आप सड़क किनारे एक आदमी को देखते हैं। वो अपने साथ एक पिंजरे में तोता लिए हुए होता है। वो

आपका भाग्य बताता है। तोता पिंजरे के बाहर आता है, एक लिफ़ाफ़ा उठाकर अंदर चला जाता है। तोते वाला वो लिफ़ाफ़ा उठाता है, उसमें एक पर्ची होती है, जिसपर कुछ लिखा होता है। आप कहते हैं कि यह तोता महात्मा है, हमारा भविष्य बता रहा है। तोता क्यों नहीं उड़ा, आप नहीं सोचते हैं। समाज सोच नहीं रहा है, तभी तो भटक रहा है।

उस तोते को शिकारी ने अफ़ीम की आदत डाली। वो आदी हो गया। जब शिकारी ने देखा कि वो आदी हो चुका है तो एक दिन उसे उड़ा दिया। वो तोता जंगल में चला गया, सोचा कि आज़ाद हूँ। वहाँ फल आदि तो खाए, पर जो नशे की आदत हो चुकी थी, वो कहीं नहीं मिला, इसलिए वो वापिस उस पिंजरे में आ गया। अब शिकारी जानता है कि यह उड़ने वाला नहीं है। वो एक लिफ़ाफ़ा उठाता है, आप सोचते हैं कि हमारा भविष्य बता रहा है। वो कितना तंग है, आपने नहीं सोचा।

जैसे रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर लगी मशीन से आप अपना वज़न देखते हैं तो उसमें से एक चिट आती है, जिसपर आपका वज़न होता है, साथ में कुछ लिखा होता है। उसपर लिखा होता है कि आप बड़े शरीफ़ हैं, आप किसी का दिल नहीं दुखाते हैं। वो भाषा भी बड़ी सिलेक्ट की होती है, बड़ी चालाकी से लिखा होता है। चाहे स्त्री हो या पुरुष, वो दोनों से लिए समान भाषा का इस्तेमाल किया होता है। यह नहीं लिखा होता कि आप बड़ी खूबसूरत हैं। यह लिखा होगा कि आप बड़े खूबसूरत हैं। यह स्त्री-पुरुष दोनों के लिए आ गया। यह नहीं होगा कि आप बड़ी अच्छी हैं। यह लिखा होगा कि आप बड़े अच्छे हैं। यह भी दोनों के लिए आ गया। यानी बड़ी चालाकी से लिखा होता है। मैं कहना चाहता हूँ कि यह सब आपको खुश करने के लिए लिखा होता है। आप कुत्ते को भी बिठा देना, उसके लिए भी एक चिट आयेगी, उसमें भी लिखा होगा कि आप बड़े शरीफ़ हैं। कुत्ता कौन सा शरीफ़ है! आप पत्थर को रखना, उसका भी वज़न आयेगा और उसके लिए भी चिट आयेगी कि आप बड़े सहनशील हैं। पत्थर कौन-सा सहनशील है!

एक माई ने कहा कि एक बाबा है, उसके पास जाने से संतान की उत्पत्ति होती है। होता क्या है कि वो अपने ऐजेंट फैलाता है, भीड़ जुटाते

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

89

हैं। कुछ ऐजेंट भीड़ में घूम-घूम कर बताती हैं कि उनकी गोद में जो बच्चा है, वो बाबा जी का प्रसाद है। कोई हंटर बाला बाबा जी हैं। कोई भी बीमारी हो, वो हंटर मार-मारकर बुरा हाल कर देता है, पर सब सहते हुए भी लोग लगे रहते हैं उसके पास, डॉ० के पास नहीं जाते। कुछ कहते हैं कि छपड़ी में नहाओ तो कल्याण है। लोग भी बड़ी दूर-दूर से आते हैं। कहीं किसी मूर्ति को पसीना आने लगता है, कहीं पूर्णिमा के दिन चंद्रमा में गुरु जी दिखने लगते हैं। यह सब चालाकी है, धोखा है।

एक शिवलिंग था, वो ऊपर चढ़ता जा रहा था। लाखों का चढ़ावा चढ़ता था। उसे सी. आई. डी. ने पकड़ा। बात यह थी कि नीचे एक खड्डा था, वहाँ सूखे चने रात को भिगोकर रख देते थे, सुबह चने फूलते थे तो वो ऊपर आता जाता था। वहाँ तो सी. आई. डी. की टीम ने पकड़ा, पर ऐसे लोग आसानी से पकड़े नहीं जाते हैं, उनका पकड़ने वालों से भी संपर्क होता है।

समाज खुद भी इन अंधविश्वासों में फँस जाता है। इसका कारण यह है कि वो सत्य-भक्ति से परे है। इसी का लाभ उठाकर पाखण्डी उसे और अधिक फँसाते जाते हैं।

17-07-2007 को टी. वी. पर एक खबर आई, एक बाबा हिमालय से आकर एम्स परिसर में पहुँचकर लोगों का भभूत से इलाज कर रहा है, तंत्र-मंत्र सिखा रहा है, वो सरकार से श्मशान भी माँग रहा है ताकि वो मरीजों का इलाज कर सके। वो रात-2 भर लोगों को तंत्र-मंत्र पढ़कर सुनाता है और फिर गाँजा पीकर मस्त हो जाता है। उसका कहना है कि हिमालय से तपस्या करके आया है, उसका मकसद है कि दिल्ली में एक मठ बनाए और फिर लोगों का इलाज करे। सीधा-2 यह नहीं कहता कि भिखमँगा हूँ, कुछ दे दो। गाँजे के पैसे ही माँग ले, मिल जायेंगे कई मूर्खों से। पर नहीं, वो तो नशे में डूबना चाहता है, इसलिए बड़ी जमीन चाहता है, ताकि बहुत सारे लोग आएँ और बहुत सारा पैसा हो और बहुत सारा गाँजा पी सके, शराब पी सके, जितनी मौज-मस्ती हो सके, कर सके।

ऐसे ही तो महात्मा लोगों ने सरकारी जगहों पर कब्जे किये हुए हैं। कोई कहीं से तपस्या करके आता है तो कोई कहीं से। फिर माँगने वाला काम शुरू कर देते हैं। फिर तो दाता बन जाना चाहिए, पर वो तो भिखमँगे बन जाते हैं। नेता लोगों को भी ऐसे लोगों की तलाश रहती है ताकि वे लोगों को मूर्ख बनाने के बाद उनका उल्लू भी सीधा कर सकें, उन्हें अपने लोगों से वोट दिला सकें। और यही सब तो हो रहा है।

एक जगह ख़बर मिलती है कि एक लड़की ने बरसात होने के लिए व्रत रखा है। कुछ दिन बाद जब संयोग से बादल आकाश में छाते हैं तो लड़की की जय-जयकार होने लगी। कहीं ख़बर मिलती है कि भगवान ने फिर दूध पीना शुरू कर दिया है तो शुरू हो जाते हैं। विचार तो कोई करता ही नहीं है। ऐसे ही एक पेड़ पर कहीं गणेश जी की आकृति दिखती है तो एक पर हनुमान जी की आकृति दिखाई देती है। बस, फिर क्या होना बाकी रहे! लोगों की भीड़ सुबह से शाम तक जुटने लगती है और लाखों का चढ़ावा चढ़ने लगता है। तब तो आकाश में बादल भी विभिन्न तस्वीरें बनाया करते हैं। वहाँ कोई चढ़ावा नहीं चढ़ाया जाता। कहीं किसी को सपना आता है कि किसी मंदिर के पास जमीन में मूर्तियाँ गढ़ी हुई हैं तो वो निकाली जाती हैं और लोग लग जाते हैं पूजने। कहने का भाव है कि यह सब क्या है! इसी से तो संत समाज को सतर्क करता है।

तो संत ने समाज को सतर्क करना ही है। निंदा की चिंता नहीं करता वो। मैं अपने देश में बड़े अच्छे मत-मतान्तरों को देख रहा हूँ, जो अन्तर्मुखी बात कर रहे हैं, पर समस्या है कि उनके लोग वो काम भी कर रहे हैं, जो नहीं करने चाहिए। वो जादू, हत्या आदि में भी उलझे हैं, साथ में बोल रहे हैं कि हमारा संत मत है। नहीं, यह ठीक नहीं है। यह गुरु की करनी है कि शिष्य को समझाओ कि कुरीतियों से बचो।

खेलना हो तो खेलिये, पक्का होकर खेल।

कच्ची सरसों पेर कर, खड़ी भया न तेल॥

समाज को भ्रमित करके धन लिया जाता है। कोई जादू-टोने के नाम पर, कोई किसी के नाम पर चंदा ले रहे हैं। महापुरुष की पहली मजबूरी है

कि वो कठिन मेहनत करता है, समझाता है कि कुरीतियों से बचो। अगर नहीं बचा तो यह भक्ति नहीं होगी। यही हम कह रहे हैं कि टोना नहीं करना, चंदा नहीं करना, क्योंकि ये भ्रमित कर रहे हैं। यह नेटवर्क मामूली नहीं है, मजबूत है। यह अभी से एक्टिव नहीं है, बड़ी पहले से है। ऐसे नेटवर्क ने महापुरुषों को पीड़ा दी है, उनकी निंदा की है।

सतर्क होना ही पड़ेगा। पुलिस वाला संरक्षक है, पर उसे सख्त होना उसकी मजबूरी है। सरकार ने जेल क्यों बनायी? क्या नागरिकों को जेल में बंद करना चाहती है? वो तो सुविधा देना चाहती है, अस्पताल खोलना चाहती है। फिर जेल किसलिए है? वो भी सुरक्षा के लिए है। जो जनमानस को कष्ट दे रहा है, समाज को ऐसे आतताइयों से बचाने के लिए है। इस तरह संत सतर्क करने के लिए समझाता है, डाँटता भी है।

वो टीम आपका विश्वास तोड़ना चाहेगी, अगर टोना-टोटका किया तो भक्ति में नुकसान हुआ। भरोसा टूट गया। अगर भूत को मानने लग गये तो आपने मानना शुरू कर दिया कि गुरु की ताक़त आपकी रक्षा नहीं कर रही है। आपकी भक्ति को क्षती पहुँचेगी।

आज भक्ति नज़र नहीं आ रही है। एक लड़की ने नाम लिया, उसके सास-ससुर दूसरे पंथ से थे। 10 साल से उसे संतान नहीं थी तो उसे तंग करने लगे, 50 जगह दिखाया। लड़की की मामी नामी थी, वो उसे चुपके से समझाकर मेरे पास लाई। उसने नाम लिया। वो अरनिया साइड की है। लड़की को 2 साल बाद लड़का हुआ। अब सास कहने लगी कि बच्चे का मुण्डन करना है, वहाँ बकरा चढ़ाना है, मैंने सुक्खन की थी कि लड़का होगा तो बकरे की बलि दूँगी। लो, कर लो बात! 10 साल पचासों सयानों के पास गयी, पचासों ज्यातिषियों के पास गयी, इतनी देर से सुक्खन की थी, तब कुछ नहीं हुआ। अब जब नाम लेने के बाद बच्चा हुआ तो यह हाल है। लड़की ने भी सास को कहा, समझाया कि आपने कितने पापड़ बेले थे, कुछ नहीं हुआ, यह तो साहिब की कृपा से हुआ है। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या यह है संत-मत! एक बच्चे को

जन्म देने के लिए एक जीव की हत्या करना। क्या ऐसे होते हैं संत-मत के अनुयायी। यह थोथा संत-मत है। हमारे लोग ऐसा नहीं कर रहे हैं। हम इनसे बचने के लिए कह रहे हैं। समाज भटका कितना है!

राँजड़ी में एक बहुत पुराना ड्राइवर है, उसकी लड़की का विवाह कराया। लड़की जोरदार थी, मजबूत थी। उसकी शादी हो गयी तो कुछ देर बच्चा नहीं हुआ। कुछ माताएँ जो कमजोर होती हैं, वो नहीं दे पाती हैं जन्म। कुछ 4 साल में एक बार ही दे पाती हैं जन्म। तो जब कुछ देर बच्चा नहीं हुआ तो सास तंग करने लगी। वो परेशान होकर आई, कहा कि रिश्तेदार ताने मारते हैं, सब तंग करते हैं, कहते हैं कि देखो यह तंत्र-मंत्र नहीं मानती है, देवी-देवता भी छोड़ दिये, बच्चा कैसे होगा! लड़की ने कहा कि मुझे आप पर पूरा भरोसा है, मुझे कुछ नहीं चाहिए, पर आप एक संतान दे दो, चाहे लड़की ही दो, ताकि मैं सबके मुँह बंद कर सकूँ, सभी मुझे बहुत परेशान कर रहे हैं, मैं सबसे टक्कर ले रही हूँ।

भक्ति को महत्वाकाँक्षा से जोड़ा जाए तो यह ठीक नहीं है। यह गलत भक्ति है। पर बात मेरे दिल में उतर गयी। जब बाद में उसे लड़का हुआ तो सबके मुँह पर तमाचा मारा उसने, कहा कि देख लिया न। तो क्या इसे भक्ति से तोलें? नहीं। भक्ति इनके लिए नहीं करनी है। भक्ति तो आत्म-कल्याण के लिए करनी है। पर वो टीम परेशान करती है ताकि आदमी मजबूत न होने पाए। मैं समझाता हूँ कि कुरीतियों से बचना। वो तो डोरा बाँध कर वहम में डाल देते हैं। बड़े-बड़ों को डाल देते हैं। एक बार एक महात्मा को सत्संग करते देखा, जब उसने अपना हाथ उठाया तो उसके हाथ में अँगुठियाँ थी। उसने अपनी रक्षा के लिए ज्योतिषियों का सहारा लिया है तो उसमें कितनी ताकत होगी! हमने कोई स्वाँग शरीर पर नहीं रचा।

हम हर मोड़ पर आपको सावधान कर रहे हैं। यह नहीं कह रहा हूँ कि बड़ी सेवा करो, बड़ा धन दो, मुक्ति दे दूँगा। लोग तो 500 रूपये में जीने की कला सिखा रहे हैं। क्या है यह! समाज समझे। मैं

पूछना चाहता हूँ कि क्या हम ऐसे महात्मा के संरक्षण में अपने जीव का कल्याण कर पायेंगे? इसलिए ऐसे महात्माओं को समाज पहचाने, उनसे बचे। कुछ 100-100 साल से अपनी ही बिरादरी को नाम देते चले आ रहे हैं और कह रहे हैं कि हमारे करोड़ों शिष्य हैं। मेरी बातें उन्हें चुभ रही हैं। वो मेरे लिए कह रहे हैं कि इनके पास न जाओ। वो निंदा करते हैं तो मैं परेशान नहीं होता हूँ, टैशन नहीं लेता हूँ। मेरे परदादा गुरु ब्राह्मण थे, वे चित्रकूट में रहते थे। उन्होंने स्वरूपानंद जी को अपनी गद्दी दी, वो क्षत्रिय थे। जाति में नहीं दी। फिर उन्होंने मेरे गुरु स्वामी गिरधरानंद जी को गद्दी दी, वे जाति से ब्राह्मण थे। फिर उन्होंने मुझे दी। उनके तीन बच्चे भी थे, पर उन्हें नहीं दी। कलयुग का महात्मा अपने बच्चे की फ़िकर में लगा है, समाज की फ़िकर ही नहीं है। क्या उसे अपने लाखों, करोड़ों शिष्यों में से एक भी काबिल नहीं मिला, अपना बच्चा या रिश्तेदार ही क्यों दिखा!

11 आश्रम जला दिये गये। देखो, कितनी ख़तरनाक टीम है! मुझे ठीक-ठीक मालूम है जिन्होंने जलाए। उन्होंने पतीले, डैक आदि कुछ भी नहीं छोड़ा, सब लूटकर ले गये। हम 21वीं शताब्दी में जी रहे हैं। आश्रम जलाए, यह छोटी बात नहीं थी। लोगों ने सोचा कि ये कमज़ोर, परेशान लोग हैं, पर यह उनकी भूल थी। हम कमज़ोर नहीं हैं, शिष्ट हैं।

आप किसी की भी भक्ति करो, किसी को भी मानो, पर शर्त है कि यदि राम की भक्ति कर रहे हो तो रहीम की निंदा न करो। औरंगजेब ने कुछ ऐसे काम किये कि दुनिया उसे आज भी माफ़ नहीं करती है। पर यहाँ तो कुछ उससे भी ख़तरनाक हैं।

हमारे नामियों को जबरन मीट खिलाया गया, पानी में डुबकियाँ लगवाई, कहा कि पहले कसम खाओ कि साहिब-बंदगी में नहीं जायेंगे, तब छोड़ेंगे। फिर मारते हुए मंदिर ले गये, कहा कि माथा टेको और प्रण करो कि साहिब-बंदगी में कभी नहीं जायेंगे। यह

कैसा है! यह औरंगजेब वाला मामला नहीं है क्या!

मध्यप्रदेश में एक स्त्री के साथ ऐसा व्यवहार किया गया कि शर्म से सिर झुक जाता है। उसे नंगा करके घुमाया गया। सभ्य समाज स्वीकार करेगा क्या? फिर उसे मार-मारकर अधमरा कर दिया, कहा कि यह डायन है। मीडिया ने उसे बचाया। आज भी हम ऐसी कुरीतियों में जी रहे हैं। ऐसा क्यों है? समाज कुरीतियों से ग्रसित है। मैं कह रहा हूँ कि भक्ति करनी है तो पहले कुरीतियों से बचो, आगे का पाठ बाद में होगा। बच्चा पहले स्वर-व्यंजन सीखता है, बाद में शब्दमाला सिखाई जाती है।

जब तक स्वर-व्यंजन नहीं सीखता, तब तक शब्दमाला नहीं सिखाई जाती। जब तक कुरीतियों में फँसे हो तो भक्ति नहीं है।

खेलना हो तो खेलिये, पक्का होकर खेल..... ॥

मैं मानता हूँ कि मुझसे अमीर कोई है ही नहीं, क्योंकि मुझे किसी से कुछ चाहिए ही नहीं।

वो ही शाहनशाह है, जिसको नाहिं चाह..... ॥

मैं मानता हूँ कि मुझसे ताक़तवर भी कोई नहीं है। रात-दिन लगा रहता हूँ। एक बात समझना कि बेइमान मेहनत नहीं कर सकता। मेहनती बेइमान नहीं हो सकता है। हम मेहनती हैं, बेइमान कैसे हो सकते हैं! फिर निंदा क्यों है? मुझे निंदा अस्तुति से कुछ नहीं लेना है, पर समाज चिंतन करे। कुरीतियों से बचे, पाखण्डी बाबों से बचे। ये आपको नरक की ओर ले जा रहे हैं।

I I I



**सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिए सोय।
कहै कबीर सेवा बिना, सेवक कबहु न होय ॥**

कबीर साहिब और इब्राहिम सुलतान

कलयुग में एक समय साहिब ने आकर बलख के बादशाह इब्राहिम को चिताया। साहिब धर्मदास से वो कथा कह रहे हैं—

साहिब

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। बलख भेद कहूँ तुम पासा ॥
बलख शहर एक नगर अनूपा। तहँ सुलतान यक ज्ञान सरूपा ॥
इब्राहीम अब्दुल जेहि माना। राज माहिँ भक्ति जिन ठाना ॥
विरह उठी शाह मन माही। कारज अपना कीना चाही ॥
मनुषा जनम अमोलक पायी। ऐसे तन पाई खुदा मिलि जायी ॥
जो यहि अवसर अल्लह न पाया। क्षण महँ विनश जायगी काया ॥
ऐसी फिकर उठी मन माई। तब षट दर्शन लिये बुलाई ॥
पण्डित साधु सन्यासी आये। योगी जंगम यती बुलाये ॥
ज्ञानी ध्यानी सबके पीरा। काजी मुल्ला शेख फकीरा ॥
सब मिलि भेष जुड़े तहँ आयी। तिनसों वचन बूझा अर्थायी ॥

साहिब कहते हैं—हे धर्मदास! बलख नामक एक अनुपम शहर में एक ज्ञान स्वरूप राजा रहता था। उसका नाम इब्राहिम था और उसके मन में राज्य करते-करते भक्ति उत्पन्न हुई, उसके मन में परमात्मा के प्रति विरह उत्पन्न हुआ, उसने अपने जीव का कल्याण करना चाहा। उसने विचार किया कि इस अमोलक मानव तन को पाकर खुदा से मिलना चाहिए, यदि यह तन पाकर खुदा को न पाया तो फिर यह तन तो मिट्टी में मिलना ही है। यह चिन्ता उसके मन में उठी और उसने पण्डित, साधु, सन्यासी, योगी, जंगम और यती-षट्-दर्शन को बुला लिया। जितने भी ज्ञानी, ध्यानी, पीर, काजी आदि थे, सब इकट्ठा हुए।

सुलतान

तबहि शाह सब ढेर सुनायी । अल्लह रूप मुहि देहु दिखाई ॥
 खुदा मिले यह कौन उपाई । कौन राम अरु कौन खुदाई ॥
 एक खुदा यक और न होई । काहे भयो एक अस दोई ॥
 दोऊ दीन मिलि कहो समझायी । दो में साँच कौन ठहराई ॥
 होय अधीन तब शीस नवायी । सबसे बूझे मन चित लायी ॥
 सब मिलि कहों खुदाई सन्देशा । मेरे मन का मेटो अँदेशा ॥
 साहिब बसे कौन से देशा । सो मुहि बात कहो दुरवेशा ॥
 दोऊ राह यह किनहि चलायी । किन वैकुण्ठ विहिस्त बनायी ॥
 हमरे दिल का मेटो अँदेशा । हम माने तुमरो उपदेशा ॥
 हिन्दू सबै बैकुण्ठहि धावैं । मुसलमान विहस्त ठहरावैं ॥
 इनमें कहाँ खुदा का बासा । विन देखे कीनो विश्वासा ॥
 किनहु खुदा का घर नहीं पाया । झूठ झूठ सब द्वंद मचाया ॥
 खुदा की खबर न कोई बताही । सबको जडो कोठरी माहीं ॥

बादशाह ने सबसे कहा कि मुझे खुदा का रूप दिखा दो । जिस उपाय से खुदा मिल सके, वो बता दो । राम कौन है? और खुदा कौन है? यह मुझे समझा दो । खुदा तो एक होना चाहिए, फिर ये दो क्यों हैं? आप दोनों धर्म वाले मुझे समझाओ कि इनमें सच्चा कौन है? राजा ने दोनों हाथ जोड़कर सबसे कहा कि मैं आपके अधीन हूँ, मुझे खुदा का संदेश देकर मेरे मन का भ्रम दूर करो । वो सच्चा साहिब किस देश में रहता है, यह मुझे बताओ । हिंदू और मुसलमान—ये दो राहें किसने चलाई? वैकुण्ठ और विहिस्त (स्वर्ग) किसने बनाये? आप मेरे दिल का भ्रम दूर करो, मैं आपके उपदेश को मानूँगा । हिन्दू लोग तो सब बैकुण्ठ की बात करते हैं और मुसलमान विहिस्त कहते हैं । इन दोनों में से खुदा का वास कहाँ है, यह बताओ?

जब कोई कुछ न बोला तो राजा ने कहा कि मुझे तो लगता है कि आप बिना देखे ही इन बातों पर विश्वास कर रहे हैं। आपमें से किसी ने भी खुदा का घर नहीं देखा है और झूठ में ही इतना झगड़ा मचाया है। यदि आपमें से कोई खुदा की खबर न दे सका तो आप सबको कोठरी में डाल दूँगा।

साहिब

**चली जो बात दशो दिशि जायी। षट दर्शन को साधु रोकायी ॥
इतनी बात काशी सुनि पाई। तब उठि धाये आप गुसाई ॥
जिन्दा रूप गुसाई कीना। जाइ शाह को दर्शन दीना ॥
बैठे तख्त आप सुलताना। जिन्दा दुआ सलामा कीना ॥
दोआ सलाम हमरी नहिं माना। माया के मद गर्व भुलाना ॥**

साहिब कहते हैं कि जब सब जगह यह बात फैल गयी कि राजा ने षट्-दर्शन को कोठरी में बंध कर दिया है तो मैंने आकर बादशाह को दर्शन दिये। बादशाह तख्त पर बैठा था, मैंने उसे सलाम किया, पर बादशाह ने उसका कोई जबाव नहीं दिया, क्योंकि वो माया के मद में भूला हुआ था।

सुलतान

**कहे सुलतान सुनो दुरवेशा। जिन्दा रूप कौन को भेशा ॥
कहाँ से आये कहाँ तुम जाओ। कौन काज हमरे घर आओ ॥
हम पूछें जो खुदा की बानी। हल्म अल्लाह की कहो निशानी ॥
कुदरत की कोह आदि बतावै। सोई मुर्शिद पीर कहावै ॥
हमरे दिल में विरह बहु आया। खुदा मिलन कोउ नहिं बताया ॥**

सुलतान ने साहिब से कहा—हे फकीर! तुम कौन हो? तुम कहाँ से आए हो? कहाँ जा रहे हो? और किस कारण मेरे घर आए हो? मैं तो खुदा की वाणी सबसे पूछ रहा हूँ, यदि तुम बता सकते हो तो उसकी कोई निशानी बताओ। जो भी मुझे उसकी खबर देगा, वही मेरा गुरु

कहलायेगा, वही मेरा सच्चा पीर कहलायेगा। मुझे अभी तक कोई भी खुदा की खबर नहीं दिया है।

साहिब

**जिन्दा कहे सुनो रे भाई। षट दर्शन तुम देहु छुड़ाई॥
तब हम तुम सो ज्ञान करावें। संशय तुम्हारो सकल मिटावें॥
षट दर्शन को छोड़ि तुम देओ। जो चाहो सो हमसो लेओ॥
अब जनि शंका मानो भाई। जो पूछो सो देऊँ बताई॥**

साहिब ने राजा से कहा कि तुम षट्-दर्शन को छोड़ दो। मैं तुमसे ज्ञान की बात करता हूँ और तुम्हारा सारा भ्रम दूर करता हूँ। तुम कोई शंका अपने दिल में नहीं लाना, जो पूछोगे, मैं बता दूँगा।

सुलतान

**कहे सुलतान सुनो दुरवेशा। कैसे मिटे हमरा अँदेशा॥
ऐसी बात कहो अधिकाई। क्या तुम दूसरे आय खुदाई॥**

राजा ने कहा—हे फ़कीर! सुनो, मेरे भ्रम कैसे दूर होगा? तुम तो ऐसे बड़ी-2 बात कर रहे हो, जैसे तुम कोई दूसरे खुदा हो।

साहिब

**तब हम एक कला दिखलाई। भैंसा पास यक साख भरायी॥
भैंसा कहै साँचे दुर्वेशा। मानो शाह इनको उपदेशा॥
यहि दुर्वेश खुदा सम जानो। इनसे कर्त्ता और न मानो॥**

साहिब कहते हैं कि तब मैंने एक खेल दिखाया, एक भैंसा था, उससे गवाही दिलायी। भैंसे ने कहा—हे राजन! यह सच है, इनका उपदेश मान लो। इस फ़कीर को खुदा के समान ही जानो, इनसे अलग कोई और कर्त्ता नहीं मानो।

**सुनि के शाह अचम्भो भयऊ। भैंसा साख सो कैसे भरेऊ॥
यह तो पीर औलिया आये। भैंसे पास इन साख दिवाये॥**

**शाह के दिल परतीति अस आयी । यह दुरवेश खुद आय रहायी ॥
षट दर्शन को बन्ध छुड़ाये । बन्दी छोर कहि कहि सब जाये ॥**

यह सुनकर राजा अचरज में पड़ गया कि भैंसा गवाही कैसे दे रहा है । राजा को लगा कि यह तो जरूर कोई पीर है, जिसने भैंसे से यह गवाही दिलायी है । उसके मन में विश्वास हो गया कि फ़कीर भेष में खुदा है यह । इस तरह साहिब ने षट्-दर्शन के बन्धन छुड़ा दिये, सब साहिब की जय-जयकार करते हुए, उन्हें बंदीछोर कहते हुए जाने लगे ।

**तब सुलतान अपने मन जाना । यह दुर्वेश अविगत ठाना ॥
भैंसा पास इन साख भराहीं । यह तो गति आदम की नाहीं ॥
एती काल जान जब पाये । फिरि जिन्दा से पूछन लाये ॥**

तब सुलतान ने अपने मन में यह जान लिया कि यह फ़कीर साधारण नहीं है । यह काम आदमी का नहीं हो सकता है । यह विचारकर उसने साहिब से पूछा ।

सुलतान

**कहे सुलतान सुनो दुर्वेशा । जिन्दा रूप कौन को भेषा ॥
कहाँ से आये कहाँ तुम जाओ । इतनी सुनद कही समुझाओ ॥
तुम मुर्शिद पीर हमारा । हम अपने दिल कीन विचारा ॥**

राजा ने साहिब से पूछा कि तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? और कहाँ को जा रहे हो? इतना मुझे बता दो । मैंने अपने मन में विचार करके देख लिया है कि तुम ही मेरे गुरु हो, तुम ही मेरे पीर हो ।

साहिब

**कहे दुर्वेश सुनो रे भाई । जिन्दा रूप खुदा को आई ॥
अल्लाह आप सकल घटमाहीं । दोऊ दीन दोउ राह चलाहीं ॥
हम दौजख तजि विहिश्त को जाये । सौंपन एक चीज तोहि आये ॥
तुम हौ दीन दुनी सुलताना । राखो मियाँ सुई सहिदाना ॥**

जब तुम आओगे विहिश्त के माहीं। तब हम सुई लेब तुम पाहीं॥
 यही काज तुम्हरे घर आये। मियाँ सुई धरों तुव ठाये॥
 दीन दुनी के बादशाह कहाओ। इतनी सनद हमारी लाओ॥
 सुई देव जब विहिश्त मँझारा। तब हम माने साँच तुम्हारा॥

साहिब ने कहा कि मैं खुदा का रूप हूँ, वो खुदा सब घट में व्याप्त है। और ये दो राहें तो दोनों धर्मों ने चलायी हैं। मैं इस नरक को छोड़कर अब स्वर्ग में जा रहा हूँ, तुम्हें एक चीज़ सौंपने आया हूँ। आप तो राजा हैं, मेरी एक सूई अपने पास रख लो, जब आप मरने के बाद स्वर्ग आओगे तो मैं तुमसे यह सूई ले लूँगा, इसी कारण मैं तुम्हारे घर आया था। तुम तो बादशाह कहे जाते हो, पर जब तुम स्वर्ग में मुझे यह सूई दोगे तब मैं तुम्हें सच्चा मानूँगा।

सुलतान

हँसकर शाह सुई कर लीना। सहस्र सुई का कौल तब दीना॥
 जाओ विहिश्त मानो विश्वासा। सहस्र सुई लेना हम पासा॥

राजा ने हँसकर साहिब से सूई ले ली और एक के बदले हजार सुइयाँ वापिस देने का वायदा किया।

साहिब

इतनी गोष्ठी शाह सो कीना। तब तहाँ से पयाना दीना॥
 एक सुई उन हम को दीना। सहस्र सुई का कौल तब लीना॥

साहिब कहते हैं कि इतनी गोष्ठी राजा के साथ करके मैं वहाँ से चल पड़ा।

सब मिलि आय जुड़े दरिखाना। बैठे आय तहाँ सुलताना॥
 शाह के हाथ सुई जब देखा। तब वजीर मन कीन विवेखा॥
 हाथ जोड़ि के विनती लावा। कैसे सुई हाथ में आवा॥
 कैसे सुई हाथ में लीना। कारण कौन कहो हम चीन्हा॥

इतने में दरबार का समय हुआ तो सब वहाँ इकट्ठा हुए। राजा के हाथ में सूई देखकर वजीर ने राजा से पूछा कि यह सूई क्यों पकड़ रखी है?

सुलतान

कहे सुलतान सुनो दीवाना। बन्दा अल्लाह दिया सहिदाना ॥
दुरवेश एक यहाँ चलि आया। जिन या सुई दीन हम पाया ॥
कहा दुरवेश विहिश्त तुम आव। तब या सुई लेब तेहि ठाँव ॥
ऐसे वचन कह्यो दुर्वेशा। सुई हम देन कही तेहि देशा ॥
एक सुई हम उनसे लीना। सहस्र सुई का कौल हम दीना ॥

राजा ने कहा कि खुदा के एक बंदे ने मुझे यह सूई दी है। वो फ़कीर यहाँ आया था, उसी ने मुझे यह सूई दी और कहा कि जब आप विहिश्त (स्वर्ग) में आयेंगे तो मैं यह सूई आपसे ले लूँगा। मैंने उसे एक सूई के बदले में हजार सूइयाँ देने का वायदा किया है।

दीवान

दीवान कहे सुनो हो साई। सुई विहिस्त कौन विधि जाई ॥
गाम परगना और ठकुराई। सबही धरा रहै यहि ठाई ॥
तात मातु सुत सुन्दर दारा। तन धन धाम सकल परिवारा ॥
जहँ लगि जग में दृष्टि दिखाहीं। सो सब विनशि जाय क्षणमाहीं ॥
ऐसे कहि वजीर शिर नायौ। कैसे सुई संग लै जायौ ॥
समझि देखु अपने दिलमाहीं। सुई संग कौन विधि जाहीं ॥

वजीर ने कहा—हे महाराज! सूई किस तरह से विहिस्त में जा सकती है! न कोई गाँव और न बादशाहत ही वहाँ जायेगी, सब यहीं धरा रह जायेगा। माता, पिता, पुत्र, सुंदर स्त्री, यह शरीर, सारा धन और परिवार—इनमें से कोई भी अंत में काम नहीं आयेगा। जहाँ तक संसार में दिखाई देने वाली वस्तुएँ हैं, सब क्षणमात्र में नष्ट हो जायेंगी। ऐसा कहकर वजीर ने राजा को शीश नवाते हुए कहा कि फिर एक सूई अपने साथ लेकर आप कैसे जाओगे, आप खुद ही विचार करके देख लो!

सुलतान

**तब सुलतान वचन अस कहई । सुनो वजीर मता यक अहई ॥
इतना घोड़ा माल खजाना । यह सब संग चले न निदाना ॥**

राजा ने कहा कि क्या सच में इतना माल-खजाना, घोड़े आदि कुछ भी साथ नहीं जायेगा ।

वजीर

**हस्ती संग चले नहीं शाहा । खोजा करो तुम दिल के माहा ॥
हस्ती घोड़ा माल खजाना । यह सब संग चले न निदाना ॥**

वजीर ने कहा-हे बादशाह ! आपके ये हाथी आपके साथ नहीं जायेंगे, आप अपने दिल में विचार करके देख लो । ये हाथी, घोड़े, माल-खजाना आदि कुछ भी साथ न चलेगा ।

**मन में चकित शाह तब भयऊ । झूठी माया हम चित दयऊ ॥
सुई संग चले नहीं जाही । झूठी राज पाट सब शाही ॥
सहस्र सुई का का परसंगा । एके सुई चले नहीं संगी ॥
अब तो खाना हम तब खावें । जब जिन्दा का दर्शन पावें ॥**

यह सुन राजा मन में चकित हो गया, उसे समझ आया कि मैं तो झूठी माया में ही मन लगा बैठा हूँ । यदि सूई साथ में नहीं जा सकती है, तो फिर यह राज-पाट सब झूठा ही है । मैंने तो हजार सूइयों का वायदा किया था, पर वहाँ तो एक सूई भी नहीं जा सकती है । राजा उदास हो गया, उसने ठान लिया कि अब मैं तभी खाना खाऊँगा, जब मुझे उस जिन्दा फ़कीर के दर्शन होंगे ।

**ऐसी रटना शाह तब लावा । जिन्दा मिलन भयो उर भावा ॥
बहुत दिवस रट लागी ऐसी । आगे कहूँ भयी गति जैसी ॥
शाह कीन माँह बिचारा । जिन्दा मिले सो कौन प्रकारा ॥
सब सिद्धन को लाउ बुलायी । उनसे पूछो मति अस भाई ॥
जोई सिद्ध अजमत बतलावें । उनसे खबर जिन्दा की पावें ॥**

जिन्दा फ़कीर की ही रट लगाना राजा ने शुरू कर दी, उनसे मिलने के लिए हृदय से व्याकुल होने लगा। जब बहुत दिन ऐसे हो गया तो राजा ने मन में विचार किया कि जिन्दा किस प्रकार मिल सकता है। उसने सोचा कि सब सिद्धों को बुलाता हूँ और उनसे कहता हूँ कि कोई करामात दिखाओ। जो भी करामात दिखा देगा, उसी से जिन्दा की खबर पा सकूँगा।

**सन्मुख शाह सिद्ध सब आनी। तबही शाह कहे अस बानी ॥
अधिक प्यारे तुमहौ अल्लाह को। करामात दिखलाओ अब हमको ॥
ना मैं तुम्ह को बाँधि झुलाऊँ। ना तो तुम्ह को छुरी मराऊँ ॥**

जब सब सिद्ध राजा के सामने आए तो राजा ने कहा कि आप खुदा के प्यारे हैं, इसलिए कोई करामात दिखाओ। यदि आप ऐसा न कर सके तो मैं आपको बाँध दूँगा और छुरी से मरवा दूँगा।

सिद्ध

**तब बोले सिद्ध चौरासी। हम हरि को आहीं उपासी ॥
निशि दिन रामा नाम गुण गावें। करामात ढिग हम नहीं जावें ॥**

तब सिद्धों ने कहा कि हम तो हरि के उपासक हैं, रात-दिन राम के नाम का गुणगान करते हैं, पर कोई करामात करना हमें नहीं आता है।

सुलतान

**यह सुनि शाह बहुत रिसियाना। हुकम कीन सब बन्दीखाना ॥
तुम काफिर अल्लाह ते दूजा। भूत प्रेत चित लाये पूजा ॥
चक्की ढिग इनको बैठाओ। निशि दिन इनसे अनाज दराओ ॥
जो नहीं करामात तोहि होई। क्यों कर सिद्ध कहाओ सोई ॥**

यह सुनकर राजा क्रोधित हुआ और हुकम दिया कि सबको बन्दी बना लो। राजा ने कहा कि आप तो काफ़िर हैं, भूत-प्रेतों की पूजा करते हैं। कहा कि इनको चक्की के पास बिठा दो ताकि रात-दिन चक्की से अनाज पीसते रहें। यदि आपसे कोई करामात नहीं हो सकती है तो अपने को सिद्ध क्यों कह रहे हो!

साहिब

बैठे सिद्ध सब चाक चलावें। चित विस्मय सब हरिगुण गावें॥
 त्रास देखि पुनि आयी दाया। तत छिन शाहद्वार चलि आया॥
 सोटा मारा चक्की माहीं। घूमहु सतगुरु दाया कराहीं॥
 विदा सिद्ध भये हम भयगुप्ती। देख्यो आय शाह के जपती॥
 कहा शाह सों तिन्ह कर जोरी। चक्की सब आपहिं चलि दौरी॥

साहिब कहते हैं कि सभी सिद्ध चक्की चलाने लगे। यह देख मुझे दया आई और मैं राजा के द्वार पर चला आया। मैंने चक्की में सोटा मारा और सब चक्कियाँ खुद ही चलने लगीं। सिद्ध चले गये और मैं गुप्त हो गया। इतने में राजा के सेवक आए और यह सब देख चकित हुए, तुरंत जाकर राजा को बताया कि सब चक्कियाँ अपने आप चल रही हैं।

सुलतान

सुनि के शाह कैफदिल आयी। कौन शख्स यह चक्कि चलायी॥
 वेगहि ढूँढ़ि लाओ यहि वारा। चक्की चलायो सो अल्लह प्यारा॥

यह सुन राजा के दिल में आया कि किसने यह चक्कियाँ चलायीं हैं। उसने सेवकों से कहा कि जल्दी ढूँढ़ो, पता लगाओ कि किस खुदा के प्यारे ने ये चक्कियाँ चलायी हैं।

साहिब

ढूँढत नगर थके दिल जबहीं। नहिं पाये व्याकुल चित तबहीं॥
 जबहि शाह घर लगन विचारा। तब हम जीव दया उर धारा॥
 तुरतहिं जाय तहाँ पगु धारा। शाह के महलन चढ़े गोहारा॥
 महल पर देखत फिरोँ वहुँ खूठा। करोँ पुकार हेरानो ऊँटा॥

साहिब कहते हैं कि सारे नगर में ढूँढ़ते-2 वो थक गये, पर कहीं पता न चला। इतने में मुझे दया आई और मैं शीघ्र ही वहाँ चला गया, वहाँ महल की छत पर चढ़कर गोहार लगाते हुए अपने ऊँट को ढूँढ़ने लगा।

सुलतान

**सुनि के शाह क्रोध करि धाये । कौन हमारे महलन पर आये ॥
कहो तुम कौन कहाँ से आवा । कौन काज महल पर धावा ॥**

हल्ला-गुल्ला सुनकर राजा क्रोधित होकर दौड़ा, कहा कि कौन मेरे महल पर चढ़ गया है, पूछा कि तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? और किस कारण महल में दौड़ रहे हो?

साहिब

**तब हम कहा ऊँट यक छूटा । ढूँढ़त फिरूँ मैं अपनो ऊँटा ॥
बहुत अधीन ऊँट हम भायो । खोजत ऊँट महल पर आयो ॥**

साहिब ने कहा कि मेरा ऊँट छूट गया है, उसे ढूँढ़ता फिर रहा हूँ और ढूँढ़ते-2 महल की छत पर आ गया हूँ।

सुलतान

**सुनि के शाह तबे हँसि दीन्हा । कैसे ऊँट महल पर चीन्हा ॥
जंगल माहिं तेहि खोजो जाओ । कैसे ऊँट महल पर आओ ॥**

यह सुनकर राजा हँस पड़ा, कहा कि ऊँट महल के ऊपर कैसे दिखेगा! जंगल में जाकर खोजो, वो महल पर कैसे आयेगा!

साहिब

**तब हम कहा सुनो तुम ज्ञाना । चढ़े तख्त अल्लाह किन जाना ॥
ऐसी बूझ करो मन माहीं । सत्य वचन धरो मन ठाहीं ॥
अल्लाह तख्त पर कैसे पावे । जहाँ लगि घट महँ गर्व रहावे ॥
छोड़ो मान गुमान रे भाई । अल्लाह रूप तब ही मिलि जाई ॥**

साहिब ने कहा कि तख्त पर चढ़कर खुदा को कैसे जानोगे, मन में ऐसा विचार करो, मेरे सत्य वचनों को मन में धारण करो। तख्त पर बैठकर उस अल्ला को कैसे पाओगे! जब तक तुम्हारे मन में गर्व है, वो नहीं मिल सकता। जब तुम राज-पाट का घमण्ड छोड़ोगे, तभी तुम्हें तुम्हारा अल्ला मिल सकता है।

सुलतान

सुनत शाह सन्मुख जब आवा । तब जिन्दा से पूछन लावा ॥
कौन रूप कौन नाम तुम्हारा । कहो अल्लाह मिले कौन बिचारा ॥

यह सुनकर राजा साहिब के पास आया, पूछने लगा कि तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है? मुझे बताओ कि अल्ला कैसे मिलेगा?

साहिब

साँचे दिल से सुरति लगाओ । प्रेम प्रीति लौलीन रहाओ ॥
सुख संपत्ति की करो न आशा । निशि दिन दीया प्रेम प्रकाशा ॥
मन अस्थिर करि सुरति लगाओ । तबहि दरश अल्लाह को पाओ ॥
कहे कबीर खोजे सो पावे । खोजत खोजत अलख लखावे ॥

साहिब ने कहा कि सच्चे दिल से सुरति लगाओ, उससे प्रेम करो, सुख-संपत्ति की आशा मत करो, रात-दिन उसके प्रेम का दीपक ही हृदय में जलाए रखो। मन को स्थिर करो, तभी तुम्हें अल्ला के दर्शन होंगे। साहिब कहते हैं कि जो खोजता है, वो ही उसे पाता है।

जब कीन मन शाह अन्देशा । नहिं तहँ ऊँट नहीं दुरवेशा ॥
ऐसे बहुत दिन बीता भाई । काल कला घट आन समाई ॥

इतने में राजा को संदेह हुआ कि न तो ऊँट है और न ऊँट वाला। ऐसे बहुत समय बीत गया और राजा फिर सब ज्ञान भूल गया।

यक दिन शाह जु चले शिकारा । चुनि चुनि साथ लीन्ह असवारा ॥
छोड़े बाज पक्षी गहि आने । देखत शाह बहुत सुख माने ॥
बहु विधि मारग करत कलोला । जहँ तहँ फिरे शिकारिन टोला ॥
बहुत समय बीत जब गयऊ । एक शिकार हाथ नहिं अयऊ ॥
तबै शाह बहुत रिसियाना । खोजु शिकार हुक्म फरमाना ॥
तबै शिकारी दुहुँ दिशि धावैं । पावैं न शिकार मनहिं पछतावैं ॥
यहि विच लीला अस भइ भाई । सुनु धर्मनि तुम चित लगाई ॥

हरिन एक जो कनक रंग देखा । हीरा रतन मणि जड़े विशेखा ॥
 देखि सरूप शाह ललचाई । यहि मिरगा कहँ घेरो भाई ॥
 शाह सब ते तब कहे पुकारी । मिरगा मार लाउँ यहि बारी ॥
 कहे शाह जो मिरगा जाई । तुमसे मिरगा लेहौँ भाई ॥
 आज्ञा पाइ चले असवारा । घेरयो हिरण सेन मझारा ॥
 छिन में मिरगा देखि लुपाना । तेहि पीछे धावहि सुलताना ॥
 मिरगा संग सुलतान अकेला । नहिं कोई सेना नहिं कोई चेला ॥
 लागी प्यास शाह को भारी । महा भयानक बनही मझारी ॥
 वट का वृक्ष तहाँ यक देखा । शीतल छाया बहु विशेखा ॥
 मिला फकीर एक तहाँ वासा । कुत्ता रहै उन पासा ॥
 शीतल कलशा पानिहि भरिया । जापर ठिलिया मठका धरिया ॥
 खोजत नीर शाह चलि आये । दुआ सलाम करि वचन सुनाये ॥

एक दिन राजा शिकार खेलने चला । चुन-चुनकर उसने घुड़सवार अपने साथ लिये । वहाँ जाकर उसने एक पक्षी पर अपना बाज छोड़ा, जिसे बाज मारकर ले आया । यह देख राजा बहुत प्रसन्न हुआ । रास्ते में इस तरह बड़ी क्रिड़ाएँ करते हुए जा रहा था, पर बहुत समय हो जाने पर भी उसे कोई शिकार नहीं मिला । तब राजा बहुत गुस्सा हुआ, हुकम दिया कि शिकार की खोज करो । तभी शिकारी सभी दिशाओं में भागने लगे, पर शिकार न पाकर मन-ही-मन पछताने लगे । इतने में साहिब कहते हैं कि मैंने एक लीला दिखाई । राजा को एक सोने के रंग वाला हिरन दिखा । उसका रूप देखकर राजा के मन में लालच आया, उसने शिकारियों को कहा कि इस हिरन को घेर लो, अगर यह चला गया तो तुमसे ही लूँगा । सवारों ने हिरन को घेर लिया । इतने में हिरन राजा के पास भाग आया । अब राजा और हिरन अकेले थे । राजा उसे पकड़ने के लिए भागा, पर हिरन छिप गया । भागते-2 राजा अपनी सेना से बहुत दूर निकल गया । अब वो थक गया, उसे प्यास लगी । उसे वट का वृक्ष दिखा,

उसकी शीतल छाया में आराम करने लगा। वहाँ उसे एक फ़कीर मिला, उसके पास दो कुत्ते थे, और साथ ही जल से भरे दो घड़े रखे थे और उन पर प्याले रखे थे। पानी को खोजते हुए राजा उसके पास आया और कहा कि मुझे बड़ी प्यास लगी है, मेरी जान निकल रही है, मुझे पानी पिलाकर बचा लो।

तब फ़कीर ने राजा को जल पिलाया। जब राजा होश में आया तो देखा कि फ़कीर घी, मिश्री, मैदा आदि मिलाकर कुत्तों को खाने को कह रहा है।

**कुत्ता न्यामत खाय न भाई। मार दुरवेश कुत्ता के ताई ॥
ऐसो चरित कीन दुरवेसा। तब शाह के मन में भयो अंदेशा ॥**

राजा ने देखा कि फ़कीर ने कुत्तों के सामने खाने को रखा है, पर कुत्ते वो खाना नहीं खा रहे हैं। ऐसे में फ़कीर उन्हें मार रहा है। यह सब देखकर राजा के मन में अचरज हुआ।

सुलतान

कहै शाह तुम सुनो दिवाना। यह पशु जीव न्यामत कह जाना ॥

राजा ने कहा कि ये पशु हैं, उन्हें ये सुंदर भोजन खाने का क्या पता!

साहिब

कहे फकीर सुनो बे नादाना। जैसा दिया तैसा ही खाना ॥

जौसि करे करतूत कमाई। तैसि देह धरि भुगते भाई ॥

यामें फेर फार नहिं होई। जो बोवे लुनिहे वह लेई ॥

फ़कीर रूप में साहिब ने कहा—हे नादान! सुनो, जैसा कोई दान करता है, वैसा ही खाता है। जैसा कर्म करता है, वैसी ही देह भी मिलती है। जैसा कोई बोता है, वैसा ही काटना पड़ता है, इसमें कोई फेर नहीं होता।

सुलतान

दोयकर जोरि के विनती कीन्हा। साहिब तुमरी गति हम न चीन्हा ॥

वानी अगम कहो समझाई। आगे कौन हते यह साई ॥

राजा ने दोनों हाथ जोड़कर कहा कि मैं आपको पहचाना नहीं। आप मुझे समझाकर कहें कि ये पिछले जन्म में कौन थे?

साहिब

**तब दुर्वेश कहे समझायी। सुनो शाह तुम मन चितलायी ॥
बलख शहर यक नगर रहाई। तहँ के हैं ये दोनों राई ॥
राय पाय कछु भक्ति न कीना। ताते जन्म श्वान को लीना ॥**

फकीर रूप में साहिब ने समझाते हुए कहा—हे राजा! ध्यान से सुनो। एक बलख शहर है, ये दोनों वहाँ के राजे हैं। इन्होंने राजा होकर कोई भक्ति नहीं की, इसलिए कुत्ते का जन्म पाया है।

सुलतान

**तब सुलतान कहे सुनु भाई। एक बात और कहो समझाई ॥
दोय खूँटे दोय श्वान बँधाये। तीजा खूँटा क्यों खालि रहाये ॥**

तब राजा ने कहा कि एक बात और समझाओ कि दो खूँटों में आपने दो कुत्तों को बाँध रखा है, पर तीसरा खूँटा खाली क्यों रखा है?

साहिब

**कहे दुर्वेश सुनो रे भाई। याकी गतिहि कहूँ समझाई ॥
इब्राहीम नाम जेहि होई। बलख शहर का राजा होई ॥
राज माहिं बहुत सुख करिहैं। भाव भक्ति नाहीं मन धरिहैं ॥
बिना बन्दगी जिन छूटे देहीं। वे पुनि जन्म श्वान को लेहीं ॥
इसमें जडूँ आनि के ताही। तब ये तीनों रहें एक ठाहीं ॥**

फकीर रूप में साहिब ने कहा कि यह भी मैं तुम्हें समझाता हूँ। अब इब्राहीम राजा है, वो गद्दी पर बैठा है, वो राजा होकर बड़े सुख भोग रहा है, पर उसके मन में भी भक्ति भाव नहीं है। इसलिए जब उसका शरीर छूटेगा तो वो भी कुत्ता ही होगा। फिर मैंने उसे भी इनके साथ ही बाँधना है। ये तीनों एक साथ रहेंगे।

सुलतान

**इतनी सुन दुर्वेशहि बाता । शाह के मन में लागी घाता ॥
सुनि सुलतान अचम्भा भयऊ । तब दुर्वेशहि पूछन लयऊ ॥
श्वान योनि कस छूटे साई । ताका भेद कहो समझाई ॥**

यह सुन राजा के मन में चोट लगी, उसे अचरज हुआ। तब वो फ़कीर से पूछने लगा कि इस कुत्ते की योनी से कैसे छूटा जा सकता है, इसका भेद तुम मुझे बताओ?

साहिब

**कहे दुर्वेश भक्ति जो करई । सो नर श्वान देह ना धरई ॥
करे बन्दगी साहिब केरी । दया मिहिर की दशा जा होरी ॥
प्रेम प्रीति परमारथ नीका । माया मोह जाने सब फीका ॥
सब सुख नामहि से लौ लावे । सो जिव श्वान जनम नहि पावे ॥**

फ़कीर रूप में साहिब ने कहा कि जो मनुष्य भक्ति करता है, वो कुत्ते की देही नहीं पाता। जो साहिब की बंदगी करता है, उस पर ज़रूर कृपा होती है। जो प्रेम सहित परमार्थ के कार्यों में लगता है, माया-मोह को फीका समझता है और गुरु के नाम में ही लौ लगाए रहता है, फिर वो कुत्ते का जन्म नहीं पाता।

सुलतान

**शाह कहे जो लेइ बचाई । सो दुर्वेश साँच है भाई ॥
सो दुर्वेश खुदा का बन्दा । श्वान योनि का काटे फँदा ॥
मन में शाह तब ऐसा जाना । यह दुर्वेश है खुदा समाना ॥
बार बार मोहि आनि चिताई । सोई दुर्वेश आप है साई ॥
तब अपने दिल कीन्ह विचारा । इनसे कारज होय हमारा ॥
जो यह कहे सोई चित दीजे । इनका वचन मान शिर लीजे ॥**

तब राजा ने कहा कि वही फ़कीर सच्चा है, वही खुदा का बंदा है, जो कुत्ते की योनी में जाने से बचा ले। राजा ने मन में विचार किया कि

हो न हो, यह फ़कीर खुदा के समान ही है। यही तो मुझे बार-बार आकर जगा रहा है, यह खुद ही मालिक है। तब राजा ने विचार किया कि इससे मेरे जीव का कल्याण हो सकता है। इसलिए जो यह कहता है, मैं वही मानूँगा।

**इतना शाह मन करत अन्देशा । नहिं वह कुत्ता नहिं दुर्वेशा ॥
तबहि शाह मन कीन विचारा । निश्चय है यह सिरजनहारा ॥
बन ते शाह नगर में जाई । मन जिन्दा में रहा समाई ॥**

राजा यह सोच ही रहा था कि उसके मन में भ्रम हुआ कि वहाँ न तो फ़कीर है और न कुत्ता। तब राजा ने मन में विचार किया कि ज़रूर यह मालिक ही था। राजा जंगल से अपने शहर में आ तो गया, पर उसका मन साहिब में ही समाया रहा।

साहिब

**गुप्त रूप तब शब्द उचारा । इब्राहिम सुनु वचन हमारा ॥
नाहक जिव तुम मारि उड़ाई । तैसा हाल तुम्हारा भाई ॥
ताहि समय पुनि करिहो रोरा । काम न आवे सेन करोरा ॥
मारत पंछी दरद न आई । एक दिन ऐसा तुम पर भाई ॥
बैन सुनत मुरछित मन माहीं । गुप्त भये पछताने ताहीं ॥**

तब साहिब ने गुप्त होकर कहा—हे इब्राहिम! मेरी बात सुन। तुम नाहक ही जीवों को मार रहे हो। जैसा तुम जीवों के साथ कर रहे हो, वैसा ही एक दिन तुम्हारा भी हाल होगा। उस समय तुम रोवोगे, तुम्हारी सेना तुम्हारे किसी काम नहीं आयेगी। तुम्हें एक पक्षी को मारते हुए दर्द नहीं हो रहा है, एक दिन तुमपर भी यह कठिन दौर आयेगा। यह सुन राजा मन ही मन मुरझा गया। साहिब गुप्त हो गये तो राजा पछताने लगा।

**तबहि शाह मन ज्ञान समाना । जिन्दा बचन साँच कर माना ॥
राज पाट सुख सम्पति देहा । यह सब दीखत स्वप्न सनेहा ॥
ज्ञान दृष्टि दिल में जब आही । छोड़ेउ तख्त तबे बादशाही ॥**

होय फकीर जंगल कियो बासा । राज काज की छाड़ी आसा ॥
 सबही लोग नगर के आये । आई शाह के लागे पाये ॥
 काजी वजीर और शेखमुलाना । महन्त महावत नफर गुलामा ॥
 लागे सबही शाह के पाई । सबहि मिलि के विनती लाई ॥
 ऐसी बात न कीजे साई । तुम बिन यह परजा दुख पाई ॥
 जो तुम तख्त बैठो राजा । सब परजा को होत अकाजा ॥
 राजा से परजा सुख पावै । जहाँ तहाँ आनन्द रहावै ॥

अब राजा के मन में ज्ञान समाया कि वो फकीर तो सच कह गया कि राज-पाट, सुख-संपत्ति सब एक स्वप्न है। तब उसने अपना राज्य छोड़ दिया और जंगल में चला गया, फकीर होकर रहने लगा। नगर के सब लोग वहाँ आए, राजा के पाँव पड़े, सभी ने विनती की, कहा कि ऐसा मत करो, आपकी प्रजा दुखी है आपके बिना। राजा से ही प्रजा को सुख मिलता है, यदि आप तख्त पर नहीं बैठोगे तो प्रजा का बुरा हाल होगा।

सुलतान

कहे सुलतान सुनो रे भाई । हम तो तख्त के निकट न जाई ॥
 ना हम पाँव तख्त पर लावैं । ना अपने शिर भार चढ़ावैं ॥
 अब हम राज तजी बादशाही । यम की मार सही नहिं जाही ॥
 भक्ति बिना जिव मुक्ति न पावैं । राज करे सो नरकहिं जावैं ॥
 हमको आज मिले यक साई । सो साहिब ऐसी फरमाई ॥
 मैं अपराधी उन्हें न चीन्हा । अधविच छोड़ि सो मोको दीन्हा ॥
 अब हम करिहैं कौन उपाई । वह अवसर मुझको कब आई ॥

राजा ने कहा कि मैं तो अब राज-पाट से दूर ही रहूँगा। यह राज-पाट तो नरक में ले जाने वाला है। मुझे यम की मार नहीं सही जायेगी। भक्ति के बिना तो जीव मुक्ति नहीं पाता है, राज करने से तो नरक में ही जाना होगा। मुझे एक साई मिले, उन्होंने मुझे समझाया है। पर मैं पापी

उन्हें पहचान नहीं पाया। अब मैं वही उपाय करूँगा, जिससे वो मुझे फिर मिल सकें।

प्रजा

प्रजा कहे सुनो हो साईं। अब तुम चलो महल के माहीं ॥

जो तुम राज छाड़ि वन जैहो। तो सब संग तुम्हारे ऐहों ॥

प्रजा ने राजा से विनती की, कहा कि महल में चलो। यदि आप ऐसे वन में रहोगे तो हम सब भी आपके साथ ऐसे ही रहेंगे।

जब आये शाह महल मँझारा। उठी बिरह मन माहिं अपारा ॥

अब मैं किस विधि जिन्दा पाऊँ। उन बिनु होय न मोर बचाऊँ ॥

यह सब लोक अहै संसारा। नरक कुण्ड में डारनहारा ॥

भयी शाह मन विरह अपारा। जिन्दा जिन्दा करई पुकारा ॥

राजा तब महल में आया, पर उसके मन में विरह उत्पन्न हुआ, वो विचार करने लगा कि कैसे उस फ़कीर को पाऊँ! उसके बिना तो यम से मेरी रक्षा नहीं हो सकती है। यह संसार की वस्तुएँ तो नरक में डालने वाली हैं। राजा के मन में विरह बढ़ा और वो साहिब को पुकारने लगा।

थोड़े दिन विरहा अधिकाई। फिरतो धरम जाल फैलाई ॥

माहिं पुनि राज तहँ सुख पाये। माया मोह देखि ललचाये ॥

गया ज्ञान सुखे में लपटाना। काल शाह घट आनि समाना ॥

उरझे शाह स्वाद सुख रंगा। देखि रंग मन बहुत उमंगा ॥

पुनि कछु दिवस जो ऐसे बीता। बिसरे शाह अल्लाह की चिंता ॥

ऐसे कुछ दिन राजा के मन में विरह रहा, पर फिर वो राज-पाट के सुख में खो गया। उसका सारा ज्ञान चला गया और वो माया में रम गया। उसे खुदा की चिंता नहीं रही।

वो राजा बार-बार माया में खो जाता था। साहिब उसे बार-बार माया से छुड़ाने के लिए विभिन्न रूपों में आते थे।

बहुरि एक दिन बलख मँझारा । शाह के महलन में पगु धारा ॥
 महलन माहीं पहुँचे जायी । देखत फिरे महल चौपायी ॥
 इब्राहीम अधम सुलताना । हमको देखत बहु रिसियाना ॥

एक दिन साहिब फिर उसके महल में भेष बदल कर आए । राजा ने देखा तो क्रोध किया ।

सुलतान

कहे शाह तुम कौन है भाये । केहि कारण तुम महलन आये ॥

राजा ने पूछा कि तुम कौन हो? क्यों आए हो यहाँ?

साहिब

हम परदेशी दूर दिशारा । देखत फिरहीं सराय बसोरा ॥

साहिब ने कहा कि मैं दूर का मुसाफिर हूँ, रहने के लिए कोई सराय ढूँढ़ रहा हूँ ।

सुलतान

शाह कहे यह महल हमारा । कहाँ सराय जो करइ बसारा ॥
 अब तुम जाओ शहर बजारा । तहाँ जाइ करो सराय बसारा ॥

राजा ने कहा कि यह मेरा महल है, कोई सराय नहीं है, जो तुम यहाँ बसेरा करो । तुम बाजार में जाओ और वहाँ जाकर बसेरा करो ।

साहिब

कहे दुरवेश सुनो तुम शाहा । करि विचार परखो दिल माहा ॥
 महल तुम्हारो होय न भाई । तुम भी मुसाफिर बसो सराई ॥
 बहुत बादशाह तुम आगे भयऊ । महल काहू के संग न गयऊ ॥
 यह जग सकल सराय बसेरा । इनमें नाहिं कोउ केहि केरा ॥
 हरदम साहिब को पहिचानो । महल सराय एक करि जानो ॥
 ज्ञान दृष्टि दिल में जब आवै । राज छोड़ि साहिब गुण गावै ॥

साहिब ने कहा—हे राजा ! सुनो, दिल में विचार करो कि यह महल

भी तुम्हारा नहीं है, तुम भी मुसाफिर की तरह ही इसमें रह रहे हो। इसे किसने बनाया था! जिसने बनाया, वो भी चला गया, उसके आगे राजा आते गये। तुम्हारे आगे बहुत बादशाह हो गये, महल किसी के साथ नहीं गया। फिर यह दुर्ग कहाँ हुआ, यह तो सराय ही हुई, एक मुसाफिरखाना ही तो हुआ। यह सारा संसार ही सराय है, इसमें कुछ किसी का नहीं है। इसलिए महल सराय दोनों को एक समान जानो और अपने साहिब को पहचानने का प्रयत्न करो। जब तुम्हारे दिल में ज्ञान दृष्टि आयेगी तो तुम राज का घमण्ड छोड़कर साहिब के गुण गाओगे।

साहिब उसे बार-बार समझाते थे, पर उसमें कुछ समय के लिए विरह उत्पन्न होता था और बाद में फिर माया में खो जाता था।

**ऐसी चाल देखि हम राही। राज न छोड़े लोभ मन माहीं ॥
तब हम रूप जो कीन खवासा। जेहि ते तख्त की छाड़े आशा ॥
होय खवास बाग में जायी। फूल लाय रचि सेज बिछायी ॥
बहु विधि फूलन सेज बिछावें। जहाँ शाह पौढ़न निज जावें ॥
ऐसहि करत बहुत दिन गयऊ। तब हम एक अचम्भा कियऊ ॥
एक दिवस चित ऐसी आयी। ताहि सेज हम पौढ़े जायी ॥
रूप खवासिन तहँ हम कीन्हा। घड़ी एक पौढ़ी सुख लीन्हा ॥
आये महल सेज ढिग शाहा। पौढ़ि सहेली करे सुखलाहा ॥
इब्राहीम देखत रिसियाना। मनमाहीं बहुते खिसियाना ॥
हमरी सेज आई पौढ़ाना। हमरी त्रास तनिक नहिं माना ॥
हाँक मारि तिहि टेरि जगायी। देखत शाह मन क्रोध समाई ॥
शाह कहे क्यों पौढ़ी नारी। बढ़यो क्रोध तब ताजन मारी ॥**

साहिब कहते हैं कि जब मैंने राजा का फिर यह हाल देखा तो मैंने सेवक का रूप धारण किया और बाग में गया, वहाँ जाकर फूल इकट्ठा किये और वहाँ जाकर सेज बिछायी, जहाँ राजा लेटता था। ऐसा करते कुछ दिन हुए तो मैंने अचरज किया कि एक दिन खुद नौकरानी का रूप

धारण कर वहाँ लेट गया। राजा सेज के पास आया तो उसे देखकर गुस्सा किया, उसे आवाज़ लगाकर जगाया, कहा कि तुम्हें हमारा कोई डर नहीं है, हमारी सेज पर आकर लेट गयी हो। जब राजा के मन में क्रोध बढ़ा तो उसने उसे चाबुक मारा।

बहुत क्रोध करि मारा जबही। बहुतै हँसी सहेली तबही ॥

हँसत सुलतान अचम्भा कीना। निकट बुलाय पूछि तब लीना ॥

राजा ने जब क्रोध करके चाबुक मारे तो वो बहुत हँसने लगी। राजा को अचरज हुआ, उसने पूछा कि मैंने तुझे चाबुक मारा, तुम हँस क्यों रही हो?

साहिब

तबहि सहेली करे बखाना। सुनो शाह तुम चतुर सुजाना ॥

एक घड़ी सुख जो हम लीना। तो कारण इतना दुख दीना ॥

सदा सर्वदा जो सुख करई। तापर मार किती सो परई ॥

कहा करूँ मोहि रही न जायी। ता कारण मोहि हँसी आयी ॥

उमर भरे सुख कीना ऐसा। ताका हाल होयगा कैसा ॥

या कारण हँसी हम शाहा। कीजे जो तुम्हरे दिल चाहा ॥

राज करइ बहुतै सुख पावे। तन छूटे चौरासी जावे ॥

चौरासी में है कष्ट अपारा। बिना नाम नहीं होय उबारा ॥

आखिर देह मिलेगी खाका। साहिब नेह करि होऊ पाका ॥

तब खवासी रूप में साहिब ने राजा को कहा कि मैंने एक घड़ी जो सुख लिया, उसके कारण मुझे यह दुख मिला। आप तो सदा यह सुख लेते हैं, मैं सोच रही हूँ कि आपको कितनी मार पड़ेगी! क्या करूँ, यह सोच मुझसे रहा नहीं गया, इसलिए मैं हँसी। आप पूरी उमर ऐसा सुख भोगेंगे तो आगे आपका क्या होगा, यह सोच मुझे हँसी आ गयी! अब आपके दिल में जो आए, वो आप कीजिए। साहिब ने कहा कि आप राज करते हुए बहुत सुख पा रहे हो, पर शरीर के छूटने पर आपको चौरासी

भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

117

में ही जाना पड़ेगा। चौरासी में तो बड़ा ही कष्ट है, बिना नाम के तो कल्याण नहीं हो सकता है। आखिर तो यह तन खाक में ही मिल जायेगा, इसलिए साहिब से प्रेम करो।

वचन सुनत चित गहबर भयऊ। आँसू बहुत चक्षु ते गयऊ ॥

तबहि शाह दिल अपने जाना। नारी में अस होय न ज्ञाना ॥

यह तो मुर्शिद मालिक मेरा। धरयो रूप इन नारी केरा ॥

अब मैं वचन मानि शिर लेऊँ। चरण कमल में मस्तक देऊँ ॥

राजा की आँखों से आँसू बहने लगे, उसने मन में जान लिया कि नारी के पास इतना ज्ञान नहीं हो सकता है। यह तो जरूर मेरा गुरु है, जिसने मुझे चेताने के लिए नारी का रूप धारण किया है। राजा ने कहा कि अब मैं इनकी बात को मान लूँगा और इनके चरणों में मस्तक नवाऊँगा।

साहिब

हम पुनि गुप्त भये तेहि थाना। देखत शाह बहुत अकुलाना ॥

कुछ दिन शाह विहर में रहेऊ। बहुरि शाह दिल मोह सो गहेऊ ॥

तब दिन एक श्वान यक आवा। जाके सीस माहि बड़ घावा ॥

श्वान विकल डोले चहुँ औरा। आयो शाह ढिग तबही दौरा ॥

कहे श्वान सुनु शाह सुजाना। हमहूँ रहे बड़े सुलताना ॥

सुख संपत्ति पुनि तिरिया रंगा। जीव सतावे बहुत अस अंगा ॥

जैसी पीर आप कहँ जानो। तैसी सकल जीव पहचानो ॥

इतना कह श्वान उठ धाया। सखी सहेली मोह लगाया ॥

साहिब कहते हैं कि तब मैं वहाँ से गुप्त हो गया। यह देखकर राजा बड़ा व्याकुल हुआ। उसे फिर विरह हो गया। कुछ दिन विरह में रहने के बाद वो फिर जीव हत्या करने लगा, और उसके दिल में मोह उत्पन्न हो गया। तब एक दिन एक कुत्ता आया, जिसके शीश पर बड़ा घाव था, कीड़े पड़े थे, वो व्याकुल होकर चारों ओर भाग रहा था। तब

वो राजा के पास आया और राजा से मनुष्य की भाषा में बोला कि मैं भी पिछले जन्म में सुलतान था, मेरे पास बड़ी सुख-संपत्ति थी, रानियाँ थीं, मैं भी जीवों को बड़ा सताता था। इसलिए आज यह हाल है, जिन्हें सताया था, वो बदला ले रहे हैं, कीड़े बनकर खा रहे हैं। हे राजा! जैसी अपनी पीड़ा है, वैसी ही दूसरों की भी समझो।

तब राजा को फिर ज्ञान हो गया। वो दूसरों की पीड़ा समझने लगा। उसके दिल में ऐसा वैराग्य हुआ कि फिर एक दिन उठकर चुपचाप जंगल की ओर चला गया।

निकलत शाह कोई नहिं जाना। उठि चल्यो जंगल कहँ सुलताना ॥

नंगे पाँव पनही नहिं लीना। ऐसे शाह धनी दिल दीना ॥

सकल छोड़ि के भये फकीरा। लागे विरह बान गंभीरा ॥

क्षुधा लगे कोई जाँचे नाहीं। गहि संतोष रहे मन माहीं ॥

राजा ने पाँव में जूती भी नहीं डाली और साहिब के प्रेम में मग्न हो पैदल ही चला गया। सब कुछ छोड़ कर फकीर हो गया। उसे भूख लगती तो माँगता भी नहीं था, बिना खाए ही संतोष कर लेता था।

ऐसे में बिना कुछ खाए तीन दिन हो गये। तब साहिब ने आकर उसे एक रूखा-सूखा भोजन का टुकड़ा दिया और राजा वो खाने लगा। खाने के बाद उसने साहिब से विनती की।

दीन दयाल दया अब कीजे। अपना दर्शन मोको दीजे ॥

शब्द स्वरूप रहिरूप छिपाओ। प्रकट रूप मुहिदरश दिखाओ ॥

जब हम लगन शाह घट चीन्हा। तब हम रूप प्रकट तहँ कीन्हा ॥

बहुत कांति दीसे उजियारा। देखि शाह भये हर्ष अपारा ॥

राजा ने साहिब की बड़ी विनती की, कहा कि मुझे अपना दर्शन दो, अपना रूप मत छिपाओ। साहिब कहते हैं कि जब राजा के मन में प्रेम देखा, सच्ची लग्न देखी तो मैंने अपना रूप प्रकट कर दिया। बहुत प्रकाश-ही-प्रकाश देख राजा बड़ा खुश हुआ।

सुलतान

तबही शाह चरण लपटाये । दोई कर जोरि के विनती लाये ॥
 धन्य भाग मुहि दर्शन दीना । पतित जीव पावन करि लीना ॥
 लगे शाह सतगुरु के चरणा । अब मुहि राखो साहब शरणा ॥
 कहँ तुम रहौ कहाँ ते आये । वह सबह गम्य कहो समुझाय ॥
 साहिब अपना नाम बताओ । अपना जानि जीव मुक्ताओ ॥
 अब मुहि मुर्शिद भेद बताओ । तुम साहिब हम बंदा आओ ॥

साहिब का असली रूप देखकर राजा चरणों में गिर पड़ा, दोनों हाथ जोड़कर विनती करने लगा कि मेरा बड़ा भाग्य है कि आज आपने मुझे दर्शन दिये, मुझे पापी को पवित्र कर दिया । राजा चरणों में गिर पड़ा, कहा कि अब मुझे अपनी शरण में रखो । मुझे अपना सब भेद बताओ । आपका क्या नाम है । आप मेरे गुरु हैं, मेरे साहिब हैं, मैं आपका बंदा हूँ ।

कबीर साहिब

कहे कबीर सुनो चित लाये । अमर लोक ते हम चलि आये ॥
 नाम कबीर हमारा होई । हंस उबारन आये सोई ॥
 जो जिव माने शब्द हमारा । जो जिव उतरे भौजल पारा ॥

साहिब ने कहा कि अमर-लोक से आया हूँ । मेरा नाम कबीर है, मैं हंसों को तारने आया हूँ । जो मेरे शब्द को मानता है, मैं उसे संसार सागर से पार अमर-लोक ले जाता हूँ ।

सुलतान

तबही शाह भये आधीना । शिर लेइ चरण कमल में दीना ॥
 चरण पखार चरणामृत लीना । प्रेम भाव सतगुरु कहँ चीन्हा ॥
 अब कीजे मम साहिब काजा । जाते नहिं छेड़े यम राजा ॥
 सोई नाम मुहि देहु बतायी । जाते जीव अमर घर पायी ॥

राजा तब अधीन हुआ, साहिब के चरणों में शीश रखा । फिर चरण पखार कर चरणामृत लिया, कहा कि अब मेरे जीव का काज करो,

जिससे यम न छू पाए। मुझे वो नाम बता दो, जिससे मेरा जीव अमर लोक को जाए।

साहिब

कहें कबीर मुक्ति तब पावे। सुरति निरति ले शब्द समावे ॥
निशि दिन मनुवा अस्थिर राखो। नाम अमीरस रसना चाखो ॥
नाम प्रताप मुक्ति जिव पावे। जनम मरण को दुख मिटावे ॥
गहाँ नाम सत्य लोक सिधावो। तहाँ जाय बहुत सुख पावो ॥
वहि घर हंसा करई आनन्दा। काटे कर्म काल को फँदा ॥
बहु विधि शोभा रूप अनूपा। षोडश रवि सो हंस को रूपा ॥

साहिब ने कहा कि यदि मुक्ति चाहते हो तो नाम में सुरति लगाए रखो। रात-दिन मन को नाम में लगाए रखो। नाम के बल पर ही जन्म मरण का दुख मिट सकता है, इसलिए नाम को पकड़कर सत्य-लोक में प्रस्थान करो। वहाँ जाकर बहुत सुख पाओगे। वहाँ हंस आनन्द में रहता है। वहाँ एक हंस का प्रकाश 16 सूर्यों के समान है।

तब साहिब ने उसे आरती की विधि बताकर आरती करने को कहा और सार नाम दिया।

I I I



वेदों भी जानत नहीं,
सत्य पुरुष कहानियाँ ॥